E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in

हिंदी दैनिक

गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

# विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 10 | अंक : 166 | गुवाहाटी | गुरुवार, 11 जनवरी, 2024 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 8 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

राज्यों में 90 बार चुनी सरकारें बर्खास्त करने वाली कांग्रेस आज न्याय की बात... पेज 3

नौसे को मिला पहला स्वदेशी मीडियम एल्टीट्यूड लॉन्ग एंड्योरेंस दृष्टि-10 यूएवी पेज 4

बरेली में नाथ कॉरिडोर का बजट पास करने के बाद ही आया : योगी आदित्यनाथ पेज 5

ग्रामीणों को मिलेंगे पट्टे और मोबाइल पर भिजवाई जाएगी पट्टे की पीडीएफ फाइल पेज 8

শৰ্মা হাৰ্ডৱেৰ
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947
70025-06581

## बरदलै और मुखर्जी ने लड़ाई लड़कर असम एवं बंगाल को बचाया : नड्डा

### एनडीए का लक्ष्य राज्य में 12 लोकसभा सीटें जीतना



**गुवाहाटी ( हि.स. )।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा है कि लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै तथा जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने लड़ाई लड़कर असम और बंगाल को पूर्वी पाकिस्तान यानी बांग्लादेश में शामिल होने से बचाया था। उन्होंने कहा कि बरदलै और मुखर्जी की लड़ाई का नतीजा ही है कि आज यह क्षेत्र भारत का हिस्सा है। भाजपा के अध्यक्ष नड्डा यहां राजधानी के पंजाबारी स्थित श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में प्रदेश भाजपा की वर्धित कार्यकारिणी की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अपने संबोधन की शुरुआत मां कामाख्या का नाम लेते हुए की। उन्होंने कहा कि यह धर्म, कर्म, कला, संस्कृति और वीरों की भूमि है। उन्होंने अपने संबोधन में असम की सांस्कृतिक विरासत, कर्मठता और वीरता के प्रतीक लचित बरफूकन, धर्म के प्रतीक श्रीमंत शंकरदेव और कला के प्रतीक डॉ भूपेन हजारिका की भी चर्चा की। भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की राजनीति की संस्कृति बदल दी है। कांग्रेस के दिनों में चुनावी घोषणा पत्र में एक से बढ़कर एक वादे किए जाते थे। सरकारें बनती थीं। सभी पांच साल मौज मस्ती करते थे, फिर से चुनाव में आकर चुनावी वादे करते थे, लेकिन आज रिपोर्ट कार्ड की पॉलिटिक्स हो रही है। आज हमारी सरकारें लोगों के बीच में जाकर यह कहती हैं कि हमने जो कहा था, वह तो किया ही, उससे आगे बढ़कर भी काम किया। उन्होंने पूछा कि क्या कभी मुख्यमंत्री तरुण गोगोई को यह कहते हुए सुना कि हमने क्या कहा था और क्या काम किया? उन्होंने असम के मुख्यमंत्री डॉ हिमंत विश्व शर्मा के कार्यकारिणी बैठक में दिए गए वक्तव्य को उद्धृत करते हुए कहा कि हमारे मुख्यमंत्री कहते हैं कि हमने विजन डॉक्यूमेंट में जनता से किए गए वादे से आगे बढ़कर काम किया। मिशन वसुंधरा के तहत गरीबों को जमीनें दे गईं। अरुणोदय योजना के तहत महिलाओं को प्रत्येक माह आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था की गई। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के कल्याणकारी कार्य किए गए। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि मोदी सरकार का एजेंडा साफ है, सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास। इसी एजेंडे के तहत काम किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा की चाहे वह केंद्र की सरकार हो या राज्यों की- सामाजिक बदलाव और सामाजिक न्याय के लिए काम किया है। समाज के कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण के लिए व्यापक पैमाने पर कार्य किए गए हैं। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हमारे देश में चार जातियां मानते हैं। इनमें गरीब, युवा, किसान तथा नारी शक्ति यही हमारी जातियां हैं। पार्टी अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कई अन्य मुद्दों पर भी अपनी बात रखी। उधर आगामी लोकसभा चुनावों को लेकर राजनैतिक दलों ने अभी से अपनी लामबंदी शुरू कर दी है। पार्टियां अलग-अलग राज्यों में जीत को लेकर अलग-अलग दावे कर रही हैं। इस बीच, असम भाजपा अध्यक्ष भाबेश कलिता ने बुधवार को असम में 12 सीटों पर जीत का दावा किया है। उन्होंने कहा कि राजग इस साल -शेष पृष्ठ दो पर

## गुवाहाटी में केंद्रीय भाजपा अध्यक्ष ने किया रोड शो

**गुवाहाटी ( हि.स. )।** भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने बुधवार को गुवाहाटी में एक रोड शो किया। इस दौरान कई स्थानों पर स्थानीय भाजपा कार्यकर्ता एवं आम लोगों ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। दरअसल, भाजपा अध्यक्ष नड्डा मंगलवार मध्य रात गुवाहाटी पहुंच गए थे। हवाई अड्डे पर उनका स्वागत मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भवेश कलिता समेत अन्य नेताओं ने किया था। स्थानीय कार्यकर्ताओं के स्वागत से नड्डा गदगद दिखे। बुधवार को नड्डा ने मां कामाख्या देवी मंदिर में पूजा-अर्चना करके की। इस मौके पर उन्होंने कहा कि भक्ति के इस प्रतिष्ठित केंद्र की गहन शांति ने मुझे सार्वजनिक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता की एक नई भावना दी है। मां कामाख्या देवी सभी को स्वास्थ्य और समृद्धि प्रदान करें। नड्डा ने गुवाहाटी में एक रोड शो किया। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह दिख रहा था। इस रोड के बाद भाजपा अध्यक्ष असम प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी की बैठक में हिस्सा लेने के लिए गुवाहाटी के पांजाबारी स्थित श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र पहुंचे। इसी बीच उन्होंने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करते हुए कहा कि यह उत्साह हमारी विकास समर्थक राजनीति के प्रति लोगों के अटूट समर्थन को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में हम अपने राष्ट्र के बेहतर भविष्य की दिशा में काम करने और सभी का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

পূৰ্বাঞ্চল কেশৰী
(অসমীয়া দৈনিক)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94350 14771, 97070 14771

door graph
Premium Quality Hinges
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path,
Near Dona Planet
ABC, G.S. Road,
Guwahati - 05
97079-99344

### सुप्रभात

*वो व्यक्ति जो दूसरों के गुप्त दोषों के बारे में बातें करते हैं, वे अपने आप को बांबी में आवारा घूमने वाले सांपों की तरह बर्बाद कर लेते हैं।*

- आचार्य चाणक्य

## डीपफेक, फर्जी खबरें पूरी दुनिया के लिए चुनौती : कोविंद

**नई दिल्ली ( हि.स. )।** कोई भी जानबूझकर गलत सूचना फैलाने के लिए डिजिटल साधनों का उपयोग कर सकता है। यह *डीपफेक*, फर्जी समाचार और गलत सूचना पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी चुनौती है। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भारतीय जनसंचार संस्थान (आईआईएमसी) के 55वें दीक्षांत समारोह के दौरान यह बात कही। भारत मंडपम (प्रगति मैदान) में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रपति ने पत्रकारिता और मीडिया के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले छात्रों से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि इन चुनौतियों के बीच नागरिकों को सटीक जानकारी उपलब्ध कराने के साथ साथ तेजी से विकसित हो रही प्रौद्योगिकियों के दुरुपयोग से निपटने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार रहें। पूर्व राष्ट्रपति ने स्नातक छात्रों से अधिक टीआरपी हासिल करने के लिए सनसनीखेज खबरों की प्रवृत्ति से दूर रहने और पत्रकारिता के मूल्यों को बनाए रखने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि -शेष पृष्ठ दो पर

## दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला अपना देश : नड्डा



**गुवाहाटी ( हि.स. )।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा है कि भारत आज दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका है। वह भी भारत ने उस ब्रिटेन को पछाड़ दिया, जिसने भारत पर शासन किया था। उन्होंने कहा कि वर्ष 2027 में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रही है। भाजपा अध्यक्ष बुधवार को राजधानी के पंजाबारी स्थित श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में प्रदेश भाजपा की वर्धित कार्यकारिणी की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पहले इंग्लैंड और अमेरिका में भारतीय लोगों से लोग कहा करते थे कि ओ यू इंडियन्स.... लेकिन, आज वही लोग कहते हैं- आर यू फ्रॉम इंडिया, मोदी, मोदी.... । भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि किस प्रकार भारत विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ा है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार इस वर्ष 10 लाख करोड़ रुपए सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर पर खर्च कर रही है। भाजपा -शेष पृष्ठ दो पर

## सीएम ने की विकसित भारत संकल्प यात्रा की समीक्षा

**गुवाहाटी ( हि.स. )।** मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने बुधवार को राज्य में निकाली जा रही *विकसित भारत संकल्प यात्रा* की प्रगति को लेकर सभी जिला आयुक्तों (जिलाधिकारी) और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक बैठक की। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट शेयर करते हुए कहा कि हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि 29 लाख से अधिक लोगों ने इस यात्रा का लाभ उठाया है। यह यात्रा अभी भी 16 जिलों में निकाली जा रही है। उन्होंने कहा है कि हमारा प्रयास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सभी कल्याणकारी योजनाओं की पूर्ण संतृप्ति सुनिश्चित करना है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी ने सरकार की विभिन्न योजनाओं का पात्रों तक लाभ पहुंचाने के लिए विकसित भारत संकल्प यात्रा (वीबीएसवाई) शुरू की है। यह एक राष्ट्रव्यापी अभियान है। पूरे देश में भारत की सभी ग्राम पंचायतें, नगर पंचायतें और शहरी स्थानीय निकायों तक को शामिल किया गया है। असम में इस अभियान के तहत (9 जनवरी, 2024 तक) कुल 35 जिलों को शामिल किया गया है। अब तक 2,358 कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 29,94,981 लोगों ने हिस्सा लिया। इन सेवाओं का लाभ विभिन्न स्तर पर लोगों ने उठाया। जिसमें स्वास्थ्य शिविरों के जरिए 5,28,120 लोगों ने लाभ उठाया। 4,15,434 लोगों ने टीबी की जांच कराई। 64,309 लोगों ने स्किल सेल एनीमिया की जांच करायी। 60,237 लोगों में आयुष्मान भारत कार्ड वितरित, *माई भारत* स्वयंसेवक के तहत 96,097 लोगों ने पंजीकरण कराया। इसके अलावा 33,293 लोगों ने पीएम उज्ज्वला योजना -शेष पृष्ठ दो पर

## कांग्रेस के पैंफलेट पर डोनेशन का गलत क्यूआर कोड

**नई दिल्ली।** कांग्रेस पार्टी के डोनेट फॉर देश अभियान के जारी पैंफलेट में गलत क्यूआर कोड होने से पार्टी को लाखों रुपये की चपत लग गई। पार्टी की ओर से जारी पैंफलेट पर एक अलग ही वेबसाइट और और क्यूआर कोड का जिक्र किया गया है जो फेक है। इससे चंदे की जो राशि पार्टी के खाते में आनी थी वह किसी फेक खाते में ही चली गई। बुधवार को कांग्रेस पार्टी के कम्युनिकेशन विभाग के महासचिव जयराम रमेश ने संगठन महासचिव वेणुगोपाल के साथ्र प्रेस कांफ्रेंस करके राहुल की यात्रा और पार्टी के चंदा अभियान का एक पैंफलेट जारी किया था। इस -शेष पृष्ठ दो पर

## राहुल की यात्रा को अनुमति नहीं : मणिपुर सरकार



**नई दिल्ली/इंफाल ( हि.स. )।** मणिपुर की राजधानी इंफाल के पैलेस ग्राउंड से प्रस्तावित कांग्रेस की *भारत जोड़ो न्याय यात्रा* को मणिपुर सरकार ने इजाजत नहीं दी है। इसके बाद कांग्रेस की भारत जोड़ो न्याय यात्रा मणिपुर में नए स्थान से शुरू होगी। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष के अनुसार राज्य के थौबल जिले के खोंगजोम से कांग्रेस की यात्रा शुरू हो सकती है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा 14 जनवरी को इंफाल के पैलेस ग्राउंड से शुरू होने वाली थी। राज्य में मौजूदा कानून व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए मणिपुर सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा के बाद इस प्रस्तावित यात्रा की अनुमति नहीं दी है। राज्य सरकार ने इंफाल के पैलेस मैदान पर भारत जोड़ो न्याय यात्रा के आयोजन का आवेदन खारिज कर दिया है। राज्य सराकर के अनुमति ने देने के -शेष पृष्ठ दो पर

## अरुणाचल की सड़क परियोजना को 1,782 करोड़ रुपए

**इटानगर।** केंद्र ने अरुणाचल प्रदेश रणनीतिक सड़क परियोजना के निर्माण के लिए 1,782 करोड़ की मंजूरी दी है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इसकी जानकारी दी। मंत्रालय ने पूर्वोत्तर राज्य के सियांग जिले में पैंगो से जॉर्जिंग तक 82 किमी लंबे ग्रीमफील्ड सड़क के निर्माण के लिए परियोजना को मंजूरी दे दी है। नितिन गडकरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि इस परियोजना का उद्देश्य सुरक्षित यातायात प्रवाह को सुनिश्चित करना और -शेष पृष्ठ दो पर

## शिंदे गुट ही असली शिवसेना उद्धव की दलीलें खारिज

**मुंबई।** महाराष्ट्र विधानसभा के स्पीकर राहुल नार्वेकर ने असली पार्टी लेकर उद्धव ठाकरे की दलीलें खारिज कर दीं है। विधायकों की अयोग्यता पर फैसला सुनाते हुए उन्होंने कहा कि जब बागी गुट बना उस वक्त शिंदे गुट ही असली शिवसेना था। 22 जून के मुताबिक शिंदे गुट ही असली शिवसेना के रूप में मान्य है। स्पीकर के इस फैसले से उद्धव गुट को बड़ा झटका लगा है। स्पीकर राहुल नार्वेकर ने विधायकों की अयोग्यता की याचिका खारिज कर दी। इस पर फैसला सुनाते हुए उन्होंने कहा कि जब पार्टी में बंटवारा हुआ था उस समय शिंदे के समर्थन में 37 विधायक थे। उन्होंने यह भी कहा कि एकनाथ शिंदे नियमानुसार पार्टी के नेता बने। 21 जून को ही एकनाथ शिंदे पार्टी के नेता बन गए थे। इसके साथ ही स्पीकर ने भरत गोगावले की व्हिप के रूप में नियुक्ति को वैध ठहराया है। महाराष्ट्र विधानसभा के स्पीकर राहुल नार्वेकर ने कहा कि मैनें चुनाव -शेष पृष्ठ दो पर

## भारत विश्व मित्र के रूप में आगे बढ़ रहा : प्रधानमंत्री

**नई दिल्ली ( हि.स. )।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में कहा कि तेजी से बदलती विश्व व्यवस्था में भारत विश्व मित्र के रूप में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि दुनिया भारत को स्थिरता के एक महत्वपूर्ण स्तंभ और वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकास के इंजन के रूप में देखती है। गांधीनगर के महात्मा मंदिर में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 के 10वें संस्करण के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि हमने अगले 25 वर्षों में भारत को एक विकसित देश बनाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि सभी प्रमुख रेटिंग एजेंसियों की राय है कि भारत अगले कुछ वर्षों में दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है जबकि 10 साल पहले भारत 11वें स्थान पर था। आज दुनिया की हर प्रमुख रेटिंग एजेंसी का अनुमान है कि भारत अगले कुछ वर्षों में दुनिया की टॉप 3 इकोनॉमी में जाएगा। एक ऐसे समय में जब विश्व अनेक अनिश्चितताओं से घिरा हुआ है। तब भारत दुनिया में विश्वास की एक नई किरण बनकर उभरा है। उन्होंने आगे कहा कि आज तेजी से बदलते हुए वर्ल्ड आर्डर में भारत विश्वमित्र की भूमिका में आगे बढ़ रहा है। आज भारत ने विश्व को ये भरोसा दिया है कि हम साझा लक्ष्य तय कर सकते हैं, अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। विश्व कल्याण के लिए भारत की प्रतिबद्धता, निष्ठा, प्रयास और भारत का परिश्रम आज की दुनिया को ज्यादा सुरक्षित और समृद्ध बना रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट ने निवेश आकर्षित करने और राज्य के विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि वाइब्रेंट गुजरात समिट आर्थिक विकास और निवेश का एक वैश्विक मंच बन गया है। उन्होंने कहा कि हाल ही में भारत ने आजादी के 75 साल पूरे होने का जश्न मनाया। अब भारत अगले 25 साल की तैयारी कर रहा है। हमारा लक्ष्य आजादी के 100 साल पूरे होने तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। अगले 25 साल भारत के लिए *अमृतकाल* होने वाले हैं। यह नये संकल्पों का समय है। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत-यूएई संबंधों में तेज वृद्धि के लिए यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान को श्रेय दिया। उन्होंने कहा कि भारत -शेष पृष्ठ दो पर

**CLASSIFIED**

For all kinds of classified advertisements please contact

**97070-14771**
**86382-00107**

**MURTI AVAILABLE**

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

# कर्नाटक की समीक्षा के दौरान गडकरी ने पकड़ी अनियमितता

**नई दिल्ली।** एक तरफ सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी सड़क परियोजनाओं के मामले में शून्य मुकदमेबाजी की बातें कर रहे हैं और दूसरी ओर उनके अफसरों ने कर्नाटक में 40 सड़क परियोजनाओं के ठेके आनन-फानन में दे दिए। गडकरी ने सवाल-जवाब किया तो वे कोई जवाब भी नहीं दे सके। हैरानी की बात यह है कि इनमें से कई सड़क परियोजनाओं के लिए दस प्रतिशत जमीन का भी अधिग्रहण नहीं किया गया, जबकि सड़क निर्माण में ठेकेदारों के साथ मुकदमेबाजी अथवा आर्बिट्रेशन कम करने के लिए मंत्रालय 90 प्रतिशत तक जमीन के अधिग्रहण के बाद ही प्रोजेक्ट अवार्ड करने की नीति पर काम कर रहा है। पिछले दिनों मंत्रालय के एक शीर्ष अधिकारी ने भी इस नीतिगत परिवर्तन की बात कही थी। गडकरी ने डीपीआर बनाने वाले इंजीनियरों और सलाहकारों के साथ एक बैठक में सार्वजनिक रूप से अपनी नाराजगी भी जताई और यह इशारा भी किया कि अफसरों ने नेताओं को खुश करने के लिए प्रोजेक्टों के ठेके देने में जल्दबाजी दिखाई। गडकरी ने कहा कि कर्नाटक की समीक्षा के दौरान यह बात सामने आई। सड़क परियोजनाओं के लिए ठेके 10-15 प्रतिशत जमीन के अधिग्रहण के बाद ही दे दिए गए। अधिग्रहण 90 प्रतिशत तक होना चाहिए। अब सारे प्रोजेक्ट पचड़े में फंस गए हैं। हमें भुगतना पड़ेगा। हम पहले ही फंसे प्रोजेक्टों को निकालने में थक गए हैं, अब इनका भी सामना करना पड़ेगा। गडकरी ने उन अफसरों के नाम तो नहीं लिए, लेकिन यह जरूर कहा कि ये प्रोजेक्ट इसलिए अवार्ड किए गए ताकि मोबिलाइजेशन एडवांस मिल सके और जैसे मांगलिक कार्यों के लिए चढ़ावा देना पड़ता है, उसी तरह अफसरों और एमपी-एमएलए को कुछ दिया जा सके। गडकरी ने यह भी कहा कि एनएचएआई और दूसरी एजेंसियों के अफसरों ने अपनी ऐसी ही गलतियों से तमाम कंपनियों का दीवाला निकाल दिया है। डीपीआर बनाने में खामियों पर एक बार फिर चिंता जताते हुए गडकरी ने कहा कि नब्बे प्रतिशत सड़क दुर्घटनाओं के लिए इंजीनियरिंग की खामियां जिम्मेदार हैं और इसके लिए सबसे बड़ा दोष खराब डीपीआर का है। गडकरी ने इस पर निराशा जताई कि अपने दस साल के कार्यकाल में वह एक भी ऐसी डीपीआर नहीं देख सके जो दोषरहित हो। एक भी ऐसी डीपीआर नहीं मिली जिसके आधार पर बनी सड़क में ब्लैक स्पाट न उभरा हो।



## शिवसेना मामले पर स्पीकर का फैसला
# सत्य की जीत हुई है : सीएम शिंदे

**मुंबई ( हि.स. )।** मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर के आज दिए गए निर्णय से सत्य की जीत हुई है। सीएम शिंदे ने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष को ठाकरे समूह के बचे 14 विधायकों को भी अयोग्य घोषित करना चाहिए था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया है। इसलिए वे इस विषय पर कानूनविदों से चर्चा करेंगे। एकनाथ शिंदे ने कहा कि लोकशाही में बहुमत को महत्व है। चुनाव आयोग ने इसी आधार पर शिवसेना के चुनाव चिन्ह धनुष बाण को उन्हें सौंप दिया था। इसी आधार पर विधानसभा अध्यक्ष ने उनकी शिवसेना को ही असली शिवसेना माना है और उनके द्वारा नियुक्त चीफ व्हिप भरत गोगावले को ही चीफ व्हिप के रूप में मान्यता दी है। ठाकरे समूह के सुनील प्रभू की ओर से पेश किए गए सभी कागजपत्रों को झूठा करार दिया है। साथ ही यह भी कहा है कि पक्ष प्रमुख अपने मन से कोई निर्णय नहीं ले सकता। सीएम शिंदे ने कहा कि वे इस निर्णय का स्वागत करते हैं लेकिन अध्यक्ष ने जब उनके द्वारा नियुक्त चीफ व्हिप को मान्य किया है, जबकि चीफ व्हिप की उस याचिका को रिजेक्ट कर दिया है, जिसमें ठाकरे समूह के 14 विधायकों को अयोग्य घोषित करने की मांग की गई थी। विधानसभा अध्यक्ष ने इस याचिका को क्यों रिजेक्ट किया, वे इस संबंध में कानूनविदों की सलाह लेंगे।

# भारत दुनिया में सबसे युवा देश, युवा ही करेंगे देश का नेतृत्व : अनुप्रिया

**मीरजापुर ( हि.स. )।** केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल ने कहा कि भारत दुनिया में सबसे अधिक युवा आबादी वाला देश है। इन्हीं युवाओं के हाथों में देश का भविष्य है और इन्हें ही देश का नेतृत्व करना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं, खेलोगे तो खिलोगे। खेल वह माध्यम है जो जीवन की राह आसान बनाती है, मानसिक-शारीरिक रूप से भी स्वस्थ बनाती है। इससे पहले, अनुप्रिया पटेल ने सीखड़ ब्लॉक अंतर्गत हासीपुरम गांव में श्रीशिवाजी इंटर कॉलेज के मैदान पर अनुप्रिया पटेल फाउंडेशन व जिला ओलम्पिक संघ की ओर से आयोजित एक दिवसीय विंध्य खेल महोत्सव का फीता काटकर शुभारंभ किया। दरअसल, जनपद के 12 विकास खंड में विंध्य खेल महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। विंध्य खेल महोत्सव का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारना है। विंध्य खेल महोत्सव ग्रामीण खिलाड़ियों के लिए सबसे अच्छा मंच है। केंद्रीय राज्यमंत्री ने कहा कि खेलने की कोई उम्र नहीं होती। यदि खेलने के उम्र में खेल में रुचि जारी रखी तो आप सभी जीवन भर स्वस्थ रहेंगे और मस्तिष्क में सकारात्मक विचार आएंगे।

# आम जनता के लिए 23 से 29 जनवरी बंद रहेगा राष्ट्रपति भवन

**नई दिल्ली ( हि.स. )।** राष्ट्रपति भवन ने बुधवार को बताया कि गणतंत्र दिवस परेड और बीटिंग रिट्रीट सेरेमनी-2024 के कारण आम जनता के लिए राष्ट्रपति भवन (सर्किट-1) का दौरा 23 से 29 जनवरी तक बंद रहेगा। राष्ट्रपति भवन इससे पहले गणतंत्र दिवस परेड और बीटिंग रिट्रीट समारोह की रिहर्सल के कारण 13 से 27 जनवरी के बीच प्रत्येक शनिवार को होने वाली रस्मी गार्डों की अदला-बदली (चेंज ऑफ गार्ड) समारोह को भी स्थगित करने की सूचना जारी कर चुका है। यह समारोह एक सैन्य परंपरा है, जिसमें राष्ट्रपति भवन के गार्ड समय-समय पर बदले जाते हैं। रायसीना हिल्स पर स्थित राष्ट्रपति भवन में प्रत्येक शनिवार को चेंज ऑफ गार्ड समारोह आयोजित होता है।

# राममय माहौल बनाने के लिए श्रीराम जन्मभूमि दर्शन अभियान शुरू करेगी भाजपा

**अयोध्या ( हि.स. )।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) लोकसभा चुनाव से पहले पूरे देश को राममय करने की तैयारी कर रही है। इसके लिए भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर श्रीराम जन्मभूमि दर्शन अभियान शुरू करेगी। यह अभियान राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद शुरू होगा। इसके लिए भाजपा ने पार्टी के तीन राष्ट्रीय महासचिवों को जिम्मेदारी सौंपी है। इस संबंध में बुधवार को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन बीएल संतोष की उपस्थिति में अयोध्या में दो बड़ी बैठक संपन्न हुई। एक बैठक सर्किट हाउस और दूसरी बैठक पंचशील होटल में हुई। बैठक में भाजपा के तीन राष्ट्रीय महासचिव सुनील बंसल, तरुण चुघ और अशोक तावड़े भी उपस्थित रहे। राष्ट्रीय स्तर पर इन्हीं तीनों नेताओं को इस अभियान की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पूरे अभियान की निगरानी भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन बीएल संतोष स्वयं करेंगे। बैठक में यह तय किया गया कि सभी जिलों में इसके लिए एक-एक प्रभारी निश्चित किए जाएंगे। देश के हर राज्य के प्रत्येक जिलों से आने वाले लोगों के भोजन आवास व आवागमन की व्यवस्था भाजपा करेगी। राज्यों के हिसाब से इसके लिए लक्ष्य तय किए जाएंगे। यह दो महीने का अभियान होगा। हर राज्य के लिए अलग-अलग तिथियां तय की जाएगी। उसी के अनुसार लोग दर्शन कर सकेंगे। इस अभियान के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी जन-जन को राम मंदिर आंदोलन के इतिहास से भी परिचित कराना चाहती है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य डॉ अनिल मिश्रा ने बताया कि आने वाले लोगों को किस तरह से सभी व्यवस्थाएं कराई जाए, सुरक्षा की दृष्टि से, आवास की दृष्टि से, स्वास्थ्य की दृष्टि से, इन सभी विषयों पर बैठक में विचार हुआ। अयोध्या आने वाले श्रद्धालु चाहे वह 22 जनवरी को आमंत्रित अतिथि हो या फिर 22 तारीख के बाद आने वाले श्रद्धालु हो, उन्हें अयोध्या आने पर किसी प्रकार की कोई दिक्कत ना हो, ट्रस्ट इस पर विचार कर रहा है। उन्होंने कहा दर्शन आसानी से हो, प्रसाद मिलने की सुविधा हो, रहने की व्यवस्था हो, जाड़ा है, ठंडक है, इन सारे छोटे-छोटे पहलुओं पर ध्यान में रखकर व्यवस्थाएं की जा रही है। उन्होंने कहा प्राण प्रतिष्ठा के बाद 48 दिनों का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित होगा। इस कार्यक्रम में पूरे भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व हो उसको ध्यान में रखकर उसकी तैयारी की जा रही है।

# राम और सनातन विरोधी है कांग्रेस : अनुराग

**नई दिल्ली ( हि.स. )।** केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि कांग्रेस हमेशा से ही राम और सनातन विरोधी रही है। ठाकुर ने बुधवार को मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि कांग्रेस ने राम मंदिर के आमंत्रण को ठुकरा कर एक बार पुनः साबित कर दिया है कि वह राम और सनातन विरोधी है। ये वही कांग्रेस है, जिसने भगवान राम को काल्पनिक करार दिया था। कांग्रेस ने पुनः बाबरी मस्जिद बनाने की बात कही थी। कांग्रेस ने राम मंदिर के विरोध में कोर्ट में वकीलों की फौज खड़ी कर दी थी। उनका राम मंदिर कार्यक्रम में न जाना कोई चौंकाने वाली बात नहीं है। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा सनातन धर्म को ठेस पहुंचाने का काम किया है। ये लोग राम को नकारते रहे हैं। कांग्रेस ने अनेक बार हिन्दुओं को नीचा दिखाने का काम किया है। कांग्रेस ने आज प्रभु राम के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का बहिष्कार किया है। आने वाले समय में जनता इनका बहिष्कार करेगी। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा को भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यक्रम बताते हुए इसके निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी और लोकसभा में पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी को प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम का निमंत्रण मिला था।

# 50 लाख का लोन : आठ लोगों ने विस के सामने की सामूहिक आत्महत्या की कोशिश

**बेंगलुरु।** कर्नाटक विधानसभा के सामने से आज एक परिवार ने सामुहिक आत्मदाह करने का प्रयास किया। विधानसभा के सामने 8 लोगों ने सामूहिक आत्महत्या की कोशिश की। हालांकि कर्नाटक पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए इन लोगों को पहले की रोक लिया और हिरासत में ले लिया। ये सभी लोग एक ही परिवार के सदस्य बताये जाते हैं। जानकारी के मुताबिक एक मुस्लिम दंपति यहां पूरे परिवार के साथ विधान सभा के सामने पहुंची। इन लोगों ने पहले एक बैंक पर धोखाधड़ी का आरोप लगाया। वाले एक मुस्लिम दंपति के आत्मदाह की कोशिश की, जिसे पुलिस ने विफल कर दिया। विधानसभा के बाहर उस समय हड़कंप मच गया जह महिलाओं और बच्चों समेत परिवार के सभी आठ लोगों ने खुद पर मिट्टी का तेल छिड़का और आग लगाने ही वाले थे, पुलिस ने उन्हें रोक दिया। सभी को तत्काल हिरासत में ले लिया गया है। पुलिस के अनुसार, उन लोगों ने यह हताशापूर्ण कदम उठाया क्योंकि वे बैंक द्वारा बकाया ऋण की वसूली के चलते अपने घर की नीलामी से परेशान थे। इस परिवार और दंपति की पहचान जे.जे. नगर निवासी 48 वर्षीय शाहिस्ता बानो और उसके पति मोहम्मद मुनेयद उल्ला और उनके परिवार के रूप में हुई है। इस सनसनीखेज घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। परिवार के एक सदस्य ने कहा कि उन्होंने अदरक की खेती का व्यवसाय शुरू करने के लिए 2016 में बैंगलोर सिटी कोऑपरेटिव बैंक से 50 लाख रुपए का ऋण लिया था। हालांकि, उनके बिजनेस को काफी घाटा हुआ, जिससे उन्हें उधार ली गई राशि चुकाने के लिए काफी दिक्कत हो रही थी। मिली जानकारी के अनुसार, बैंक अधिकारियों ने परिवार के 3 करोड़ रुपए की कीमत वाले आवास की नीलामी महज 1.41 करोड़ रुपए में शुरू की। भारी हंगामे के बाद पुलिस ने दंपति के खिलाफ आईपीसी की धारा 309 के तहत आत्महत्या के प्रयास और धारा 290 के तहत सार्वजनिक उपद्रव पैदा करने का मामला दर्ज किया। पुलिस ने दंपति से शपथ पत्र लिया और उन्हें हिरासत मे लेने के बाद रिहा कर दिया।



**अपोलो हॉस्पिटल्स, चेन्नई**
ऑबस्टेरिसिसियन, स्त्री रोग विशेषज्ञ

**डॉ. विनुथा अरुणाचलम,** MBBS, M.D. (Obstetrics & Gynaecology), DNB (OBG)
गुवाहाटी में केवल परामर्श के लिए उपलब्ध होंगे

**21 जनवरी, 2024 को**

जो मरीज गर्भ प्राप्त करने में कठिनाई, गर्भ बार-बार गिर रहा ो, गर्भाशय और कोख में घाव हो, असमान्य रक्तस्राव, सफेद निकल रही और किसी प्रकार की स्त्री रोग संबंधी समस्या हो तो अपना-अपना नाम रजिस्टर करा सकते हैं :

**APOLLO HOSPITAL REGIONAL OFFICE**
Rajgarh Main Road, Opp-By Lane-10
**Ph : 8404037649, 0361-3102669, 0361-3102166**

**अपोलो हॉस्पिटल्स, चेन्नई**
वैस्कुलर सर्जन

**डॉ. राजाराजन वेंकेटेसन,** MS., MCh (Vascular)
केवल परमार्श के लिए 20-01-2024 को गुवाहाटी में उपस्थित रहेंगे।

रक्तवाही नली की समस्या, मगज, वृक्क, पैर और हाथ को लेकर रक्त परिवाहन की समस्या, एरटिक और केरोटिड समस्या तथा वृक्क और डिससेरेल ऑर्टेरियल रोग, आर्चारी, डेरिकज, डेइन, वार्गाचर डिजिज, डिडिटि और नृतकोरा पैर का घांव, अत्यधिक पसीना आदि बीमारी हो तो रोगी परामर्श के लिए निम्नलिखित पते पर आकर अपना अपना नाम पंजीकरण करा सकते हैं।

**APOLLO HOSPITAL REGIONAL OFFICE**
Rajgarh Main Road, Opp-By Lane-10
**Ph : 8404037649, 0361-3102669, 0361-3102166**

# पृष्ठ एक का शेष

## बरदलै और मुखर्जी ...

के मध्य में होने वाले लोकसभा चुनाव के दौरान 14 में से कम से कम 12 सीटें जीतने का लक्ष्य बना रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी की प्रस्तावित *भारत जोड़ो न्याय यात्रा* का राज्य में कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। गौरतलब है कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा मणिपुर से शुरू होगी। यह असम में आठ दिनों तक रहेगी। कलिता ने गुवाहाटी में भाजपा की असम कार्यकारिणी की बैठक के मौके पर कहा कि एक गठबंधन के रूप में एनडीए का लक्ष्य असम में 14 में से 12 लोकसभा सीटें जीतना है। उन्होंने कहा कि 12 से अधिक सीटें जीतने का लक्ष्य रख रहे हैं। हमारा लक्ष्य पिछले आम चुनावों की तुलना में अपना वोट शेयर 10 प्रतिशत बढ़ाना है। साथ ही पार्टी इस बार उम्मीदवारों की जीत का अंतर भी बढ़ाना चाहती है। इस दौरान जब उनसे गठबंधन के घटक दलों के बीच सीट बंटवारें के संबंध में पूछा गया तो कलिता ने कहा कि भाजपा, अगप और यूपीपीएल के बीच सीट बंटवारे को लेकर हम फरवरी में बैठक करेंगे। फरवरी की संयुक्त बैठक में ही सीट बंटवारे को अंतिम रूप दिया जाएगा। इस दौरान उन्होंने विपक्षी कांग्रेस पर भी तंज कसा। भाबेश कलिता ने कहा कि राज्य के लोगों ने असम की राजनीति से सबसे पुरानी पार्टी को अलविदा कह दिया है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष की भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर तंज कसते हुए असम भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि राहुल गांधी आएंगे और जाएंगे। ऐसी यात्राएं पहले भी हुई हैं। वे कुछ भी कर लें, कांग्रेस अगले 25 साल तक असम में सत्ता में नहीं आएगी। गौरतलब है कि असम में 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र हैं। इसमें से वर्तमान में नौ सीटें भाजपा, तीन पर कांग्रेस और एक-एक सीट पर एआईयूडीएफ और एक निर्दलीय का कब्जा है।

## दुनिया की पांचवीं ...

अध्यक्ष नड्डा ने पूर्वोत्तर राज्यों की चर्चा करते हुए कहा कि भाजपा की सरकार ने पूर्वोत्तर भारत को देश की मुख्यधारा में शामिल किया है। भारत के कुल बजट का 10 फीसदी हिस्सा पूर्वोत्तर राज्यों के विकास पर खर्च किया जाता है। भारत के इतिहास में नरेंद्र मोदी ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं, जो अपने कार्यकाल में अब तक 60 बार पूर्वोत्तर के दौरे कर चुके हैं। पार्टी अध्यक्ष ने इस दौरान अल्फा के साथ हुए समझौते के साथ ही डिमा हसोओ समझौता, बोड़ो अकॉर्ड के अलावा ब्रू (रियांग) एकॉर्ड, कार्बी आंग्लांग एकॉर्ड, असम मेघालय सीमा समझौता से लेकर विभिन्न समझौताओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि 20-20 साल से पूर्वोत्तर की परियोजनाएं अधर में लटकी हुई थीं, जिसे मोदी सरकार ने पूरा किया। पूरे पूर्वोत्तर में कनेक्टिविटी को विस्तार दिया। गुवाहाटी शहर में एम्स बन गया है, यह भाजपा सरकार की पूर्वोत्तर के प्रति सदिच्छा का ही प्रतीक है।

## कांग्रेस के पैंफलेट ...

पैंफलेट पर वेबसाइट और क्यूआर कोड गलत प्रकाशित किए गए। इससे जो चंदा पार्टी के खाते में आना चाहिए था। वह किसी और के खाते में ही चला गया। कांग्रेस की ओर से जारी पैंफलेट में क्यूआर कोड के साथ जिस वेबसाइट को लिंक किया गया है वह फेक लिंक DonateINC.co.in है। पैंफलेट पर भी इसी वेबसाइट को लिखा गया है, जबकि कांग्रेस को डोनेशन देने के लिए जो ऑरिजिनल लिंक है वह DonateINC.in है। बताया जाता है कि गलत वेबसाइट लिंक होने की वजह से कांग्रेस को दिया गया लाखों रुपये चंदा बुधवार को गलत खाते में पहुंच गया। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव से पहले ऑनलाइन चंदा इकट्ठा करने की मुहिम शुरू की है। इसे डोनेट फॉर देश नाम दिया गया है। इस अभियान को कांग्रेस स्थापना दिवस पर 28 दिसंबर को यह अभियान शुरू किया गया था। जो लगातार जारी है। इस अभियान में अब तक तेलंगाना की ओर से सबसे ज्यादा चंदा दिया गया है। कांग्रेस की वेबसाइट पर जो डोनेशन के बारे में जानकारी दी गई है उसमें अब तक चंदा देने के मामले में तेलंगाना नंबर एक पर है, इसके बाद हरियाणा और महाराष्ट्र का नंबर आता है। कांग्रेस की वेबसाइट पर दर्ज जानकारी के मुताबिक चंदा देने के मामले में राजस्थान चौथे, उत्तर प्रदेश पांचवें और मध्य प्रदेश छठवें नंबर पर है। दिल्ली का नंबर सातवां और पंजाब आठवें नंबर पर है। इसके बाद कर्नाटक और बिहार का नंबर आता है।

## राहुल की यात्रा ...

बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव व कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि अब उनका कार्यक्रम इंफाल के पैलेस ग्राउंड से नहीं, बल्कि मणिपुर के किसी अन्य स्थान से शुरू होगा। वेणुगोपाल ने कहा कि जब हम पूर्व से पश्चिम की ओर अपनी यात्रा शुरू करते हैं, तो मणिपुर से कैसे छोड़ सकते हैं। हम यह यात्रा मणिपुर में किसी अन्य स्थान से शुरू करेंगे। इसकी जानकारी बाद में साझा की जाएगी। उन्होंने कहा कि मणिपुर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के मेघचंद्र ने पांच दिन पहले मणिपुर के मुख्य सचिव से इंफाल के पैलेस मैदान से कांग्रेस की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को अनुमति देने की मांग की थी। इसके लिए मणिपुर प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने व्यक्तिगत रूप से राज्य के मुख्य सचिव से मुलाकात भी की थी। लेकिन दुर्भाग्य से मणिपुर सरकार ने बुधवार को कांग्रेस का आवेदन खारिज कर दिया है। इस बीच, मणिपुर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और विधायक के मेघचंद्र ने राज्य सरकार के फैसले को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि हालांकि, उन्होंने पैलेस मैदान पर भारत जोड़ो न्याय यात्रा के आवेदन को खारिज कर दिया, लेकिन उन्होंने थौबल जिले के खोंगजोम में एक निजी स्थल को चुना है। वहीं से पार्टी के केंद्रीय नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू होगी। मेघचंद्र ने कहा कि कांग्रेस के अखिल भारतीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे 14 जनवरी को झंडा फहराकर यात्रा की शुरुआत करेंगे। रैली में पैदल मार्च और बस यात्रा होगी। मणिपुर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के मेघचंद्र ने कहा कि लगभग 6,713 किमी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा 14 राज्यों के 85 जिलों को कवर करेगी। उल्लेखनीय है कि मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने मंगलवार को एक कार्यक्रम में पत्रकारों को बताया था कि राज्य में मौजूदा कानून व्यवस्था की स्थिति अच्छी नहीं है। ऐसे में इस बात की समीक्षा की जा रही है कि क्या कांग्रेस नेता राहुल गांधी की प्रस्तावित भारत जोड़ो न्याय यात्रा को इजाजत दी जा सकती है। सुरक्षा एजेंसियों से मिली रिपोर्ट की समीक्षा की जा रही है। कांग्रेस की प्रस्तावित यात्रा 14 जनवरी को शुरू होगी और 20 मार्च को मुंबई में समाप्त होगी।

## अरुणाचल की सड़क...

गांव के लिए कनेक्टिविटी स्थापित करना है जिससे कि पहाड़ी जिले में सामाजिक और आर्थिक विकास को गति मिल सके। गडकरी ने आगे बताया कि यह सड़क सुरक्षा बलों के लिए यात्रा के समय को काफी हद तक कम करेगा। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने विकास पर प्रसन्नता व्यक्त की है। सीएम खांडू ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अरुणाचल प्रदेश में कनेक्टिविटी बढ़ाने पर काफी ध्यान दिया गया है। उन्होंने नितिन गडकरी का भी आभार जताया है। अरुणाचल के सीएम पेमा खांडू ने एक्स पर कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में अरुणाचल प्रदेश में कनेक्टिविटी बढ़ाने में विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सियांग जिले में पैंगो से जॉर्जिंग तक 82 किमी लंबे ग्रीमफील्ड सड़क के निर्माण के लिए 1,782 करोड़ रुपए आवंटित करने के लिए माननीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का भी आभार।

## शिंदे गुट ही असली ...

आयोग के फैसले को ध्यान में रखा है। चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में भी असली शिवसेना शिंदे गुट ही है। उन्होंने फैसला सुनाते हुए कहा कि चुनाव आयोग ने भी शिंदे गुट को ही असली शिवसेना कहा है। महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने कहा कि दोनों गुट द्वारा चुनाव आयोग को सौंपे गए संविधान पर कोई आम सहमति नहीं है। नेतृत्व संरचना पर दोनों पार्टियों के विचार अलग-अलग हैं। एकमात्र पहलू बहुमत का है। विवाद से पहले मौजूद नेतृत्व संरचना को ध्यान में रखते हुए मुझे प्रासंगिक संविधान तय करना होगा। उन्होंने कहा कि 2018 का संशोधित संविधान चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में नहीं है। शिवसेना का 1999 का संविधान ही मान्य है। चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में भी शिंदे गुठ ही असली शिवसेना है। 16 विधायकों की अयोग्यता पर फैसला सुनाते हुए विधानसभा स्पीकर राहुल नार्वेकर ने कहा कि शिवसेना का 1999 का संविधान की सर्वोपरि है। हम उनका 2018 का संशोधित संविधान स्वीकार नहीं कर सकते। यह संसोधन चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में नहीं है। उन्होंने इस दौरान शिवसेना के संगठन में चुनाव का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि साल 2018 में संगठन में चुनाव नहीं है। हमें 2018 के संगठन नेतृत्व को भी ध्यान में रखना होगा। उन्होंने कहा कि मेरे पास सीमित मुद्दा है और वह यह है कि असली शिवसेना कौन है। दोनों ही गुट अपने असली होने का दावा कर रहे हैं। एक-दूसरे के विधायकों को अयोग्य ठहराने की मांग करने वाली शिवसेना गुटों की याचिकाओं पर महत्वपूर्ण फैसले से पहले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बुधवार को कहा कि विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर को गुणदोष के आधार पर अपना फैसला देना चाहिए। शिंदे ने यहां पत्रकारों से कहा कि वह आदेश के बाद विस्तृत प्रतिक्रिया देंगे। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग ने उनके संगठन को *शिवसेना* नाम और पार्टी के *धनुष और तीर* निशान को बनाए रखने की अनुमति दी है। शिंदे ने कहा कि उनके गुट के पास विधानसभा में 67 प्रतिशत और लोकसभा में 75 प्रतिशत सदस्य हैं। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने मैच फिक्सिंग (शिवसेना और विधानसभा अध्यक्ष के बीच) का आरोप लगाया है। उन आरोपों में कोई दम नहीं है। विधानसभा अध्यक्ष को गुणदोष के आधार पर फैसला लेना चाहिए। उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) ने उच्चतम न्यायालय में एक हलफनामा दायर कर शिंदे और विधानसभा अध्यक्ष नार्वेकर के बीच हाल में हुई बैठक पर आपत्ति जताई है, जिससे दोनों पक्षों के बीच जुबानी जंग शुरू हो गई। शिंदे उन विधायकों में शामिल हैं जिनकी अयोग्यता की मांग की गई है। रविवार को नार्वेकर से अपनी मुलाकात की आलोचना का जिक्र करते हुए शिंदे ने कहा कि हमने विपक्षी विधायकों के विधानसभा अध्यक्ष के कार्यालय में भोजन करने पर कभी आपत्ति नहीं जताई। शिंदे ने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष आधिकारिक तौर पर अपने आधिकारिक वाहन में और दिन के उजाले में आए। मुख्यमंत्री ने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष ने कोस्टल रोड समेत उनके निर्वाचन क्षेत्र में परियोजनाओं को लेकर मुलाकात की थी। बता दें कि, 20 जून 2022 को एकनाथ शिंदे और उनके गुट के 39 विधायकों ने शिवसेना से बगावत कर दी थी और भाजपा के साथ मिलकर सरकार बना ली थी। एकनाथ शिंदे को महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनाया गया। देवेंद्र फडणवीस डिप्टी सीएम बने थे। इसके बाद उद्धव गुट ने दल बदल कानून के तहत स्पीकर को नोटिस दिया। इसके बाद मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और दोनों गुटों ने एक दूसरे के विधायकों को अयोग्य ठहराने की मांग करते हुए याचिकाएं दायर की थीं।

## भारत विश्व मित्र...

और यूएई ने फूड पार्क के विकास, नवीकरणीय ऊर्जा में सहयोग और नवीन स्वास्थ्य देखभाल में निवेश के लिए कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत के बंदरगाह बुनियादी ढांचे के लिए यूएई की कंपनियां अरबों डॉलर के निवेश पर सहमत हुई हैं। भारत और यूएई अपने रिश्ते को नई ऊंचाइयों पर ले गए हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया भारत को स्थिरता के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में देखती है। एक मित्र जिस पर भरोसा किया जा सकता है, एक भागीदार जो लोगों के केंद्रित विकास में विश्वास करता है, एक आवाज जो वैश्विक भलाई में विश्वास करती है, और वैश्विक दक्षिण की एक आवाज के रूप में देखती है। भारत की अध्यक्षता में गत वर्ष सितंबर माह में नई दिल्ली में आयोजित जी-20 सम्मेलन को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह भारत के लिए गर्व का क्षण था, क्योंकि भारत की अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ जी-20 का स्थायी सदस्य बन गया। इससे पहले वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में हिस्सा लेने वाले वैश्विक व्यापार जगत के नेताओं ने प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण की सराहना की। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष के शिखर सम्मेलन का विषय *भविष्य का प्रवेश द्वार* है और इसमें 34 भागीदार देशों और 16 भागीदार संगठनों की भागीदारी शामिल है। शिखर सम्मेलन का उपयोग उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विकास मंत्रालय द्वारा उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में निवेश के अवसरों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच के रूप में भी किया जा रहा है।

## डीपफेक, फर्जी खबरें...

2047 तक विकसित भारत बनाने की शक्ति युवाओं के हाथों में है। उन्हें इस शक्ति का उपयोग बुद्धिमानी से करना चाहिए। उन्होंने पत्रकारिता में शॉर्टकट अपनाने की प्रवृत्ति से बचने का भी आग्रह किया। इस मौके पर आईआईएमसी दिल्ली, आईआईएमसी ढेंकनाल, आईआईएमसी आईजोल, आईआईएमसी अमरावती, आईआईएमसी कोट्टायम और आईआईएमसी जम्मू के 2021-22 और 2022-23 बैच के 700 से अधिक छात्रों ने दीक्षांत समारोह में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। छात्रों को हिंदी पत्रकारिता, अंग्रेजी पत्रकारिता, ओड़िया पत्रकारिता, मराठी पत्रकारिता, मलयालम पत्रकारिता, उर्दू पत्रकारिता, विज्ञापन और जनसंपर्क, रेडियो और टेलीविजन पत्रकारिता और डिजिटल मीडिया में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त हुए। इसके अलावा दोनों बैच के 65 विद्यार्थियों को विभिन्न पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इस मौके पर आईआईएमसी के अध्यक्ष आर. जगन्नाथन, महानिदेशक डॉ. अनुपमा भटनागर और अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. निमिष रुस्तगी उपस्थित थे।

## सीएम ने की ...

के लिए पंजीकरण कराया। 632 लोगों ने किसान क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन किया। 8,889 लोगों ने आधार कार्ड के लिए पहुंचे। 21,402 पीएम-स्वनिधि शिविर आयोजित किए गए। तेल कंपनियों ने 11,422 पीएम-उज्ज्वला का निस्तारण किया गया। 952 ग्राम पंचायतों में 100 फीसदी आयुष्मान कार्ड संतृप्ति, भूमि रिकॉर्ड के 100 फीसदी डिजिटलीकरण वाली ग्राम पंचायतें 1,082 शामिल हैं।

# राज्यों में 90 बार चुनी सरकारें बर्खास्त करने वाली कांग्रेस आज न्याय की बात करती है : नड्डा

**गुवाहाटी ( हि.स. )।** भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस पार्टी पर जमकर प्रहार किए। उन्होंने कहा कि केंद्र की कांग्रेस ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग कर 90 बार चुनी हुई राज्य सरकारों को बर्खास्त किया था और न्याय की बात करते हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा बुधवार को गुवाहाटी के पांजाबारी स्थित श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में आयोजित असम प्रदेश भाजपा की कार्यकारिणी बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर नड्डा ने कई ऐतिहासिक उदाहरणों पर रेखांकित करते हुए कहा कि इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने राज्य सरकारों को बर्खास्त करने के लिए संवैधानिक प्रावधान का इस्तेमाल किया था, जिसमें केरल की पहली निर्वाचित वामपंथी सरकार भी शामिल थी, जो जवाहरलाल नेहरू के पक्ष में नहीं थी। भाजपा अध्यक्ष जेपी

नड्डा ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि जिन्होंने समाज के साथ अन्याय करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, वे अब *न्याय यात्रा* निकालने के बारे में सोच रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओबीसी को संवैधानिक दर्जा दिया, लेकिन कांग्रेसी केवल वोट चाहते हैं। नेहरू ने अंबेडकर को संसद में प्रवेश करने से रोक दिया था। ओबीसी के साथ इतना अन्याय करने के बाद, अब वे न्याय यात्रा निकाल रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने धारा 356 का इस्तेमाल कर 90 बार चुनी हुई सरकार को बर्खास्त किया। ये लोग न्याय यात्रा निकाल रहे हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी जब अपनी यात्रा के दौरान यहां आएं तो आपको उनसे वर्ष 1984 के सिख विरोधी दंगे के बारे में पूछना चाहिए। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने सार्वजनिक के रूप से कहा था कि सभी मोदी चोर हैं और आज तक इसके लिए माफी भी नहीं मांगी, लेकिन वे ओबीसी की बात करते हैं। भाषण के दौरान नड्डा का एक प्रश्न को लेकर यहां खूब चर्चा हो रही है। ऐतिहासिक मिसालों के बीच नड्डा का असम में हिमंत विश्व शर्मा की सरकार गिरने की संभावना वाला काल्पनिक प्रश्न लोगों के बीच चर्चा का केंद्र बना है।

## चिरांग में रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार पुलिस सब-इंस्पेक्टर

**तामुलपुर ( हिंस )।** सतर्कता और भ्रष्टाचार निरोधक निदेशालय, असम के अधिकारियों ने मंगलवार की रात शिकायतकर्ता से उसके वाहन छोड़ने के लिए रिश्वत मांगने के आरोप में एक पुलिस उप-निरीक्षक (यूबी) को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, भ्रष्टाचार निरोधक टीम ने विशेष सूचना पर कार्रवाई करते हुए जाल बिछाया और शिकायतकर्ता से 10 हजार रुपये की रिश्वत लेने के आरोप में चिरांग के ढालीगांव टाउन आउटपोस्ट के सब इंस्पेक्टर (यूबी) चिंटू दास को गिरफ्तार कर लिया। पुलिसकर्मी को हिरासत में ले लिया गया है और उसके खिलाफ आवश्यक कानूनी प्रक्रियाएं शुरू कर दी गई।

# उग्रवादियों को डीजीपी जीपी सिंह ने दी चेतावनी

**गुवाहाटी ( हिंस )।** असम के पुलिस महानिदेशक जीपी सिंह ने असम में अंतिम बचे प्रतिबंधित विद्रोही समूह अल्फा-स्वा के ठिकानों वाले क्षेत्रों में मची अफरा-तफरी के बीच चेतावनी जारी की है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से डीजीपी सिंह ने सलाह दी है कि अल्फा-स्वा के अशांत शिविर में रह रहे कैडर शिविरों में रहने के बदले सुरक्षित तरीके से शिविर खाली करके चले आएं। डीजीपी ने अल्फा-स्वा में भर्ती होने वाले युवकों से अपील की है कि वे ऐसे माहौल में नहीं जाएं, जहां किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं है। असम के युवाओं को उग्रवादी संगठन में भर्ती होने के खिलाफ उन्होंने चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि इन अस्थिर शिविरों में रहने वालों को अपरिचित और खतरनाक परिवेश में अपनी सुरक्षा को खतरे में डालने के बजाय सुरक्षित क्षेत्रों में स्थानांतरित करने की दृढ़ता से सलाह दी जाती है। उन्होंने कहा कि यह सलाह उन शिविरों में रह रहे युवाओं की सुरक्षा के लिए दी जा रही है। उल्लेखनीय है कि अल्फा-स्वा ने दो दिन पहले म्यांमार में अपने शिविर पर ड्रोन हमले की सूचना दी थी, जिसके परिणामस्वरूप इसके दो सदस्य घायल हो गए थे। समूह का आरोप है कि तीन बम गिराए गए थे, जिनमें से दो बमों में विस्फोट हुए, जिससे लोग घायल हो गए। जबकि, तीसरे बम में

विस्फोट नहीं हुआ था। अल्फा-स्वा के अनुसार यह हमला भारतीय सुरक्षा बलों द्वारा किया गया था। हालांकि, इस दावे के समर्थन में कोई सबूत पेश नहीं किया गया। भारतीय सेना की ओर से आधिकारिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की गई। ऐसे मौके पर डीजीपी द्वारा अल्फा-स्वा कैडरों को दी गई चेतावनी अपने आप में एक विशेष मायने अवश्य रखती है। इसी बीच असम पुलिस ने अल्फा-स्वा प्रमुख परेश बरुवा के आवास को प्रदान की गई सुरक्षा वापस ले ली है। यह सुरक्षा बर्ष 2000 में मुहैया कराया गया था।

# दरंग जिले में विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल हुए राज्यपाल

**दरंग ( हिंस )।** असम के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने यहां *विकसित भारत संकल्प यात्रा* (वीबीएसवाई) के बुधवार को दरंग जिले के कल्याण गांव पंचायत में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। इस राष्ट्रव्यापी अभियान का उद्देश्य सरकारी योजनाओं को जमीनी स्तर पर पहुंचाने और समाज के अंतिम व्यक्ति को लाभांवित करना है। इस राष्ट्रव्यापी अभियान को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुरू किया था। यह यात्रा के तहत असम के 35 जिलों में 2358 कार्यक्रम आयोजित किए गए। दरंग जिले के कल्याण गांव पंचायत में आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल कटारिया ने लोगों से केंद्रीय कल्याण योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने जिला प्रशासन से अधिक से अधिक परिवारों तक पहुंचने, सरकारी योजनाओं के बारे में जागरुकता पैदा करने और अधिक लाभार्थियों के नामांकन को प्रोत्साहित करने के लिए भी कहा। कटारिया ने कहा कि विकसित भारत तभी बन सकता है कि जब देश का प्रत्येक व्यक्ति सशक्त होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी अपने सामाजिक-आर्थिक और शैक्षणिक विकास में सुधार के लिए सरकारी योजनाओं को सभी वर्गों के लोगों तक उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने ऐसे पात्र लोगों से इस *विकसित भारत संकल्प यात्रा* का लाभ लेने का आग्रह किया, जो अभी तक इसका लाभ नहीं ले सके थे। उन्होंने कहा कि यह उन वर्गों के लोगों के लिए एक जागरूकता अभियान है। राज्यपाल ने आयुष्मान, पीएमजीएवाई, पीएमएफबीवाई, जन धन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना और कई अन्य योजनाओं पर भी बात की। कार्यक्रम में कई लाभार्थियों ने भी अपने अनुभव भी साझा किये। इस कार्यक्रम के बाद राज्यपाल ने बरुआझार गांव पंचायत का भी दौरा किया। कार्यक्रम में विधायक दलगांव मोजिबुर रहमान, जिला आयुक्त मुनींद्र नाथ नगाटे भी उपस्थित थे।

# लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का सफाया हो जाएगा : अतुल बोरा

**नगांव ( हिंस )।** आज कलियाबोर के कुवारिटोल स्थित टीचिंग कॉलेज मैदान में असम गण परिषद पार्टी का विशाल बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया। बूथ सम्मेलन में 20 हजार से अधिक पार्टी कार्यकर्ता शामिल हुए। जिनमें पार्टी अध्यक्ष और मंत्री अतुल बोरा, कार्यकारी अध्यक्ष और मंत्री केशव महंत सहित केंद्रीय नेतृत्व में कुवारिटोल से सम्मेलन स्थल तक सांस्कृतिक शोभायात्रा निकाली गई। सम्मेलन में स्वागत भाषण पार्टी के सूचना प्रौद्योगिकी सचिव मणिमाधव महंत ने दिया। जबकि इसकी उद्देश्य व्याख्या महासचिव और राज्यसभा सांसद बीरेंद्र प्रसाद वैश्य ने की। कलियाबोर में अगप के काजीरंगा संसदीय क्षेत्र के बूथ कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए अध्यक्ष और मंत्री अतुल बोरा ने कहा कि इस राजनीतिक दल ने संघर्षपूर्ण इतिहास के बाद दो बार राज्य में सरकार बनाई है। बोरा ने कहा कि अगप की जड़ें राज्य के हर हिस्से में हैं और इसे अब मजबूत और विस्तारित करने की आवश्यकता है। उन्होंने पार्टी सदस्यों से अपने-अपने बूथों पर कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाकर पार्टी के आधार को मजबूत करने के

लिए लगन से काम करने का आग्रह किया। सम्मेलन में अतुल बोरा ने कहा कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के बाद देश के पांच राज्यों में हाल ही में हुए चुनावों में कांग्रेस के पहले चरण की हार सभी ने देखी है। इस बार कांग्रेस लोकसभा चुनाव में हार का दूसरा चरण देखने के साथ ही हार का नया इतिहास भी रचेगी। अध्यक्ष बोरा ने कहा कि वे राहुल गांधी का असम में स्वागत करते हैं। राहुल गांधी पूर्वोत्तर के दरवाजे पर कदम रखकर राज्य के विकास की एक नई छवि देखेंगे। कांग्रेस को याद रखना चाहिए कि विकसित असम के लोग अब कांग्रेस को स्वीकार नहीं करते हैं। बोरा ने कहा कि कांग्रेस-एआईयूडीएफ शब्दों से अल्पसंख्यकों के रक्षक हैं, लेकिन काम में दोनों दुश्मन हैं। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद कई वर्षों तक सत्ता में रही कांग्रेस ने अल्पसंख्यकों के सर्वांगीण विकास को गति नहीं दी, लेकिन अब अल्पसंख्यकों के विकास में तेजी आई है। सम्मेलन के दौरान, अध्यक्ष ने पार्टी सदस्यों से अपने-अपने बूथों पर संगठनात्मक आधार को मजबूत करके लगन से काम करने का आग्रह किया ताकि एजीपी आगामी लोकसभा और आगामी चुनावों में काजीरंगा संसदीय क्षेत्र के तहत हर बूथ पर ताकत दिखा सके। सम्मेलन में बोलते हुए पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष केशव महंत ने काजीरंगा संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली बूथ समितियों के कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाते हुए सम्मेलन में जुटे साथियों के अभूतपूर्व उत्साह को देखा। उन्होंने कहा कि असम गण परिषद का हर सदस्य अध्यक्ष अतुल बोरा के नेतृत्व में जीवंत हो उठा है। एक क्षेत्रीय राजनीतिक ल के रूप में, असम गण परिषद अपने क्षेत्रीय कर्तव्यों का पालन करना जारी रखती है और राष्ट्रीय हित की रक्षा करके राज्य के सर्वांगीण विकास करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। महंत ने यह भी कहा कि लोग हाल के लोकसभा चुनावों में विपक्ष को हराकर गठबंधन को गले लगाने के लिए पहले से ही तैयार हैं। पार्टी कार्यकर्ताओं से लोगों के जमीनी स्तर पर संपर्क स्थापित करके बूथों को सक्रिय करने का आग्रह किया। सम्मेलन में वरिष्ठ नेता फणीभूषण चौधरी, महासचिव बीरेंद्र प्रसाद वैश्य, डॉ. कमलाकांत कलिता, भूपेन रॉय, प्रवीण हजारिका, उपाध्यक्ष भवेन भराली, डॉ. नृपेन बरुवा, सचिव नुरूल सुल्तान, अतुल मेधी, सचिव सूचना प्रौद्योगिकी मणिमाधव महंत, प्रचार सचिव डॉ. तपन दास, पार्टी के आनुसांगिक संगठनों के अध्यक्ष, महासचिव के साथ-साथ बूथ समितियों के अध्यक्ष, सचिव आदि उपस्थित रहे।

## बोको के नामशांतिपुर में जंगली हाथी के हमले में एक की मौत

**कामरूप ( हिंस )।** कामरूप (ग्रामीण) जिले के बोको नामशांतिपुर में जंगली हाथियों के हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई है। मृतक की पहचान अनिल राभा (43) के रूप में हुई है। मृतक राभा कताबाड़ी गांव का निवासी है। वन विभाग के मुताबिक अपने झुंड से भटककर नामशांतिपुर के रिहायसी इलाके में पहुंचे हाथी को ग्रामीण खदेड़ने की कोशिश कर रहे थे, तभी राजेंद्र मराक के घर के परिसर में हाथी ने अनिल राभा पर हमला कर दिया। इससे अनिल राभा की मौत हो गई। ग्रामीणों का कहना है कि घटना की सूचना पर मौके पर वन विभाग की टीम पहुंची, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की। उल्लेखनीय है कि गत रविवार को भी बरखाल में हाथी के हमले में कमलेश्वर बोड़ो नामक व्यक्ति की मौत हो गई थी। बावजूद इसके वन विभाग ने हाथी को भगाने के लिए कोई उपाय नहीं किए। वन विभाग की अनदेखी से लोगों को के बीच दहशत पैदा कर दिया है।

# जेसीआई प्रिंसेस ने हरिजन कॉलोनी में किया स्वेटर वितरण

**गुवाहाटी ( विभास )।** जेसीआई प्रिंसेस ने सर्दी के मौसम को देखते हुए उजान बाजार हरिजन कॉलोनी में में गोद ली हुई स्कूल में 3 वर्ष से 5 वर्ष तक के बच्चों के लिए 70 स्वेटर वितरित किया। इस कार्यक्रम की संयोजिका व स्वेटर प्रायोजक सलोनी अग्रवाल थी। इस अवसर पर जेसीआई प्रिंसेस की अध्यक्ष मानवी अग्रवाल ने बताया कि जेसीआई प्रिंसेस ने सर्दी के इस मौसम में 22 जनवरी से पहले गुवाहाटी के विभिन्न क्षेत्रों में दो हजार स्वेटर वितरित करने का लक्ष्य लिया है। जिसमें आज प्रथम चरण में उजान बाजार में जेसीआई प्रिंसेस द्वारा गोद ली हुई स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों के बीच स्वेटर वितरित किया गया। अगले चरण के लिए पूनम जाखड़ को कार्यक्रम संयोजिका बनाया गया है। पूनम जाखड़ ने बाकी के बचे हुए स्वेटर प्रायोजित करने का आश्वासन जेसीआई प्रिंसेस की सदस्योंओ को दिया। कार्यक्रम में जेसीआई प्रिंसेस की कई सदस्याये भी उपस्थित थीं।

## मुख्यमंत्री ने संगीतकार भूपेन उजिर के निधन पर शोक व्यक्त किया

**गुवाहाटी ( हिंस )।** मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने असम के महान संगीतकार भूपेन उजिर के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने आज सोशल साइट एक्स पर लिखा कि असम के संगीत जगत में एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व भूपेन उजिर के निधन के बारे में सुनकर मुझे दुख हुआ है। वे एक ऐसे संगीतकार थे, जिन्होंने अपने संगीत माध्यम से असम की सांस्कृतिक जगत में महान योगदान दिया। उन्होंने संगीत जगत की लंबे समय तक सेवा की। अपने संगीत से कई पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध करने वाले भूपेन उजिर का निधन हमारे सांस्कृतिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। मैं (मुख्यमंत्री) उनकी शाश्वत शांति की कामना करता हूं और शोक संतप्त परिवार और उजिर के प्रशंसकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। पूरा असमिया संगीत उद्योग एक प्रसिद्ध शख्सियत, संगीत निर्देशक भूपेन उजिर के निधन पर शोक मना रहा है।

# कामरूप जिला विकास समिति की बैठक आयोजित

**रंगिया ( विभास )।** जिला विकास समिति के दिसंबर महीने की बैठक आज राजापाड़ा स्थित वन विभाग के गेस्ट हाउस में आयोजित की गई। जिला विकास आयुक्त नरसिंह बे की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में कामरूप जिले के विभिन्न विभागों के प्रमुख अधिकारियों ने भाग लिया। आज आयोजित इस बैठक में कामरूप जिले में विभिन्न विभागों द्वारा कार्यान्वित की जा रही योजनाओं और परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। इसके अलावा गत नवंबर महीने में हुई बैठक में विभिन्न विभागों को जारी किए गए निर्देशों की प्रगति की भी समीक्षा की गयी। बैठक में कृषि, सार्वजनिक स्वास्थ्य तकनीकी, जनसंपर्क, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, हस्तशिल्प और कपड़ा, भूमि संरक्षण, एपीडीसीएल, उद्योग और वाणिज्य, पशुपालन और पशु चिकित्सा, जल संसाधन, लोकनिर्माण (सड़क) और आवास, कौशल विकास, श्रम कल्याण, वन, रेशम, खाद्य और नागरिक, आबकारी, मत्स्य पालन, सिंचाई, जल संसाधन आदि विभागों के अधीनस्थ जारी योजनाएं क्रमश: किसान सम्मान निधि, जनधन योजना, पीएमजीएसवाई, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी केंद्र और राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित विभिन्न योजनाओं की प्रगति की भी समीक्षा की गई और बैठक में संबंधित विभागों को योजनाओं को समय पर लागू करने का निर्देश दिया गया। उल्लेखनीय है कि साधारणत: जिला विकास समिति की नियमित बैठक जिला आयुक्त कार्यालय के सभागार में आयोजित की जाती है परंतु इसबार जिला सदर के बाहर पलाशबाड़ी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत राजापाड़ा में यह बैठक आयोजित की गई।

## गणेशगुड़ी हनुमान मंदिर में श्री राम उत्सव का आयोजन

**गुवाहाटी ( विभास )।** आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के पावन दिवस पर गुवाहाटी के दिसपुर स्थित श्री श्री हनुमान मंदिर गणेशगुड़ी में एक दिवसीय श्री राम उत्सव का विशाल धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन किया जाएगा। मंदिर के सदस्य अशोक गोयल ने बताया की आगामी 22 जनवरी को प्रात: 10 बजे से हवन प्रात: 11 बजे से अयोध्या से आयोजित प्राण प्रतिष्ठा का सीधा प्रसारण के बाद दोपहर 1 बजे से श्री मारुति मंडल दिसपुर द्वारा भजन कीर्तन एवं संगीतमय हनुमान चालीसा संधिया तथा शाम 5 बजे से गणेश उद्यान के खुले मैदान में सामाजिक दीप उत्सव आयोजित किया जाएगा। वहीं शाम 6 बजे से यूपी से आमंत्रित अतिथि कलाकार रामजी-श्यामजी पार्टी द्वारा नृत्य नाटिका का आयोजन किया जाएगा। समिति की ओर से श्री गोयल सभी भक्तों से इस आयोजन हाजरी लगा कर सनातन धर्म एवं संस्कृति को प्रगाढ़ करने का आहवान किया गया हैं।

## गोलाघाट में करीब तीन करोड़ रुपए की हेरोइन के साथ तस्कर गिरफ्तार

**गोलाघाट ( हिंस )।** गोलाघाट के जामुगुड़ी में करीब तीन करोड़ रुपये की हेरोइन आज जब्त की गई। पुलिस ने आज यहां बताया कि डिमापुर से एक टाटा जेस्ट (एएस-05जे-4519) की गोलाघाट जाते समय तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान 57 प्लास्टिक के साबुनदानी में 620 ग्राम हेरोइन बरामद किया गया। जप्त की गई हेरोइन का बाजार मूल्य तीन करोड़ रुपए बताया गया है। हेरोइन को कार में खास तरीके से पीछे की लाइट के अंदर छिपाकर रखा गया था। उल्लेखनीय है कि गोलाघाट सदर के पुलिस उपाधीक्षक जन दास के नेतृत्व में जामुगुरी, बरपथार और सरूपथार पुलिस ने यह अभियान चलाया था। पुलिस ने सोनारी के नाजिम शेख नाम के युवक को इस सिलसिले में गिरफ्तार किया है।

# दो दिवसीय दादी महोत्सव का नगांव में सफलतापूर्वक समापन

## संगीतमय मंगलपाठ में दादीमय हुआ आयोजन स्थल

**नगांव ( निसं )।** शहर के श्रीहनुमान जन्मोत्सव समिति भवन परिसर में दो दिवसीय श्री राणी सती दादी महोत्सव बुधवार को यहां कुशलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन भी आयोजन स्थल में भक्तो की अपार भीड़ देखी गई। आज के मुख्य कार्यक्रम में दीदीजी का संगीतमय मंगलपाठ रहा जो अजमेर (राजस्थान) से आमंत्रित गायक कलाकार तेजस राणा की अगुवाई में संपन्न हुआ। तेजस राणा द्वारा प्रस्तुत मंगलपाठ की जितनी सराहना की जाय कम है। संगीतमय मंगलपाठ से आयोजन स्थल दादीमय हो गया। कार्यक्रम में महिलाए सोलह श्रृंगार किए हुए उपस्थित थी और तन्मयता से सभी ने मंगलपाठ का वाचन किया। मंगलपाठ के दौरान

दादीजी का जन्म वृतांत, कृष्ण लीला, दादीजी की मेहन्दी, हल्दी, विवाह, बारात, गजरा, चुनडी आदि सहित कई मुख्य वृतांत की झांकियों का प्रदर्शन किया गया और दादीजी के सती होने तक की कथा सुनाई गई। कार्यक्रम सुबह 11 बजे आरंभ होकर रात आठ बजे तक संपन्न हुआ। श्री राणी सती सत्संग समिति के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में सभी सदस्य अपने गणावेश में थे और कार्यक्रम की सभी व्यवस्था को सम्भाले हुए थे। कार्यक्रम के दोपहर में व समापन पर आज भी भंडारे का आयोजन किया गया था। भव्य सजे दरबार में आज भी ज्योत प्रज्वलित की गई। दो

# रंगिया राइजमेल का वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक संपन्न

**रंगिया ( विभास )।** रंगिया के ऐतिहासिक राइजमेल का वार्षिक उत्सव दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ स्थानीय कृषक शहीद भवन प्रांगण में 9 व 10 जनवरी को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलवार, 9 जनवरी को रंगिया राइजमेल कृषक शहीद स्मृतिरक्षा समिति के अध्यक्ष तथा राज्यसभा सांसद भुवनेश्वर कलिता द्वारा ध्वजारोहण एवं योगाचार्य ज्योतिष कलिता द्वारा मंगलाचरण पाठ के साथ सुबह 9 बजे किया गया। इसके पश्चात असम के युवा नेता स्व. मोहन चन्द्र कलिता को उनके पुत्र और परिवार के सदस्यों द्वारा सामुहिक रूप से श्रद्धाजंलि दी गई। तत्पश्चात सांसद श्री कलिता के संचालन *गणतंत्र प्रोगोतीर वाहोक* शीर्षक विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कई गणमान्य लोग संसाधन व्यक्तियों के रूप में उपस्थित रहे। इसके अलावा भारतीय सेना के पूर्व

ईस्टर्न कमांड, जीओसी इन चीफ, लेफ्टिनेंट जनरल राणा प्रताप कलिता ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस मौके पर एक विशेष सम्मान समारोह का आयोजन कर समिति तथा उपस्थित विभिन्न लोगों ने रंगिया की सु-संतान राणा प्रताप कलिता को सम्मानित किया। उत्सव के दूसरे दिन यानी 10 जनवरी, बुधवार को सुबह शहीद स्मारक स्तंभ के सामने दीप प्रज्ज्वलन, श्रद्धांजलि तर्पण के अलावा रंगिया ग्राम स्वराज परिषद के सदस्यों द्वारा रामधुन और उपस्थित विभिन्न धर्मालंबियों द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना की गई। इसके पश्चात समिति के उपाध्यक्ष लखीकांत महंतों की अध्यक्षता एवं समिति के सदस्य भुवनेश्वर लहकर के संचालन में एक खुली बैठक का आयोजन किया गया। समिति के मुख्य सचिव पविन कलिता द्वारा उद्देश्य व्यख्या और संपादकीय प्रतिवेदन पाठ के साथ ही कार्यक्रम के अंतर्गत एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में बैधगढ़ हाईस्कूल, तोरोनि के अवसरप्राप्त प्रधान शिक्षक ननिधर कलिता, अवसरप्राप्त शिक्षक तथा 58 बर्षीय गोपाम सेवक नलिनीकांत महंतों, देउलकुची उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष बशिष्ठ बोड़ो को सम्मानित किया गया। आयोजित बैठक में पुथीमारी महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. नित्यनन्द कलिता निर्दिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में असम के पूर्व शिक्षामंत्री थानेश्वर बोड़ो, योगाचार्य ज्योतिष कलिता, सांस्कृतिक पेंशनभोगी नरेंद्र शर्मा, ज्योतिर्मय कलिता, लक्ष्मीकांत मोहंतो, पवित्र कलिता, महेश काकोती, बंकिम सैकिया, राजेन कलिता, दीपक कलिता, चक्रधर कलिता, मिराजुल इस्लाम, कैलाश चंद जैन, भवेन कलिता, गौरी प्रभा मोहंता, अनिमा ठाकुरिया, डॉ. रुनुमी दत्त डेका, सरस्वती कलिता, बंशीधर कलिता, जब्बर अली, ममताज अली, रोबिन गोस्वामी, और समिति के कई पदाधिकारी और बहुत से गणमान्य लोगों ने भाग लिया।

# नौसेना को मिला पहला स्वदेशी मीडियम एल्टीट्यूड लॉन्ग एंड्योरेंस दृष्टि-10 यूएवी

**- स्टारलाइनर दृष्टि-10 यूएवी जल्द ही नौसेना और सेना में शामिल होगा**
**- अडानी डिफेंस ने हैदराबाद के यूएवी कॉम्प्लेक्स में किया है विकसित**

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** नौसेना प्रमुख एडमिरल आर. हरि कुमार ने बुधवार को पहला स्वदेशी मीडियम एल्टीट्यूड लॉन्ग एंड्योरेंस दृष्टि-10 यूएवी नौसेना को सौंप दिया। इसे अडानी डिफेंस सिस्टम्स एंड टेक्नोलॉजीज ने हैदराबाद स्थित यूएवी कॉम्प्लेक्स में निर्मित किया है। हर्मीस यूएवी पर आधारित स्टारलाइनर दृष्टि-10 यूएवी जल्द ही नौसेना और सेना में शामिल होगा। उन्होंने कहा कि पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष और उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद यह यूएवी विकसित करके नौसेना को सौंपा जाना महत्वपूर्ण है। नौसेना प्रमुख ने कहा कि अडानी डिफेंस सिस्टम्स एंड टेक्नोलॉजीज में पहले स्वदेशी मीडियम एल्टीट्यूड लॉन्ग एंड्योरेंस यूएवी की प्रगति का जायजा लेने और समीक्षा करने के लिए आपके बीच आना वास्तव में सम्मान और गर्व की बात है। दृष्टि-10 अनुबंध के बाद केवल 10 महीनों में अपने नाम के अनुरूप यह यूएवी दिन की रोशनी 'देख' चुका है। उन्होंने कहा कि समसामयिक दुनिया के तेजी से विकसित हो रहे और गतिशील तकनीक से जुड़े युद्धों में स्वायत्त प्रणालियों के महत्व पर जोर देने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम अपने घरों में बैठे-बैठे यूरोप और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्षों में उनके प्रभाव को देखते रहते हैं। इसके अलावा उत्तरी अरब सागर में हाल की घटनाएं इस तरह की प्रणालियों के आतंकवादियों के हाथों में पड़ने पर उत्पन्न होने वाली चुनौतियां दशार्ती हैं। एडमिरल कुमार ने कहा कि आज दुनिया भर के देशों के लिए युद्ध के क्रम में स्वायत्त प्रणालियां पसंदीदा विकल्प बनती जा रही हैं। हमारे दोनों निकटतम पड़ोसियों के पास सामूहिक रूप से यूएवी की एक बहुत बड़ी सूची है। इसलिए एक राष्ट्र के रूप में और सशस्त्र बलों के रूप में हमें चुस्त और सतर्क रहकर इस क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करना जारी रखें। भारतीय नौसेना पिछले दो दशकों से यूएवी का संचालन कर रही है, जो नौसेना के आत्मनिर्भर और 'फ्यूचर-प्रूफ' बल होने के 'विजन' का प्रतीक है। ऐसे परिष्कृत और विशिष्ट प्लेटफार्मों के स्वदेशीकरण को अपनाने और एकीकृत करने में सशस्त्र बलों के बीच अग्रणी के रूप में हमारे कद को भी मजबूत करती है। उन्होंने आज नौसेना को सौंपे गए दृष्टि-10 यूएवी की खूबियों के बारे में बताया कि अत्याधुनिक सेंसर, उन्नत सहनशक्ति, उन्नत संचार क्षमताओं के साथ-साथ स्वचालित टेक ऑफ और लैंडिंग (एटीओएल) जैसी नई पीढ़ी की प्रौद्योगिकियों के साथ इंटेलिजेंस, निगरानी और विश्वसनीयता बढ़ेगी। दृष्टि-10 आकाश में हमारी तीसरी आंख बन सकता है, जिससे हमारी नौसेना भारत पर बुरी नजर डालने की हिम्मत करने वाले किसी भी व्यक्ति पर निशाना साधने में सक्षम होगी। मुझे विश्वास है कि दृष्टि-10 यूएवी भारत के राष्ट्रीय समुद्री हितों की रक्षा के लिए हमारे भविष्य के नौसैनिक अभियानों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और हिंद महासागर क्षेत्र में हमारे दोस्तों और भागीदारों के सहयोग से समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

## प्रधानमंत्री 12 जनवरी को नासिक में 27वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव का करेंगे उद्घाटन

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 12 जनवरी को महाराष्ट्र के नासिक में 27वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव का उद्घाटन करेंगे और देश के युवाओं को संबोधित करेंगे। एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार, इस वर्ष, राष्ट्रीय युवा दिवस कई सरकारी विभागों के सहयोग से पूरे भारत के जिलों में युवा मामलों के विभाग के सभी क्षेत्रीय संगठनों द्वारा मनाया जाएगा। एनएसएस इकाइयों, एनवाईकेएस और कई शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से पूरे देश में 'माई भारत' के स्वयंसेवक भारत के लिए स्वयंसेवक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए अपनी ऊर्जा का समन्वय करेंगे। अभियान में 88,000 से अधिक स्वयंसेवक भाग लेंगे। इन आयोजनों के लिए स्वयंसेवकों को माई भारत डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से पंजीकृत किया जाता है। 12 जनवरी को देश के प्रमुख शहरों और 750 जिला मुख्यालयों पर सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। प्रशिक्षित सड़क सुरक्षा स्वयंसेवकों को केंद्रीय व राज्य मंत्रियों, स्थानीय सांसदों या विधायकों द्वारा हरी झंडी दिखाई जाएगी, जो एक गहन अभियान के माध्यम से सुरक्षित कल के निर्माण की प्रतिबद्धता को दशार्ता है। इन स्वयंसेवकों को ट्रैफिक चोक पॉइंट्स में यातायात को संभालने में सहायता करने और सड़क सुरक्षा जागरूकता गतिविधियों का संचालन करने के लिए तैनात किया जाएगा। स्वयंसेवक बच्चों के लिए कहानी सुनाने के सत्र के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों का भी दौरा करेंगे और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी का प्रसार करेंगे। उल्लेखनीय है कि 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द की जयंती है और इसे राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। देश के 763 जिलों में, राष्ट्रीय युवा दिवस पर एक जिला स्तरीय मेगा कार्यक्रम स्वामी विवेकानन्द को पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ शुरू होगा।

## गणतंत्र दिवस की परेड देखने के लिए ऑनलाइन बुक होगी टिकट

**नई दिल्ली (ईएमएस)।** राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के कर्तव्यपथ पर चलने वाली परेड देखने के लिए ऑनलाइन टिकटें मिलेंगी। यह भारत की समृद्ध संस्कृति और इतिहास को प्रदर्शित करती है। पूरे देश से लोग यहां परेड देखने आते हैं, जिसमें सांस्कृतिक प्रदर्शन, सैन्य प्रदर्शन और बहुत कुछ शामिल होता है। भारतीय नागरिक आरक्षित या अनारक्षित सीट ले सकते हैं। जिसकी कीमत 20 रुपये और 100 रुपये है।गणतंत्र दिवस पर विजय चौक पर खास परेड का आयोजन होता है। गणतंत्र दिवस परेड सुबह 10 बजे विजय चौक से शुरू होगी और 5 किलोमीटर की दूरी तक, नेशनल स्टेडियम पर परेड का अंतिम पड़ाव होगा। अगर आप भी परेड देखना चाहते हैं तो टिकट बुक करवा सकते हैं। भारतीय नागरिक आरक्षित या अनारक्षित सीट ले सकते हैं। जिनकी कीमत 20 रुपये और 100 रुपये है। हालांकि, टिकटों की बुकिंग आज यानी 10 जनवरी से शुरू हो गई। टिकट 25 जनवरी तक उपलब्ध रहेंगे लेकिन हर दिन टिकट सीमित संख्या में ही उपलब्ध होंगे। रक्षा मंत्रालय के आधिकारिक वेब पोर्टल पर जाकर टिकिट बुक की जा सकती है। इसके लिए लॉगिन करें या नया अकाउंट बनाएं। फिर व्यक्तिगत विवरण जैसे नाम, जन्मतिथि, मोबाइल नंबर आदि भरें। मोबाइल नंबर पर भेजे गए ओटीपी से वेरिफाई करें। विकल्पों में से एक कार्यक्रम चुनें जिसमें एफडीआर गणतंत्र दिवस परेड, गणतंत्र दिवस परेड, बीटिंग द रिट्रीट शामिल हैं। सत्यापन उद्देश्य के लिए, सहभागी जानकारी प्रदान करें और एक मूल फोटो आईडी अपलोड करें। ऑनलाइन भुगतान प्रक्रिया पूरी करके टिकट डाउनलोड करें। इसके अलावा गणतंत्र दिवस परेड के लिए ऑफलाइन टिकट भी उपलब्ध रहेंगे जो भारत सरकार पर्यटक कार्यालय और डीटीडीसी काउंटर व आईडीटीसी ट्रैवल काउंटर पर उपलब्ध होंगे। विभागीय बिक्री काउंटर रोजाना सुबह 10 बजे से शाम 5:30 बजे तक टिकट बेचेंगे, जबकि संसद भवन का रिसेप्शन सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक टिकट बेचेगा।

## ईडी ने शिवसेना विधायक रविंद्र वायकर को पूछताछ के लिए 17 को बुलाया

**जोगेश्वरी में कथित 500 करोड़ रुपये के जमीन घोटाले को लेकर होगी पूछताछ**

**मुंबई, (हि.स.)। प्रवर्तन** निदेशालय (ईडी) की टीम ने शिवसेना (यूबीटी) के विधायक रविंद्र वायकर को समन भेजकर 17 को पेश होने का आदेश दिया है। ईडी की ओर से यह समन जोगेश्वरी में कथित 500 करोड़ रुपये के जमीन घोटाले के संबंध में जारी किया गया है। मंगलवार को ईडी के 12 अधिकारियों की टीम ने विधायक रविंद्र वायकर और उनके पार्टनर के घर और दफ्तरों पर छापेमारी की थी। हालांकि अभी तक ईडी की टीम की ओर से कोई अधिकृत जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन बताया जा रहा है कि कई महत्वपूर्ण कागज और दस्तावेज ईडी के हाथ लगे हैं। इन्हीं कागजपत्रों के आधार पर ईडी की टीम रविंद्र वायकर से पूछताछ करने वाली है।

दरअसल, जोगेश्वरी के वेरावली गांव में एक भूखंड का दुरुपयोग करने और उस भूखंड पर पांच सितारा होटल के निर्माण करने के मामले में रविंद्र वायकर पर आरोप लगा है। इस भूखंड को लेकर 500 करोड़ रुपये का घोटाला किए जाने का यह आरोप भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष किरीट सोमैया ने लगाया है। सोमैया ने इस मामले की जांच के लिए ईडी के समक्ष शिकायत की थी। इसी शिकायत के आधार पर ईडी की टीम मामले की गहन छानबीन कर रही है।

## कांग्रेस ने लॉन्च किए 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' से जुड़े पैम्फलैट व वेबसाइट

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल व महासचिव जयराम रमेश ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' से जुड़े पैम्फलेट, वेबसाइट और न्याय योद्धा कैंपेन लॉन्च किये। इस दौरान कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि देश का कोई भी व्यक्ति इस नंबर पर 9891802024 पर मिस्ड कॉल देकर न्याय योद्धा बन सकते हैं और यात्रा से जुड़ सकते हैं। मीडिया को संबोधित करते हुए वेणुगोपाल ने कहा कि 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' ऐतिहासिक बनने जा रही है। इस यात्रा में सभी दलों और संगठनों को आमंत्रित किया गया है। यह कोई राजनैतिक यात्रा नहीं है बल्कि यह आम लोगों की यात्रा है। वेणुगोपाल ने कहा कि यात्रा इंफाल के पैलेस ग्राउंड से शुरू होनी थी। लेकिन इस ग्राउंड के लिए राज्य सरकार ने अनुमति नहीं दी है। हम कोई अन्य जगह तलाश रहे हैं। हालांकि यात्रा इंफाल से ही शुरू की जाएगी।

## जनता का भरोसा जीतना कांग्रेस के लिए जरूरी : खड़गे

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जनता के बीच रहना, उनके मुद्दों को उठाना व उनका भरोसा जीतना कांग्रेस के लिए जरूरी है। खड़गे ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के विभिन्न विभागों व अग्रिम संगठनों से चर्चा के दौरान कहा कि आम चुनाव में हम वहां सफल रहे, जहां हमने जनता के बीच काम किया। हालांकि हम वहां फेल रहे, जहां हमने केवल जनसभाएं कीं। अगर हम जनता के साथ नहीं घुले मिले, उनके बीच काम न करें तो हम उसका भरोसा जीत लेने की आशा नहीं कर सकते हैं। ऐसे में कांग्रेस को जनता के बीच रहना ही होगा। खड़गे ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा के बाद अब भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर निकलने वाले हैं। यह यात्रा ऐतिहासिक होगी। राहुल गांधी लगातार देश की जनता से जुड़ रहे हैं। उनसे संवाद कर रहे हैं और हमें मिलकर जनता के मुद्दों का समाधान निकालना है। खड़गे ने कहा कि कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी के नेतृत्व में 2004 और 2009 में लगातार दो बार हम सब मिल कर भाजपा को पराजित कर चुके हैं। बस हमें अपनी ताकत को पहचान कर, अपने विचारों पर एक होकर कायम रहना है।

## राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के निमंत्रण को कांग्रेस ने किया अस्वीकार

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** कांग्रेस ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा को भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यक्रम बताते हुए इसके निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी और लोकसभा में पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी को प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम का निमंत्रण मिला था। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने बुधवार को एक बयान में कहा, कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और अधीर रंजन चौधरी ससम्मान निमंत्रण अस्वीकार करते हैं जो कि स्पष्ट रूप से आरएसएस-भाजपा का कार्यक्रम है। जयराम रमेश ने बताया कि कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे, सोनिया गांधी और अधीर रंजन चौधरी को 22 जनवरी को आयोजित होने वाले श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिए निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ था। उन्होंने कहा कि राम देश में लाखों लोगों की आस्था हैं। धर्म व्यक्तिगत विषय है। रमेश ने आरोप लगाया कि भाजपा और आरएसएस ने राम मंदिर निर्माण को सालों से राजनीतिक परियोजना बनाया हुआ है। एक अधूरे निर्मित मंदिर का उद्घाटन स्पष्ट तौर पर राजनीति लाभ के लिए किया जा रहा है।

## चंद्रबाबू नायडू को आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट से बड़ी राहत, तीनों मामलों में मिली अग्रिम जमानत

**अमरावती, (हि.स.)।** टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू को आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। उन्हें हाई कोर्ट ने तीन मामलों में अग्रिम जमानत दे दी है। जस्टिस टी. मल्लिकार्जुन राव की बेंच ने बुधवार को यह आदेश दिया। कोर्ट ने चंद्रबाबू को हिदायत दी है कि वे इस दौरान जांच को प्रभावित करने वाली टिप्पणियां नहीं करेंगे। एक सप्ताह के भीतर एक-एक लाख रुपये के दो बेल बांड दाखिल करने होंगे। कोर्ट ने पूछताछ के लिए सीआईडी को 48 घंटे पहले नोटिस देकर याचिकाकताओं की जांच करने का निर्देश दिया है। आंध्र प्रदेश सीआईडी ने इनर रिंग रोड (आईआरआर), रेत और शराब मामलों में अनियमितताओं के लिए चंद्रबाबू के खिलाफ मामले दर्ज किए थे और बाद में उनकी गिरफ्तारी हुई। तेलुगु देशम के नेता चंद्र बाबू ने अग्रिम जमानत के लिए हाई कोर्ट में 3 अलग-अलग याचिकाएं दायर कीं थी। बहस पूरी होने के बाद आज हाई कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया है। इससे पहले शराब मामले में पूर्व मंत्री कोल्लू रवींद्र और सेवानिवृत्त आईएएस श्रीनरेश को अग्रिम जमानत दी गई थी।

## गन सैल्यूट के साथ उस्ताद राशिद खान को दी गई कोलकाता में अंतिम विदाई

**कोलकाता, (हि.स.)।** कोलकाता के पीयरलेस अस्पताल में दम तोड़ने वाले मशहूर शास्त्रीय संगीतकार उस्ताद राशिद खान को बुधवार को अंतिम विदाई दी गई। कोलकाता के राजकीय नंदन प्रेक्षागृह में उनके पार्थिव शरीर को बुधवार लाया गया। यहां संगीतकारों और अन्य कलाकारों ने उन्हें अंतिम विदाई दी। इस मौके पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और अन्य कलाकार मौजूद थे। उन्हें पुलिस की ओर से गन सैल्यूट के साथ अंतिम विदाई दी गई है। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बदायूं में हुआ था, इसलिए वहीं उन्हें सुपुर्देखाक किया जाएगा। कोलकाता में अंतिम विदाई देने के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश के बदायूं के लिए रवाना कर दिया गया। उल्लेखनीय हैं कि शास्त्रीय संगीत के मशहूर गायक उस्ताद राशिद खान का निधन मंगलवार को हो गया। वह 55 वर्ष के थे। कोलकाता के अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। इसकी सूचना मिलने के तुरंत बाद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अस्पताल जा पहुंची थीं। बनर्जी ने कहा था कि प्रोस्टेट कैंसर के कारण कोलकाता के अस्पताल में इलाज करा रहे संगीत सम्राट उस्ताद राशिद खान का निधन हो गया। हमने उनके इलाज में सर्वश्रेष्ठ कोशिश की लेकिन बचाना संभव नहीं हो सका। पिछले महीने सेरेब्रल अटैक के बाद संगीतकार की स्वास्थ्य स्थिति बिगड़ गई थी। रामपुर-सहसवान घराने से ताल्लुक रखने वाले खान, घराने के संस्थापक इनायत हुसैन खान के पड़पोते थे।

## मप्र के मुख्यमंत्री ने लाड़ली बहनों के खातों में ट्रांसफर किए 1576 करोड़ रुपये

**भोपाल, (हि.स.)।** मध्य प्रदेश में नई सरकार बनने के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लाड़ली बहना योजना की पहली किस्त बुधवार को सिंगल क्लिक से जारी की। उन्होंने यहां कुशाभाऊ ठाकरे कॉन्वेंशन सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में योजना की पात्र हितग्राहियों के खातों में सिंगल क्लिक के जरिए 1576.61 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए। करीब 1.29 करोड़ लाड़ली बहनों के खातों में 1250-1250 रुपये की राशि अंतरित की गई है। साथ ही मुख्यमंत्री ने सामाजिक न्याय विभाग की 12 पेंशन स्कीम के 56 लाख हितग्राहियों को 341 करोड़ रुपये भी ट्रांसफर किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दोपहर करीब 12 बजे कुशाभाऊ ठाकरे सभागार पहुंचे और कन्या पूजन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके साथ ही महिला सशक्तीकरण सप्ताह प्रारंभ हो गया, जो 15 जनवरी तक चलेगा। इसमें जिलों में अलग-अलग कार्यक्रम होंगे। महिला सशक्तीकरण एवं युवा ऊर्जा पर केंद्रित इस उत्सव की शुरूआत मुख्यमंत्री ने प्रतीकस्वरूप पांच महिलाओं को उपहार में कंगन और मिठाई देकर की। इसे मकर संक्रांति उत्सव नाम दिया गया है। महिला सशक्तीकरण सप्ताह के अंतर्गत जिला स्तर पर लाड़ली लक्ष्मी फ्रेंडली ग्राम पंचायतों, प्रतियोगी परीक्षाओं में चयनित बालिकाओं का सम्मान किया जाएगा। इसके साथ ही उल्लेखनीय कार्य करने वाले शौर्य दल के सदस्यों को भी सम्मानित किया जाएगा। ऐसी बालिकाएं, जिसने सूचना देकर स्वयं का बाल विवाह रुकवाया हो, उन्हें सम्मानित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा, मैं, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद देता हूं। वह वाकई अद्भुत नेता हैं, जिनके लिए हम सबके मन में विशेष आदर, प्रेम, स्नेह है। उनके द्वारा कदम-कदम पर जिस तरह की योजनाएं बनाई जा रही हैं, जिस प्रकार से वह काम कर रहे हैं, वह अद्भुत है। पूरी दुनिया उनका लोहा मानती है। यहां तक पड़ोसी देश पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान भी कह चुके हैं कि काश, मोदी हमारे देश में होते। प्रधानमंत्री मोदी के कुशल नेतृत्व में विगत 10 वर्षों में महिला सशक्तीकरण की दिशा में अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में आज से मकर संक्रांति उत्सव की शुरूआत हो रही है। मुझे प्रसन्नता है कि पहले दिन हम 'मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना' के अंतर्गत 1.29 करोड़ लाड़ली बहनों को कुल ड्ड1576 करोड़ की धनराशि उनके बैंक खातों में अंतरित की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम महिला सशक्तीकरण सप्ताह मनाने जा रहे हैं। यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता। हमारे देश में सदैव नारी की पूजा होती है। अन्य कोई देश या संस्कृति ऐसी नहीं, जहां बहन, बेटियों का सम्मान इस तरह किया जाता हो।

## जम्मू की कोट भलवाल केंद्रीय जेल में बंद लश्कर आतंकवादी के पास से मिला स्मार्टफोन

**जम्मू, (हि.स.)।** जम्मू की कोट भलवाल स्थित केंद्रीय जेल में बंद लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादी के पास से एक स्मार्टफोन बरामद किया गया है। यह स्मार्टफोन चीनी कंपनी पोको का है, जिसे जम्मू-कश्मीर पुलिस ने जब्त कर लिया है। केंद्रीय खुफिया एजेंसियों ने इस मामले की जांच शुरू कर दी है। सीआईएसएफ के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कठुआ के हरिया चक निवासी हबीब पुत्र हज शेरू के पास से एक स्मार्टफोन बरामद किया गया है, जिसे जम्मू-कश्मीर पुलिस को सौंप दिया गया है। उन्होंने कहा कि यह फोन जेल के अंदर कैसे पहुंचा इसकी जांच की जा रही है। जेल के अंदर से मोबाइल फोन मिलने के बाद केंद्रीय खुफिया एजेंसियों ने अपने स्तर पर इस सुरक्षा उल्लंघन की जांच शुरू कर दी है। यह आतंकी हबीब कठुआ के ढल्ली क्षेत्र में सीमा पार से आए ड्रोन से यूबीजीएल और चुंबकीय बमों की बरामदगी से संबंधित मामले में आरोपित है। पिछले साल राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने उसे गिरफ्तार किया था। शुरू में मामला कठुआ के राजबाग थाने में दर्ज किया गया, जिसे बाद में जनवरी, 2022 में एनआईए ने पंजीकृत किया। एनआईए को जांच में पता चला कि पाकिस्तानी हैंडलर सज्जाद गुल के निर्देश पर आतंकी हबीब सीमा पार से ड्रोन के माध्यम से गिराए जाने वाले हथियार कश्मीर घाटी में सक्रिय आतंकवादियों को पहुंचाता था।

## स्टार्ट-अप इंडिया के आठ शानदार वर्ष पूरे होने पर स्टार्ट-अप इंडिया इनोवेशन वीक का होगा आयोजन

**नई दिल्ली, (हि.स.)।** वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय का उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग 10 से 18 जनवरी के बीच स्टार्ट-अप इंडिया इनोवेशन वीक का आयोजन करने जा रहा है। प्रधानमंत्री ने पिछले साल 16 जनवरी को राष्ट्रीय स्टार्ट-अप दिवस घोषित किया था। इस साल 16 जनवरी को स्टार्ट-अप इंडिया के आठ शानदार वर्ष पूरे हो रहे हैं। सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि आजादी के 100वें वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रधानमंत्री का आह्वान है। देश के स्टार्ट-अप्स, उद्यमियों, निवेशकों, नीति निमार्ताओं को एक साथ लाने के उद्देश्य से इस इनोवेशन वीक का आयोजन किया जा रहा है। सरकारी प्रवक्ता के मुताबिक इनोवेशन वीक 2024 के दौरान डीपीआईआईटी सचिव राजेश कुमार सिंह 11 जनवरी 2024 को गुजरात के गांधीनगर में दसवें वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में स्टार्ट-अप सेमिनार 'स्टार्ट-अप अनलॉकिंग इनफिनिट पोटेंशियल' में उद्घाटन भाषण देंगे। जिसका उद्देश्य व्यापार नेटवर्किंग, ज्ञान साझाकरण और समावेशी सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करना है। 16 जनवरी को राष्ट्रीय स्टार्ट-अप दिवस समारोह के हिस्से के रूप में डीपीआईआईटी राष्ट्रीय स्टार्ट-अप पुरस्कार 2023 और राज्यों के स्टार्ट-अप रैंकिंग फ्रेमवर्क के चौथे संस्करण स्टार्ट-अप इंडिया के तहत दो प्रमुख पहलों के लिए परिणाम घोषणा और सम्मान समारोह का आयोजन कर रहा है। इसके अलावा, 'हाउ टू स्टार्ट-अप', पर केंद्रित पांच समर्पित मेंटरशिप सत्र आयोजित करने की योजना बनाई गई है, जो व्यवसाय संरचनाओं को समझने, किसी इकाई को शामिल करने की प्रक्रियाओं और किसी व्यवसाय संबंधी योजना बनाने जैसे विषयों पर इच्छुक उद्यमियों और छात्र उद्यमियों की क्षमता निर्माण पर केंद्रित होंगे।

# मेरठ में होने वाली अनुसूचित जाति की महापंचायत स्थगित

**मेरठ, (हि.स.)।** राजमिस्त्री इंदुशेखर हत्याकांड को लेकर बुधवार को मेरठ में होने वाली अनुसूचित जाति की महापंचायत स्थगित कर दी गई है। जिला प्रशासन ने मांगों को पूरा करने के लिए 20 दिन का समय मांगा। इस-ाके बाद महापंचायत स्थगित कर दी गई। इंचौली थाना क्षेत्र के साधारणपुर गांव निवासी राज मिस्त्री इंदुशेखर की हत्या परीक्षितगढ़ थाना क्षेत्र के धनपुर गांव में हुई थी। इस मामले में सात आरोपितों को पुलिस जेल भेज चुकी है, जबकि दो आरोपित अभी तक फरार चल रहे हैं। उनकी गिरफ्तारी की मांग को लेकर अनुसूचित जाति समाज के लोगों ने दस जनवरी को को कमिश्नरी पार्क में महापंचायत का ऐलान किया था। इस महापंचायत में आजाद समाज पार्टी के संस्थापक चंद्रशेखर रावण के आने की बात कही गई थी। महापंचायत को टालने के लिए एडीएम सिटी बृजेश सिंह और एसपी देहात कमलेश बहादुर ने इंदुशेखर के बेटे वंश, मेरठ कॉलेज के शिक्षक डॉ. सतीश प्रकाश समेत कई लोगों से बातचीत की। इसके बाद कैलाशपुरी स्थित कुमार आश्रम में पूर्व विधायक विनोद हरित, रालोद नेता नरेंद्र खजूरी, डॉ. सतीश प्रकाश, वंश समेत कई लोगों की पंचायत हुई। इस-ाके बाद एडीएम सिटी और एसपी देहात के साथ प्रमुख लोगों की बैठक हुई। वंश ने कहा कि जिस मकान को उनके पिता इंदुशेखर ने बनाया है और जिसे लेकर उनकी हत्या हुई। उस मकान का ध्वस्तीकरण कराया जाए। फरार दोनों आरोपितों को गिरफ्तार किया जाए। दोनों अधिकारियों ने मांगों को पूरा करने के लिए 20 दिन का समय मांगा। इसके बाद बुधवार को होने वाली महापंचायत स्थगित कर दी गई। इंटरनेट मीडिया पर महापंचायत स्थगित होने की सूचना भी जारी की गई। लोगों ने मांग पूरी नहीं होने पर 30 जनवरी को फिर से महापंचायत बुलाने की बात कही है।

# बरेली में नाथ कॉरिडोर का बजट पास करने के बाद ही आया : योगी आदित्यनाथ

**बरेली, (हि.स.)।** नाथ नगरी बरेली पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को बरेली क्लब मैदान में जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि पहले लोग अयोध्या का नाम लेने में संकोच करते थे लेकिन 500 वर्षों बाद अयोध्या में भव्य मंदिर बन रहा है। उन्होंने इसे राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाने की अपील करते हुए लोगों से कहा कि इस दिन सभी लोग दीपावली मनाएं। इस दिन सभी लोग अपने अपने घरों में दीप जलाएं। सभी लोग मंदिरों में रामायण का पाठ करें। उन्होंने सभी लोगो से अयोध्या आने की अपील की और कहा कि सभी सांसद, विधायक बसों से आपको अयोध्या ले जाएंगे और आप लोगो के खाने और ठहरने का भी प्रबंध करेंगे।

**बरेली में पहले लगता था कर्फ्यू, अब कर्फ्यू लगाने वालो के यहां लगेगा कर्फ्यू** - मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि पहले बरेली, मुजफ्फरनगर, रामपुर समेत कई शहरों में कर्फ्यू लगता था लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब तो कर्फ्यू लगवाने वालों के यहां कर्फ्यू लग जायेगा। अब हर ओर विकास हो रहा है। जब बरेली में कर्फ्यू लगा था तो मैने बरेली आने का कार्यक्रम बनाया था। मुझे आने नही दिया गया था।

**काशी, अयोध्या की तरह बरेली में बन रहा है नाथ नगरी कॉरिडोर** - मंच से जनता को संबोधित करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हम किसी भी तरीके का भेदभाव नहीं करते हैं। जिस तरीके से काशी में काशी कॉरिडोर, प्रयागराज और अयोध्या में कॉरिडोर बनाया जा रहा है। उसी तरह से बरेली में भी नाथ नगरी कॉरिडोर बनाया जा रहा है।

इसके लिए बजट का प्रावधान करने के बाद आया। सड़कों का बजट पास कर दिया है। इससे बरेली में विकास होगा। योगी ने कहा कि मै नगर निकाय चुनाव के दौरान बरेली आया था। उस समय आपसे कहा था कि डबल इंजन के साथ ट्रिपल इंजन भी जरूरी है। आप लोगों ने उमेश गौतम को अपना महापौर चुना है। उसके लिए आप सभी का धन्यवाद। आज 3405 करोड़ की परियोजनाओं में स्मार्ट सिटी, शिक्षा, स्वास्थ, विकास से जुड़ी परियोजनाएं हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज हम सब एक नए भारत का दर्शन कर रहे हैं।

पूरी दुनिया उसको फॉलो करती है। विकास की योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव के मिल रहा है। आईआईटी, एम्स, एयरपोर्ट आज भारत को नई पहचान दे रहे हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा चलाई जा रही है। बिना भेदभाव के हर योजनाओं को गरीबों तक पहुंचाया जा रहा है। यहां चेहरा देखकर योजनाओं का लाभ नहीं दिया जाता। गुलामी की मानसिकता से आगे बढ़ने का यही तरीका है। भारत का हर नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करेगा तो भारत विकसित भारत बनेगा। 14 से 20 जनवरी तक स्वक्षता अभियान चलेगा। हर मंदिर में रामायण करिए। 22 को सार्वजनिक अवकाश होगा। उस दिन घरों में दीप जलाओ, नए भारत की नई दीपावली मनाओ।

# मांगों को लेकर किसानों ने जीडीए कार्यालय घेरा, लगा जाम

**गाजियाबाद, (हि.स.)।** अपनी मांगों को लेकर विकसित की जा रही वेव सिटी एवं सन सिटी से प्रभावित किसानों ने बुधवार को जीडीए का घेराव किया। इस दौरान किसानों ने जीडीए गेट पर धरना दिया और ट्रैक्टर व अन्य वाहनों को आड़ा तिरछा खड़ा कर दिया। इस दौरान बस अड्डा चौराहे पर खासा जाम लग गया। किसानों ने इस दौरान जीडीए के खिलाफ नारेबाजी की। किसानों ने जीडीए अधिकारियों पर समझौते का पालन न किए जाने का आरोप लगाया। ये भी आरोप लगाया कि बिल्डरों के द्वारा बाउंसरों की मदद से किसानों की जमीन पर कब्जा किया जा रहा है। किसानों ने मांग की कि किसानों के साथ बगैर सहमति के बिल्डरों की संशोधित डीपीआर मंजूर न की जाए। विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे भारतीय किसान संगठन के जिलाध्यक्ष लोकेश नागर ने कहा कि किसानों के द्वारा लगातार अपने मुद्दे उठाए जा रहे है। उन्होंने कहा कि साल 2014 के दौरान जो जीडीए अधिकारियों के साथ समझौता हुआ था,उस पर पालन नहीं किया जा रहा है। किसानों को अभी तक न तो उचित मुआवजा दिया गया है और न ही विकसित प्लाट ही उपलब्ध कराए गए हैं।

# काशी के डोमराज को मिला रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा का निमंत्रण

**वाराणसी, (हि.स.)।** श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास ने काशी के डोमराज ओम चौधरी को रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का न्यौता भेजा है। समारोह में न्यास ने डोमराज को आदर के साथ बुलाया है। डोमराज के मीरघाट स्थित आवास पर अखिल भारतीय सन्त समिति के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारियों के साथ डोमराज के मीरघाट स्थित आवास पर जाएंगे और खुद निमंत्रण देंगे। गौरतलब हो कि डोमराज ओम चौधरी के दिवंगत पिता स्वर्गीय जगदीश चौधरी को भारत सरकार ने मरणोपरान्त पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया था। डोमराजा के तौर पर जगदीश चौधरी का काशी और आसपास के क्षेत्रों में काफी सम्मान रहा है। जगदीश चौधरी 26 अप्रैल 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बतौर सांसद चुनाव के लिए नामांकन के दौरान प्रस्तावक भी रह चुके हैं। प्रस्तावक बनने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने भी उनका हालचाल लिया था। वहीं, 26 अगस्त 2020 को उनके निधन पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शोक भी व्यक्त किया था।

# रोडवेज बसों पर कड़ाके की ठंड और शीतलहर का असर, डिपो पर छाया सन्नाटा

**- मुरादाबाद डिपो और पीतलनगरी डिपो पर सुबह से लेकर रात्रि तक यात्रियों का है टोटा**

**मुरादाबाद, (हि.स.)।** कड़ाके की ठंड और शीतलहर का असर मुरादाबाद मंडल में रोडवेज बसों पर भी पड़ रहा है। मुरादाबाद मंडल के मंडल मुख्यालय के मुरादाबाद डिपो और पीतलनगरी डिपो पर बुधवार सुबह से लेकर रात्रि तक यात्रियों का टोटा पड़ रहा है। बुधवार की सुबह मुरादाबाद डिपो से दिल्ली और देहरादून रूट के लिए यात्री तो आए लेकिन लखनऊ, बरेली, बिजनौर और संभल रूट की बसें खाली हैं। रामनगर और हलद्वानी रूट की बसें भी मुरादाबाद डिपो पर खाली है। परिवहन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि हर वर्ष शीत ऋतु में मौसम की मार का असर परिवहन विभाग पर अच्छा खासा होता है। रोडवेज में अनुबंधित बसों में यात्री सुविधा की कमी भी इस स्थिति का बड़ा कारण मानी जा रही है। मुरादाबाद डिपो से मंगलवार की आधी रात तक कुल 2723 महिला यात्रियों ने बस की सेवा ली, जिसमें वरिष्ठ महिला यात्री 930 रहीं। सामान्य महिला यात्रियों की संख्या 1793 दर्ज की गयी जबकि, पुरुष यात्री 10867 रहे। मौसम की मार की वजह से वरिष्ठ पुरुष यात्री मात्र 1260 ही स्टेशन आए। डिपो से कुल सामान्य 9607 पुरुष यात्री बसों की यात्रा किए। 24 घंटे में कुल 13590 यात्रियों ने बस की सेवा ली। वहीं गर्मी के मौसम में दिल्ली और देहरादून रूट पर रोजाना इतने यात्री निकलते हैं, बसों की संख्या में या बसों के फेरों में बढ़ोतरी की आवश्यकता होती है।

# मार्ग दुर्घटना में भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष की मौत

**औरैया, (हि.स.)।** सदर कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत नेशनल हाईवे पर दो वाहनों की आमने-सामने भिड़ंत में एक युवक की दर्दनाक मौत हो गई। घटना की सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव को गाड़ी से खींचकर निकाला तथा पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक भारतीय जनता पार्टी व्यापार प्रकोष्ठ का जिला अध्यक्ष भी था। कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला सत्तेस्वर निवासी अंकुर पोरवाल पुत्र अरविंद पोरवाल बुधवार को अपनी कार लेकर हाइवे की ओर कहीं जा रहा था। जैसे ही नेशनल हाईवे पर जालौन ओवर ब्रिज पर पहुंचा तभी सामने से आ रहे तेज रफ्तार कंटेनर से उसकी कार टकरा गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और युवक उसमें फंस गया। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। राहगीरों ने इसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी। सूचना पाकर पहुंचे सदर कोतवाल पंकज मिश्रा एवं सीओ सिटी महेंद्र प्रताप ने राहगीरों के माध्यम से गाड़ी में फंसे शव को बाहर निकलवाया तथा मामले की जानकारी मृतक के परिजनों को दी। सूचना पाते ही मृतक के परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक अंकुर पोरवाल भारतीय जनता पार्टी व्यापार प्रकोष्ठ का जिला अध्यक्ष भी था।

# कांग्रेस मुक्त भारत की परिकल्पना के सबसे बड़े सूत्रधार हैं राहुल गांधी : अमर बाउरी

**जस्टिस एलपीएन शाहदेव की पुण्यतिथि पर नेता प्रतिपक्ष ने श्रद्धांजलि दी**

**रांची, (हि.स.)।** नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने सूचना भवन कांके के पास जस्टिस एलपीएन शाहदेव की पुण्यतिथि पर बुधवार को उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद कहा कि वास्तव में कांग्रेस की यह यात्रा न्याय यात्रा नहीं, बल्कि अन्याय यात्रा है। राहुल गांधी ने जब पिछली बार भारत जोड़ो यात्रा की थी तो उसका लगभग 90 प्रतिशत का लाभ भाजपा को हुआ। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कांग्रेस मुक्त भारत की परिकल्पना के सबसे बड़े सूत्रधार राहुल गांधी ही हैं। असल में कांग्रेस की न्याय यात्रा अपने अन्याय को छिपाने के लिए है। यदि कांग्रेस चाहती तो वर्षों पहले झारखंड राज्य अलग हो गया होता लेकिन कांग्रेस ने ऐसा होने नहीं दिया। कांग्रेस अपने अन्याय, करतूतों को छिपाने के लिए ही यह न्याय यात्रा कर रही है। बाउरी ने झारखंड के पुत्र और झारखंड आंदोलन में अपनी अग्रिम भूमिका निभाने वाले जस्टिस एलपीएन शाहदेव की पुण्यतिथि पर उन्हें याद किया। उन्होंने कहा कि जस्टिस एलपीएन शाहदेव झारखंड आंदोलन को बौद्धिक पहचान देने और बौद्धिक रूप से जनमानस को प्यार करने वालों में से थे। माटी के पुत्र का इतने बड़े ओहदे तक जाना हम सबको प्रोत्साहित करता है। इस मौके पर विधायक सीपी सिंह, प्रदेश भाजपा प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव समेत अन्य भी उपस्थित थे।

# रांची उपायुक्त ने मतदाता जागरुकता वैन को झंडी दिखाकर किया रवाना

**रांची, (हि.स.)।** जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने बुधवार को मोरहाबादी स्थित बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम से मतदाता जागरुकता कार्यक्रम के तहत वैन को झंडी दिखाकर रवाना किया। मौके पर उपायुक्त ने कहा कि युवा मतदाता चुनाव में अपनी सहभागिता निभाए इसके लिए उन्हें विशेष रूप से जागरूक किया जाना चाहिए ताकि वे इस लोकतंत्र के महापर्व में वोट देकर एक जिम्मेदार नागरिक बनें। इसलिए जागरुकता रथ रवाना किया गया है। इसका उद्देश्य है, जो युवा मतदाता पहली बार मतदान करेंगे वे इस मतदान की पूरी प्रक्रिया से रूबरू हो सकेंगे। क्योंकि, कई युवा मतदाताओं को जानकारी नहीं है कि कैसे मतदान करना है। यह रथ उनके लिए फायदेमंद रहेगा। उपायुक्त ने खासकर युवा मतदाताओं से अपील किया कि वे जागरुकता रथ का लाभ लें। साथ ही सभी मतदाताओं से मतदान करने की अपील की। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि सभी मतदाता सूची में नाम जरूर दर्ज कराए और बूथ की जानकारी रखें। साथ ही कहा कि बुधवार से 19 फरवरी तक चलन्त वैन सेक्टर वार प्रत्येक मतदान केंद्र में जाएगा। मतदाताओं को वोट डालने की पूरी प्रक्रिया से अवगत करायेगा। इसमें वोट (डमी) भी डाल सकते है। इस जागरुकता रथ के साथ पुलिस बल, मजिस्ट्रेट और कर्मियों की प्रतिनियुक्ति की गई है। साथ ही बीएलओ, सुपरवाइजर, सेक्टर पदाधिकारी और सेक्टर पुलिस पदाधिकारी को ईवीएम प्रदर्शन के दौरान मतदान केंद्र में उपस्थित रहेंगे। इस मौके पर कई पदाधिकारी मौजूद थे।

# रांची में उत्पाद विभाग के हाजत में युवक की खुदकुशी के विरोध में सड़क जाम समाप्त

**रांची, (हि.स.)।** उत्पाद भवन के हाजत में युवक की खुदकुशी के बाद उसके परिजनों और आक्रोशित लोगों ने बुधवार को लालपुर चौक पर जाम लगा दिया। सूचना पर पहुंचे सिटी डीएसपी दीपक कुमार सहित अन्य पुलिसकर्मियों ने लोगों को समझा-बुझाकर जाम हटवाया। इस दौरान दो घंटे तक आवागमन बाधित रहा। वाहनों की लंबी कतार लग गई। ट्रैफिक पुलिस और स्थानीय पुलिस ने वाहनों को दूसरे रास्ते से होकर निकलवाया। डीएसपी ने बताया कि लोगों को समझा-बुझाकर सड़क से जाम हटा दिया गया है। इससे पहले सात जनवरी को भी नितेश विश्वकर्मा उर्फ नितेश लोहरा के शव के साथ परिजनों ने लालपुर चौक को जाम कर दिया था। परिजन प्रशासन और सरकार से न्याय की मांग कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि उत्पाद विभाग की टीम ने छह जनवरी को नितेश लोहरा सहित पांच लोगों को गिरफ्तार किया था। चार लोगों से फाइन लेने के बाद उनको छोड़ दिया गया लेकिन नितेश को उत्पाद भवन के हाजत में बंद कर दिया गया था। नितेश ने छह जनवरी की देर शाम उत्पाद भवन के हाजत के बाथरूम में खुदकुशी कर ली थी। दूसरी ओर उत्पाद विभाग ने इस मामले में तीन उत्पाद सब इंस्पेक्टर और एक सिपाही को लाइन हाजिर कर दिया है। इनमें उत्पाद सब-इंस्पेक्टर ललित सोरेन, पंकज कुमार, रूपेश कुमार और उत्पाद सिपाही रवि कुमार हैं।

# नवादा में सांसद चंदन सिंह ने आधा दर्जन योजनाओं का उद्घाटन कर किया जनता के हवाले

**नवादा, (हि. स.)।** नवादा के सांसद चंदन सिंह ने बुधवार को नवादा जिले के रजौली प्रखंड में अपने सांसद मद से निर्मित आधा दर्जन योजनाओं का उद्घाटन कर जनता के हवाले किया। उन्होंने नरहट के स्व विजय सिंह शोकाकुल परिवार से भी मिलकर उन्हें धीरज बंधाया। साथ ही हर संभव सहायता करने की भी बात कही। स-ांसद चंदन सिंह रजौली प्रखंड के बिजवन गांव पहुंचकर नागरिकों के बीच अपने सांसद मद से निर्मित पीसीसी ढलाई का उद्घाटन कर जनता के हवाले किया। वहीं करमा खुर्द गांव में निर्मित पीसीसी ढलाई का उद्घाटन कर जनता को समर्पित किया। सांसद चंदन सिंह ने रजौली प्रखंड के कई इलाकों में घूम कर जरूरत की योजनाओं को भी विकास सूची में समाहित करने की बात कही। सांसद ने आधा दर्जन गांव का दौरा कर जन समस्याएं सुनी तथा जिला प्रशासन से बात कर उसका निदान कराया। उन्होंने रजौली प्रखंड के दुपट्टा अंदर वारी गांव में भी सांसद मत से निर्मित पीसीसी दलाई सड़क का उद्घाटन कर जनता के हवाले किया। सांसद ने मध्य विद्यालय धमौल लैंगुरा का औचक निरीक्षण कर शिक्षकों को बेहतर तरीके से बच्चों को पढ़ाई संपन्न करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने मध्यान भोजन का भी निरीक्षण किया। इस अवसर पर सासद के साथ उनके पार्टी सहित एनडीए के कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे। जिन्होंने उनकी अगुवाई में नरेंद्र मोदी को एक बार फिर भारत के प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प लिया। उपस्थित एनडीए कार्यकताओं ने सांसद चंदन सिंह के व्यवहार कुशलता, विनम्रता तथा ईमानदारी की चर्चा करते हुए कहा कि यह नवादा का सौभाग्य है कि नरेंद्र मोदी के हनुमकन के रूप में इस तरह के प्रतिनिधि कम कर रहे हैं।

# डॉ मिश्रा ने राज्यपाल से मुलाकात कर की नवादा में एलएलएम की पढ़ाई शुरू कराने की मांग

**नवादा (हि. स.)।** नवादा विधि महाविद्यालय नवादा के प्राचार्य तथा मगध विश्वविद्यालय विधि संकाय के डीन डॉक्टर डी एन मिश्रा ने बिहार के राज्यपाल से बुधवार को मिलकर नवादा विधि महाविद्यालय में एलएलएम की पढ़ाई शुरू कराने की मांग की है, जिस पर राज्यपाल ने शीघ्र पढ़ाई शुरू कराने का आश्वासन दिया है। डॉ मिश्रा ने मगध विश्वविद्यालय में भी ऑयल एल एलएम की पढ़ाई शुरू करने संबंधी आवेदन दिए हैं ।जिस पर भी जल्द कार्रवाई करने के की बात राज्यपाल ने कहा है। नए पुस्तकालय का उद्घाटन के साथीही नवादा विधि महाविद्यालय के बने द्वारा का भी उद्घाटन करने का आग्रह राजपाल से किया गया। जिस पर उन्होंने स्वीकृति दी है। उन्होंने कहा है कि जल्दही इसकी तिथि निर्धारित की जाएगी। नवादा विधि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि शैक्षणिक व्यवस्था को बेहतर बनाने तथा कानून की पढ़ाई में उच्च शिक्षा दिलाने के उद्देश्य राजपाल से मुलाकात की गई थी। ताकि नवादा विधि महाविद्यालय में जल्दही एल एलएम की पढ़ाई शुरू हो जाए। इसकी स्वीकृति पूर्व में भी मगध विश्वविद्यालय के कुलपति दे चुके हैं। राज्यपाल ने कहा कि निश्चित तौर पर कानून की पढ़ाई बेहतर तरीके से की जानी चाहिए। कानून की उच्च शिक्षा के लिए लोगों को बाहर नहीं जाना पड़े। इसके लिए जरूरी है कि नवादा तथा मगध विश्वविद्यालय में एलएलएम की पढ़ाई हो। उन्होंने कहा कि जल्दही कुलपति से विचार विमर्श कर इसकी स्वीकृति प्रदान कर दी जाएगी। इस अवसर पर विधि महाविद्यालय के संतोष कुमार सहित कई लोग उपस्थित थे। राजपाल ने डॉक्टर मिश्रा से 1 घंटे तक शैक्षणिक व्यवस्था पर बातचीत करते हुए शैक्षणिक व्यवस्था को बेहतर बनाने पर भी विचार विमर्श किया।

# जनसमस्याओं का निपटारा ही हमारी प्राथमिकता : चन्दन

**सांसद चंदन ने नवादा परिसदन में निपटाए 600 मामले**

**नवादा, (हि. स.)।** नवादा संसदीय क्षेत्र के सांसद चंदन सिंह ने बुधवार को नवादा परिसदन में जनता दरबार का आयोजन कर सैकड़ों नागरिकों के समस्याओं का निदान कराया। सांसद 600 मामले का निपटारा किया। जिला स्तर के अधिकारियों से नागरिक समस्याओं के लिए संवेदनशील बनकर काम करने का भी आग्रह किया। नवादा जिले के 5 विधानसभा क्षेत्रों के साथही शेखपुरा जिले के बरबीघा विधानसभा क्षेत्रों के फरियादियों ने सांसद से अपनी फरियाद सुनायी। जिसका सांसद ने त्वरित निष्पादन किया। सांसद के व्यवहार व बेहतर कार्य पद्धति से फरियादी काफी खुश नजर आए। उन्होंने कहा कि जनता ने उन्हें असीम प्यार व सम्मान दिया है। जिसके लिए हम जनता की समस्याओं को हर कीमत पर निदान के लिए सतत प्रयास करते रहेंगे। सांसद के पास परिसदन में नवादा जिले के 14 प्रखंडों के साथ ही बरबीघा के लोगों ने भी पहुंचकर अपनी समस्याएं सुनाई। सांसद ने बारी-बारी से सभी फरियादियों की समस्याओं को निपटारे के लिए संबंधित अधिकारियों को फोन कर उन्हें त्वरित कार्रवाई करने का भी आग्रह किया। सांसद ने कहा कि अगर किसी भी नागरिक को कोई समस्या हो तो निश्चित तौर पर वह संपर्क करें। समस्या निदान की दिशा में सार्थक पहल की जाएगी। उन्होंने कहा कि अधिकारियों के अलावा जो भी समस्याएं जटिल होगी। उसके लिए मुख्यमंत्री तथा केंद्रीय सरकार से बात कर निपटारे कराए जाएंगे। कई सिंचाई परियोजनाओं को सरकारी स्तर पर पास कराया गया है। जो नवादा संसदीय क्षेत्र के नागरिकों के लिए वरदान साबित होगा। इस अवसर पर एनडीए कार्यकताओं के साथ ही बड़ी संख्या में राष्ट्रीय लोजपा के कार्यकर्ता के साथ ही एनडीए कार्यकर्ता भी मौजूद थे। सांसद ने सभी कार्यकताओं को पार्टी की मजबूती के लिए भी जमीनी रूप से काम करने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा एक मजबूत दल ही कार्यकताओं के सहयोग से बेहतर सेवा कर सकती है। उन्होंने एनडीए से जुड़े कार्यकताओं को भी सहभागी बनने का आग्रह किया है। सांसद ने कहा है कि नवादा संसदीय क्षेत्र के नागरिको ने जिस प्यार सम्मान के साथ मुझे सांसद बनाया है। निश्चित तौर पर उनके भाई व बेटे बनकर सदा उनकी सेवा करते रहेंगे । हमारी ओर से कभी भी सेवा में कोई कमी नहीं होगी। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश को मजबूती प्रदान करने का भी आह्वान किया है। सांसद ने योजनाओं के क्रियान्वयन में देर करने वाले अधिकारियों के विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी।

संपादकीया

# आर्थिक तर्कों की साझी विरासत

पहाड़ी राज्यों के संकल्प देश के राजनीतिक महाभारत में राष्ट्रीय नहीं रहते, यह संघर्ष हर मुख्यमंत्री को हिमाचल की वकालत के साथ करना पड़ा। इसी परिप्रेक्ष्य में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू का दौरा दिल्ली से अपने अधिकारों के आवरण के तर्क साझा कर रहा है। प्रदेश पहली बार कोशिशों के नए मुहाने पर अपने अधिकारों के आवरण के साथ आत्मनिर्भर होने की दरगाह खोज रहा है। इस सफर में हमेशा केंद्र का एक पक्ष और उसकी संवेदना का रुख सहायक हुआ है, लेकिन वित्तायोगों के चश्मे बदलते ही मुफलिसी का रोग बढ़ गया और केंद्र के तराजू ने हमें राजनीतिक तौर पर आंकना शुरू कर दिया। कभी फौज की वर्दी पहनकर हिमाचली युवा आगे हो जाता था, लेकिन अब राज्यों का कोटा इस कद्र निर्धारित कर दिया कि अवसर कम हो गए। हमारे सन्नाटे हमीं से पूछ रहे, पड़ोसी के मोहल्ले में शोर कैसा है। यानी हमें चुप कराकर केंद्र ने मैदान से पूछा यह बाढ़ का आलम क्या है। हमें पौंग जैसे जलाशयों में डुबोकर राजस्थान से पूछा कि जवाहर नहर में पानी की गति क्या है। पंजाब पुनर्गठन से मिली पर्वतीय हवा से कोई संवाद नहीं, मगर हरियाणा व पंजाब से ही पूछा तुम्हारी इल्तिजा क्या है। अब अगर हिमाचल की जमीन का सीना चीरकर निकल रहीं विद्युत परियोजनाएं न्यायोचित रॉयल्टी या जायज वित्तीय अधिकार नहीं दे रहीं, तो क्या इनकी खुशहाली के आलम में प्रदेश की संवेदना बर्फ बनी रहे। राज्य की विद्युत नीति का आत्मसम्मान व यथार्थ अगर केंद्र से अधिकार मांग रहा है, तो यह पहाड़ को ढोने जैसा तर्क क्यों समझा जा रहा। इसलिए केंद्रीय ऊर्जा मंत्री आरके सिंह के साथ मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू का संवाद केवल गुजारिश नहीं, केंद्र व राज्यों के बीच संबंधों का सेतु है। बीबीएमबी की जो परियोजनाएं पानी के साथ बिजली के अधिकारों पर कुंडली मार कर बैठी हैं, वे चालीस साल के बाद प्रदेश को क्यों न हस्तांतरित हों। शानन विद्युत परियोजना अपनी एक सदी पंजाब को दे देने के बाद भी हिमाचल के भविष्य की सदी को रोक नहीं सकती, लिहाजा लीज खत्म होने के साथ इसका हस्तांतरण अपने साथ रोजाना लगभग अस्सी लाख की आमदनी भी हिमाचल को सौंपेगा। इसी तरह प्रदेश में एसजेवीएन तथा एनएचपीसी द्वारा संचालित विद्युत परियोजनाएं रायल्टी का भुगतान समय सीमा के भीतर करें और उत्तराखंड की तर्ज पर वाटर सैस के अधिकार की मान्यता मिले तो हिमाचल अपने आर्थिक आदर्श कायम कर पाएगा। हिमाचल को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए पर्वतीय अंचल की विशालता और सीमा को समझना होगा। इसी आधार पर हिमाचली परियोजनाओं का वित्त पोषण 90:10 की दर में हुआ, लेकिन अब केंद्र पलटी मार रहा है। स्मार्ट सिटी परियोजनाओं की लागत में अगर इस आधार पर धर्मशाला-शिमला की परियोजनाएं चलतीं, तो अब तक इनके मुकाम तय हो चुके होते। इसी तरह रेलवे परियोजनाओं को भी क्षमता और वाइबिलटी के आधार के बजाय पूर्वोत्तर या जम्मू-कश्मीर की तर्ज पर हिमाचल से जोड़ा जाता, तो अब तक सीमेंट व सेब ढुलाई के अलावा धार्मिक पर्यटन तथा उपभोक्ता वस्तुओं की ढुलाई सस्ती दरों पर हो जाती। कुछ इसी अंदाज में अगर अयोध्या के हवाई अड्डे को राष्ट्रीय राजनीति अंतरराष्ट्रीय बना रही है, तो हिमाचल के प्रसिद्ध मंदिरों से जुड़े कांगड़ा एयरपोर्ट के विस्तार पर केंद्र को उदार होना चाहिए। चार धाम सड़क परियोजना का मकसद देश की आस्था का सम्मान है, तो चिंतपूर्णी, ज्वालाजी, दियोटसिद्ध, कांगड़ा, चामुंडा व बैजनाथ के धार्मिक व पौराणिक इतिहास को राष्ट्रीय परियोजना की प्राथमिकता देते हुए कांगड़ा हवाई अड्डे का विस्तार तथा ज्वालाजी मैया के देवस्थल तक ऊना रेल का रुख मोड़ देना चाहिए। इसी संदर्भ में हिमाचल के मुख्यमंत्री की केंद्रीय उड्डयन एवं नागरिक विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य से मुलाकात का तर्क संजीदा है। हिमाचल में सुक्खू सरकार ने आते ही पिंजरे में बंद कांगड़ा एयरपोर्ट विस्तार की संभावना को पर्यटन की पलकों पर बिछाया है। सरकार ने अपनी ओर से इतना प्रबंध कर दिया है कि बड़े जहाज उड़ाने तथा मौजूदा हवाई पट्टी की लंबाई को 1376 मीटर से 3010 मीटर तक पहुंचाने के लिए आवश्यक भूमि का अधिग्रहण हो जाए। अगले दो महीनों में बड़े हवाई अड्डे के लिए भूमि उपलब्ध होगी, तो आगे भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को इसके निर्माण की आवश्यक कार्रवाई करनी है। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री से अपनी यही वचनबद्धता दोहराई है जो पर्वतीय राज्य की कनेक्टिविटी के लिए एक अनिवार्यता सरीखी है।

> प्रदेश पहली बार कोशिशों के नए मुहाने पर अपने अधिकारों के आवरण के साथ आत्मनिर्भर होने की दरगाह खोज रहा है। इस सफर में हमेशा केंद्र का एक पक्ष और उसकी संवेदना का रुख सहायक हुआ है, लेकिन वित्तायोगों के चश्मे बदलते ही मुफलिसी का रोग बढ़ गया और केंद्र के तराजू ने हमें राजनीतिक तौर पर आंकना शुरू कर दिया। कभी फौज की वर्दी पहनकर हिमाचली युवा आगे हो जाता था, लेकिन अब राज्यों का कोटा इस कद्र निर्धारित कर दिया कि अवसर कम हो गए। हमारे सन्नाटे हमीं से पूछ रहे, पड़ोसी के मोहल्ले में शोर कैसा है। यानी हमें चुप कराकर केंद्र ने मैदान से पूछा यह बाढ़ का आलम क्या है। हमें पौंग जैसे जलाशयों में डुबोकर राजस्थान से पूछा कि जवाहर नहर में पानी की गति क्या है। पंजाब पुनर्गठन से मिली पर्वतीय हवा से कोई संवाद नहीं, मगर हरियाणा व पंजाब से ही पूछा तुम्हारी इल्तिजा क्या है। अब अगर हिमाचल की जमीन का सीना चीरकर निकल रहीं विद्युत परियोजनाएं न्यायोचित रॉयल्टी या जायज वित्तीय अधिकार नहीं दे रहीं, तो क्या इनकी खुशहाली के आलम में प्रदेश की संवेदना बर्फ बनी रहे।

## धर्म और आत्म-बोध के मार्ग पर महत्वपूर्ण, समयातीत सीखों को अपने में समाहित किए हुए है

# श्रीमद्भगवद गीता के ज्ञान को समझें छात्र

डा. वरिंदर भाटिया

> भारत के सबसे प्रामाणिक ग्रंथों में से एक श्रीमद्भगवद गीता को दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में वैकल्पिक या नियमित पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जा रहा है। कई स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों ने गीता को अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है। भारत में शीर्ष रैंकिंग वाले पेशेवर संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएम और बिट्स-पिलानी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और विदेशों में ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड जैसे विश्वविद्यालय और सेटन हॉल सहित कई अन्य लोग मानविकी और सामाजिक विज्ञान में अन्य पाठ्यक्रमों के अलावा गीता पढ़ाते रहे हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के तहत एक कॉलेज ने फैकल्टी सदस्यों और शोधार्थियों के लिए 'श्रीमद्भगवद गीता : ज्ञानोदय और प्रासंगिकता' पर एक सर्टिफिकेट/रिफ्रेशर कोर्स शुरू किया है। दि टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, रामानुजन कॉलेज में भगवद गीता की शिक्षाओं पर आधारित 20 दिन का सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम 22 दिसंबर से शुरू हुआ है और 10 जनवरी 2024 तक चलेगा। इसमें 18 व्याख्यान सहित 20 सत्र होंगे। कॉलेज द्वारा जारी एक कॉन्सेप्ट नोट के अनुसार, कहा गया है, 'श्रीमद्भगवद गीता जीवन के लिए एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक है जो कत्त्रव्य, धर्म और आत्म-बोध के मार्ग पर महत्वपूर्ण, समयातीत सीखों को अपने में समाहित किए हुए है। इससे जुडक़र प्रतिभागी न केवल अपनी आध्यात्मिक समझ को समृद्ध करेंगे बल्कि भारत की सांस्कृतिक और दार्शनिक विरासत से भी परिचित होंगे।' भारत के सबसे प्रामाणिक ग्रंथों में से एक श्रीमद्भगवद गीता को दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में वैकल्पिक या नियमित पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जा रहा है। कई स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों ने गीता को अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है। भारत में शीर्ष रैंकिंग वाले पेशेवर संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएम और बिट्स-पिलानी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और विदेशों में ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड जैसे विश्वविद्यालय और सेटन हॉल सहित कई अन्य लोग मानविकी और सामाजिक विज्ञान में अन्य पाठ्यक्रमों के अलावा गीता पढ़ाते रहे हैं। वे अधिकतर मानते हैं कि यह पाठ्यक्रम उनके छात्रों के व्यक्तित्व विकास और पेशेवर क्षमता में मदद करता है। गीता मूल रूप से श्रीकृष्ण, जो ईश्वर के अवतार हैं और अर्जुन, जो महाभारत के युद्ध में धर्मी पक्ष के प्रमुख योद्धा हैं, के बीच एक संवाद है। धर्मग्रंथ की आवश्यक शिक्षाएं व्यक्तिगत इच्छाओं और हमारे कार्यों या कार्य के परिणामों के आंतरिक त्याग का प्रचार करती हैं। इस तरह का त्याग समभाव की ओर ले जाता है, ईश्वर के प्रति हमारे पूर्ण समर्पण को पूरा करता है और विभाजित अहंकार से मुक्ति का समर्थन करता है, जो हमें एकता लाता है। बीसवीं सदी के प्रमुख योगियों में से एक, श्री अरबिंदो इसे इस प्रकार कहते हैं : 'गीता हमें कार्यों और प्रकृति की पूर्ण ऊर्जाओं के बीच भी आत्मा की स्वतंत्रता का वादा करती है, यदि हम अपने संपूर्ण अस्तित्व की



अधीनता को स्वीकार करते हैं जो अलग करने और सीमित करने वाले अहंकार से अधिक है।' भगवद् गीता का मर्म महत्वपूर्ण है। इसकी व्याख्या अनेक प्रकार से की जाती है। मेरे निजी विचार के अनुसार, एक महाभारत का युद्ध हर मनुष्य को अपने जीवन में लडऩा है। जब तक नहीं लड़ोगे तब तक मुक्त नहीं होंगे। परंतु यह युद्ध लडऩा कहां है? तो श्रीकृष्ण ने 13वें अध्याय में बताया कि यह शरीर ही वह क्षेत्र है जहां यह युद्ध होता है। अब प्रश्न है कि शरीर में किससे युद्ध करना है? तो शरीर में दो सेनाएं हैं। एक पांडव अर्थात पुण्यमयी और एक कौरव अर्थात पापी। इनमें प्रत्येक योद्धा उपस्थित है। और वो इस प्रकार है : अभिमन्यु अर्थात अभय मन। वह मन जिसमें अब भय नहीं हो। जो भय से मुक्त है। अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र है। अर्जुन से उत्पन्न हुआ है। अर्जुन का अर्थ है- अनुराग। मनुष्य का इष्ट के प्रति राग ही अनुराग कहलाता है। उसी अनुराग से अभिमन्यु अर्थात अभय मन होता है। ध्यान रहे कि मन तो पहले ही है, परंतु पहले उसमें भय था। परंतु अनुराग ने उसे अभय बना दिया। जब भक्ति करते हैं तो मन भय से परे कर दिया जाता है। अब भय तो उस मन में है ही नहीं। उधर देखें तो भीष्म का अर्थ है- भ्रम। यहां बड़ा भयंकर योद्धा है। समस्त कौरवों का सेनापति है। यह भ्रम ही है। मनुष्य को जब तक इस संसार के मायाजाल का पता नहीं लगता तब तक भ्रम बड़ी तबाही करता है। परंतु अनुराग अर्थात अर्जुन उसे अपने धनुष से बाणों की शैय्या पर लिटा देता है। धनुष का अर्थ है- ध्यान। अनुरागी व्यक्ति ध्यान के द्वारा अपने भ्रम को हटा देता है। परंतु उसके बाद सेनापति होते हैं द्रोण। द्रोण का अर्थ है- द्वैत। जब तक यह लगता है कि मैं ईश्वर से अलग हूं, उसे ही द्वैत कहते हैं। यह बड़ा षड्यंत्रकारी है। अलग-अलग व्यूह बनाता है। चक्रव्यूह भी बनाता है। और इसके चक्रव्यूह में अभिमन्यु अर्थात अभय मन फंस जाता है। और मारा जाता है। वर्तमान में हमारा मन भय में रहता है। जब यह अभय हो जाएगा तो बड़ा जबरदस्त हो जाएगा। परंतु द्वैत इसे फंसा लेगा। द्वैत खत्म कर देगा। द्रोण का पुत्र है अश्वत्थामा। अर्थात- आसक्ति। यह अंत तक रहता है। अश्वत्थामा अर्थात आसक्ति अमर है। किसी वस्तु में लगाव होना ही आसक्ति है। इसे मारा नहीं जा सकता, परंतु निष्क्रिय किया जाता है। इधर पांडवों में पांच पांडव हैं जिनके मतलब कुछ इस प्रकार हैं : पांडु पुत्र पांच हैं। पांडु का अर्थ है- पुण्य। पांडु की पत्नी कुंती है। कुंती का अर्थ है : कत्त्रव्य। जब कुंती (कत्त्रव्य) का पांडु (पुण्य) के साथ सम्बन्ध होता है तो युधिष्ठिर रूपी धर्म, भीम यानी भाव, अर्जुन यानी अनुराग, नकुल यानी नियम और सहदेव यानी सत्संग, इन सब का जन्म होता है। उधर धृतराष्ट्र अर्थात अज्ञान से दुर्योधन अर्थत मोह उत्पन्न होता है। यह मोह ही सबका राजा है। मनुष्य के अंदर होने वाले युद्ध में यही बड़ा प्रबल है। परंतु जब अनुराग अर्थात अर्जुन मनुष्य में प्रकट होता है तो स्वयं श्री कृष्ण अंतरात्मा से उसका मार्गदर्शन करते हैं। उसे बार-बार हृदय में होने वाले युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं। दुर्योधन अर्थात मोह को अंत में भीम अर्थात भाव ही खत्म करता है। यही गीता समझाना चाहती है, इसीलिए तो गीता हम सबको मिली। वरना अर्जुन तक ही रह जाती। याद रहे कि भगवद् गीता का अर्थ मन के स्तर पर है। यह एक सार्वभौमिक ग्रंथ है। इसका स्थान धर्म विशेष से ऊपर है, यह हर समय और स्थान पर प्रत्येक मानव जीवन के लिए प्रासंगिक है। भगवान श्रीकृष्ण का संदेश न केवल हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का मार्गदर्शन करता है, बल्कि हमारे आध्यात्मिक उत्थान और हमारे अस्तित्व के अंतिम लक्ष्य, ईश्वर से मिलन की ओर भी ले जाता है। कॉलेज छात्रों को और हमारे युवा अध्यापकों को और यहां तक कि नौकरशाहों, राजनेताओं को, ऐच्छिक तौर पर श्रीमद भगवद् गीता के भाव का ज्ञान विशेष रूप से उपयोगी होगा, क्योंकि इनके सामने उनका पूरा जीवन पड़ा है। वे इस बहुमूल्य ज्ञान को आत्मसात कर कामयाबी के लिए जरूरी लीडरशिप के गुण पैदा कर सकते हैं और इसकी आध्यात्मिक शक्ति और प्रकाश से समृद्ध होकर अपना जीवन जी सकते हैं।

दृष्टि कोण

# चीन की शह पर भारत विरोधी रहा है मालदीव का रुख

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लक्षद्वीप दौरे पर मालदीव के तीन मंत्रियों की आपत्तिजनक टिप्पणी के बाद दोनों देशों के बीच पहले से ही खराब चल रहे रिश्ते को बड़ा झटका लगा है। सोशल मीडिया पर बॉयकॉट मालदीव ट्रेंड कर रहा है। मालदीव के विपक्षी नेताओं ने भी उन टिप्पणियों की जमकर आलोचना की है। हालांकि मालदीव सरकार नुकसान की भरपाई करने में जुट गई है और टिप्पणी करने वाले मंत्रियों मरियम शिउना, मालशा शरीफ और महजूम माजिद को निलंबित कर दिया है, लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि मौजूदा मालदीव सरकार का रुख भारत विरोधी रहा है, जिसे चीन से समर्थन मिलता है। बीजिंग ने अभी मालदीव के 1,200 द्वीपों में 17 को पट्टे पर लिया हुआ है, जो पूरे मालदीव में फैले हुए हैं और चीन की तीन सबसे बड़ी परियोजनाओं की लागत कुल मिलाकर 1.5 अरब डॉलर है, जो मालदीव की जीडीपी के 40 फीसदी से ज्यादा है। मालदीव में चीन का निवेश 97 करोड़ डॉलर को पार कर गया है, जिसे चुकाना मालदीव जैसे गरीब देश की क्षमता से बाहर है। फिर भी मौजूदा मुइज्जू सरकार भारत के प्रभाव को घटाने और चीन के प्रभाव को बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। मालदीव में चीन के प्रभाव को कम करने के लिए भारत ने 50 करोड़ डॉलर की सबसे बड़ी नागरिक बुनियादी ढांचा परियोजना की घोषणा करने का तार्किक कदम उठाया, जिसके तहत 6.7 किलोमीटर लंबा पुल और सड़क बनेगी, जो



मालदीव की राजधानी माले को तीन नजदीकी द्वीपों से जोड़ेगी। इस तरह से भारत लंबाई, पैमाने और लागत के मामले में 20 करोड़ डॉलर की लागत से बने मालदीव-चीन मैत्री पुल को पीछे छोड़ देगा। लेकिन चीन के प्रति मुइज्जू के झुकाव को देखते हुए भारत का चिंतित होना स्वाभाविक है, जिन्होंने अभी हिंद महासागार द्वीप समूह में तैनात भारतीय सैनिकों को लौटाने का फैसला किया है। यह मुख्यतः मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह की 'भारत पहले' की नीति को पलटने के उद्देश्य से उठाया गया कदम है। इसके अलावा मुइज्जू सरकार ने एक और भारत-विरोधी निर्णय के तहत हाइड्रोग्राफी (जल सर्वेक्षण विज्ञान) के क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग के सहमति पत्र के नवीनीकरण के खिलाफ फैसला लिया है। सिर्फ मालदीव में ही नहीं, बल्कि नए वर्ष में भारतीय विदेश नीति के समक्ष कई चुनौतियां हैं। चीन अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका सहित दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) के देशों में तेजी से अपनी पैठ बना रहा है, जिसके लिए इसकी खतरनाक कर्ज-जाल नीति, विस्तारवाद और बीआरआई के माध्यम से दिए जा रहे प्रलोभन को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। विदेश नीति के विशेषज्ञों का मानना है कि भारत एशिया में खुद को चीन की तुलना में एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है, हालांकि दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर है। लेकिन अमेरिका के साथ बढ़ते भू-राजनीतिक सहयोग से वह चीन को मात दे सकता है। भारत के साथ अमेरिका का रक्षा और आर्थिक सहयोग दोनों देशों के रिश्ते को और मजबूत करेगा, जिसका असर वैश्विक मंच पर हो सकता है। चीन की कर्ज जाल नीति में पाकिस्तान पूरी तरह से फंस चुका है, जिससे निकट भविष्य में निकलना उसके लिए असंभव है। आगामी फरवरी में पाकिस्तान में होने वाले आम चुनाव से राजनीतिक परिदृश्य बदल सकता है, क्योंकि नवाज शरीफ के सत्ता में लौटने की संभावनाएं बन रही हैं। नवाज शरीफ ने भारत के साथ रिश्ते सामान्य बनाने की इच्छा जताई है। चीन नेपाल का सबसे बड़ा निवेशक और व्यापार भागीदार के रूप में उभरा है, जिसने दोनों देशों के आर्थिक एवं कूटनीतिक रिश्तों को बदल दिया है। चीन ने नेपाल में 1.34 अरब डॉलर का निवेश किया है और बीआरआई के क्रियान्वयन के लिए दबाव बना रहा है। नेपाल भारत के लिए बहुत प्रासंगिक है, लेकिन ओली सरकार ने भारत के साथ सदियों पुराने रिश्तों को बिगाड़ दिया था, जिसे मौजूदा प्रधानमंत्री प्रचंड ने सुधारने की बहुत कोशिश की है। अब भारत ने कई आर्थिक पहल की है, जिनमें दीर्घकालीन व्यापार समझौता, बिजली की खरीद और पारगमन संधि, आदि हैं, जो द्विपक्षीय रिश्तों को नया आयाम दे सकते हैं। भारत को बीआरआई की किसी भी प्रगति पर नजर रखनी होगी, क्योंकि 1,770 किलोमीटर की खुली सीमा के कारण सुरक्षा जोखिम होगा। हम्बनटोटा में चीन ने 4.5 अरब डॉलर का निवेश किया था, जिसने नई दिल्ली के लिए सुरक्षा चिंताएं पैदा कर दी थीं। लेकिन श्रीलंका जब आर्थिक पतन के कगार पर था, तो चीन उसकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। ऐसे में, भारत को उदारता दिखाने का मौका मिला। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत के साथ श्रीलंका का मौजूदा दोस्ताना रवैया जारी रह सकता है, क्योंकि भारत ने खुले दिल से सहयोग किया और चार अरब डॉलर से अधिक की वित्तीय सहायता दी, जो अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के तीन अरब डॉलर के राहत पैकेज से ज्यादा है। भारत को श्रीलंका से रिश्ते और बेहतर बनाने के लिए कदम उठाने चाहिए। बांग्लादेश में भारत समर्थक शेख हसीना फिर से सत्ता में लौट आई हैं। चीन ने हमेशा बांग्लादेश में गहरी दिलचस्पी दिखाई है, जो 2016-22 के दौरान 26 अरब डॉलर के निवेश से स्पष्ट है। आंकड़े बताते हैं कि बांग्लादेश में चीन सबसे बड़ा निवेशक बनकर उभरा है और वह अब वहां अपना निवेश और बढ़ा सकता है।

कुछ अलग

# कर्जखोर अब चांद की ओर

वे करते धरते कुछ नहीं, पर उनके पास किसी से दो पल चैन से बात करने का कभी वक्त नहीं होता। आज भी नहीं था। खड़े खड़े ही पांव आगे पीछे करते उन्होंने मुझसे गंभीर हो पूछा, 'यार! चांद पर प्लॉट लेना था। ये धरती तो अब रहने लायक रही नहीं। जहां देखो सच्चाई के नाम पर प्रहसन! दिन के उजाले में भी कुछ भी साफ नहीं। जिसे मां समझो वह मां नहीं, जिसे बाप समझो वह बाप नहीं। जहां देखो वहीं मंथन के नाम पर मर्दन। स्वच्छता के नाम पर इधर कूड़ा, उधर कचरा। बैल तक बन रहा है बलि का बकरा। सच कहूं तो इस धरती पर अब नाक बंद कर, नाक बचा बचा कर जीना पड़ रहा है। कहां से रजिस्ट्री होगी? आजकल वहां पर स्कवेयर गज क्या चला होगा? दलाल तो अभी तक वहां कहां ही पहुंचे होंगे? किस ईमानदार पटवारी से बात की जाए कि वह वहां पर प्लॉट पूरा नापे? किस तहसीलदार के रजिस्ट्री करवाई जाए कि वहां सीधी रजिस्ट्री हो?' वाह! क्या दिन आ गए? जिनके नाक ही नहीं वे भी इन दिनों नाक बचाने को लेकर अहा! कितने लेकर चिंतित हैं। उन्होंने मुझसे एक पर एक दिमाग हिला देने वाले सवाल दागे तो उन पर हंसी आने के बदले मुझे अपने पर हंसी आई। गधे! कैसे कैसे दोस्त पाल रखे हैं तूने भी! ऐसे दोस्त तुझे और कहीं ले जाएं या नहीं, पर नरक में जरूर ले जाएंगे। बंदा भी कमाल का है। जिस कमरे में रहता है, उसके मालिक को बीस महीने से किराया नहीं दिया है। जिस राशन की दुकान से राशन लाता है, उसका उधार दस महीने से स्टैंड है। राशन की दुकान वाला उसके बदले अब मेरा रास्ता रोकने लगा है। गारंटर के साथ बुधा ऐसा ही होता है। और अब जनाब प्लॉट लेने की बात कर रहे हैं, वह भी चांद पर। पर मैं भी बिल्कुल तैयार था कि अबके बंदे की कहीं गारंटी न दूंगा। जनाब की गारंटियां देते देते अपनी घंटियां बजने लगी हैं अब तो। वैसे फेंकने में जाता भी क्या है भाई साहब! पर फेंकने से पहले एक बात का जरूर ध्यान रखा जाना चाहिए कि जब फेंकने को मन करे तो फेंकने की समझदारी से ईमानदारी इसी में होती है कि फेंको तो इतनी दूर की फेंको कि...जिसकी ओर फेंकी गई हो, उसकी सांस रुकने के बदले उसका दम निकल जाए। ईमानदारी से फेंकना इसी को कहते हैं। वर्ना न फेंकने में ही धर्म की सलामती। 'देखो यार! पटवारी तो पटवारी होता है। वह चाहे वैकुंठ का ही क्यों न हो। ईमानदारी के नाम पर प्रहसन या लूट के नाम पर नौटंकी! यह तो सुनार जाने या सुनार की मां, पर एक कथा है कि एक बार सुनार ने अपने मां के गहने में से सोना नहीं खाया तो पता है उसे क्या हुआ था?' 'उसके पेट में दर्द हो गई थी, तो? पर गए वे दिन! अब दर्द नहीं होता।' 'तो क्या? मां तो ठहरी मां! जब मां को पता चला कि उसके बेटे के पेट में दर्द क्यों हो रहा है तो उसने अपने बेटे के पेट की दर्द ठीक करने के लिए अपने गहने में से उसे कुछ सोना निकालने को कहा। जैसे ही सुनार ने अपनी मां के आदेशानुसार मां के गहने में से कुछ सोना चुरा उसमें उतना खोट पाया तो उसके बेटे के पेट का दर्द एकदम ठीक हो गया। पर यार! बीस महीने से तुमने अपने कमरे का किराया नहीं दे पाए और अब चांद पर प्लॉट? अब सच्ची को इनकी उनकी तरह कर्ज मार देश से भागने की तो नहीं सोच रहे हो?' 'हां! अब मैं यहां से जितनी जल्दी हो सके शिफ्ट कर जाना चाहता हूं। दूर कहीं दूर! मुझे कर्ज देने वाले जब मुझसे कर्ज मांगते हैं तो मेरा दम घुटने लगता है। मैं ऐसे दमघोंटु कर्ज देने वालों के बीच अब और नहीं रह सकता', तब पहली बार पता चला कि कर्ज देने वालों का किसी को कर्ज देकर ही दम नहीं घुटता, कर्ज लेने वालों का कर्ज लेने पर भी दम घुटता है। 'मकान मालिक का किराया दिए बिना ही? देखो, तुम्हारी गारंटी मैंने दी है।' 'तो किराया भी तुम ही देते रहना।

देश दुनीया से

# उत्तर भारत का प्राचीनतम राम मंदिर जिसे भूल गए रामभक्त भी



> अयोध्या के अलावा उत्तर भारत का पहला और प्राचीनतम राम मंदिर उत्तराखण्ड के टिहरी जिले के देवप्रयाग में है। भारत की सबसे पवित्र नदी गंगा के उद्गम पर बना यह रधुनाथ मंदिर जम्मू के डोगरा शासकों द्वारा निर्मित रघुनाथ मंदिर से भी कई सदियों पुराना है। यह ऐसा मंदिर है जिसका उल्लेख न केवल पुराणों और चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत में है बल्कि इसका प्रमाणिक इतिहास मंदिर परिसर के शिलालेखों और गढ़वाल राज्य के प्राचीन पंवार शासकों के कई सदियों पुराने ताम्र पत्रों में भी दर्ज है। ईटी एटकिंसन ने तो हिमालयन गजेटियर में अल्मोड़ा में भी रामचन्द्र मंदिर का उल्लेख किया है।

भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या में करोड़ों सनातन धर्मावम्बियों की आस्था का प्रतीक भव्यतम्मंदिर के रूप में आकार ले चुका है और अब दर्शनार्थ द्वार खुलने के लिए 22 जनवरी की प्रतीक्षा की जा रही है। लेकिन करोड़ों धर्मावलम्बियों में से शायद कुछ ही को पता होगा कि अयोध्या के अलावा उत्तर भारत का पहला और प्राचीनतम राम मंदिर उत्तराखण्ड के टिहरी जिले के देवप्रयाग में है। भारत की सबसे पवित्र नदी गंगा के उद्गम पर बना यह रधुनाथ मंदिर जम्मू के डोगरा शासकों द्वारा निर्मित रघुनाथ मंदिर से भी कई सदियों पुराना है। यह ऐसा मंदिर है जिसका उल्लेख न केवल पुराणों और चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत में है बल्कि इसका प्रमाणिक इतिहास मंदिर परिसर के शिलालेखों और गढ़वाल राज्य के प्राचीन पंवार शासकों के कई सदियों पुराने ताम्र पत्रों में भी दर्ज है। ईटी एटकिंसन ने तो हिमालयन गजेटियर में अल्मोड़ा में भी रामचन्द्र मंदिर का उल्लेख किया है। लेकिन बिडम्बना यह कि पौराणिक काल के इन राम मंदिरों का नामलेवा भी देवप्रयाग वासियों के अलावा कोई नहीं मिलता है।

### रघुनाथ मंदिर से ही निलती है पतित पावनी गंगा

मध्य हिमालय की कई पवित्र धाराओं से बनी अलकनन्दा एवं भागीरथी नदियों के संगम से भारत की सबसे पवित्र नदी गंगा का उद्भव होता है। इसी पवित्र स्थल पर एक छोटा सा ऐतिहासिक और पौराणिक नगर है जो कि अपने धार्मिक महत्व के कारण देवप्रयाग के नाम से जाना जाता है। गंगा के उद्गम और रघुनाथ मंदिर के कारण धार्मिक दृष्टि से यह प्रयाग (संगाम) अपने नाम के अनुकूल उत्तराखण्ड के पंच प्रयागों में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। यह स्थान देश के चार सर्वोच्च धामों में से एक बदरीनाथ धाम और भारत तथा नेपाल में भगवान शिव के द्वादस ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ धाम के यात्रा मार्ग पर ऋषिकेश से 73 किमी दूर और समुद्रपल से लगभग 830 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। फिर भी इस पवित्रतम रघुनाथ मंदिर को अपने स्वर्णिम अतीत के लिये राजनीतिक संरक्षण की जरूरत पड़ रही है। इतिहास जनश्रुतियों में नहीं शिलालेखों, पुराणों और ताम्र पत्रों में प्रायः मंदिरों का इतिहास जनश्रुतियों पर आधारित होता है और उन मंदिरों की सिद्धि रिद्धि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जनश्रुतियों के आधार पर चलती है। लेकिन देवप्रयाग के रघुनाथ मंदिर का इतिहास जनश्रुतियों पर नहीं बल्कि अठारह पवित्र पुराणों में से चार, पद्म पुराण, मत्स्य पुराण, कूर्म पुराण और अग्नि पुराण में मिलता है। इस मंदिर में संबत 1512 याने कि सन-1456 ई0 का तत्कालीन गढ़वाल नरेश जगतपाल को मंदिर की मठाधीशी के लिए शंकर भारती कृष्ण भट्ट को दिया गया ताम्र पत्र मौजूद है जिसे गढ़वाल के प्रसिद्ध इतिहासकार कैप्टन शूरवीर सिंह और डॉ यशवन्त सिंह कठौच ने संरक्षित किया है। जबकि जम्मू स्थित उत्तर भारत के विख्यात रघुनाथ मंदिर का इतिहास लगभ 200 साल से कम पुराना है। उस मंदिर का निर्माण 1835 में महाराजा गुलाब सिंह ने शुरू किया था जिसे महाराजा रणवीर सिंह ने 1860 में पूर्ण कराया।

गढवाल के इतिहास की झलक भी मंदिर में मिलती है

ऐसा माना जाता है कि मूल रूप से मंदिर की स्थापना 8वीं शताब्दी के दौरान आदि शंकराचार्य द्वारा की गई थी। बाद में गढ़वाल राज्य के नरेशों द्वारा इसका विस्तार किया गया। पंवार वंश के 34वें राजा जगतपाल के बाद 44वें राजा मानशाह द्वारा दान संबंधी एक ताम्रपत्र भी मंदिर में मौजूद बताया गया है जो कि सम्बत 1610 याने कि सन-1554 का माना जाता है। मानशाह की मृत्यु सन-1575 में मानी जाती है। इसी वंश के 42वें राजा सहजपाल द्वारा मंदिर को दान किये गए घंटे का उल्लेख भी मंदिर के शिलालेखों में मिलता है कि 1664 के मंदिर के दरवाजे और चैखटों पर लगे शिलालेखों से पता चलता है कि इस क्षेत्र पर राजा पृथ्वीपति शाह का शासन था। राजा जयकीर्ति शाह, जिन्होंने 1780 के दौरान इस क्षेत्र पर शासन किया था, ने मंदिर में अपना जीवन समाप्त कर लिया क्योंकि उनके दरबारियों ने उन्हें धोखा दिया था। मंदिर के ठीक पीछे मौजूद शिलालेखों पर ब्राह्मी लिपि में 19 लोगों के नाम खुदे हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि स्वर्ग की प्राप्ति के लिए उन्होंने यहां संगम पर जल-समाधि ले ली थी।

### ब्राह्मण हत्या के दोष से मुक्ति के लिए राम ने की तपस्या

माना जाता है कि धारानगरी के आए पंवार वंश के राजा कनकपाल के पुत्र श्याम पाल (722-782 ईस्वी) के गुरु शंकर ने काष्ठ का प्रयोग कर मंदिर शिखर का निर्माण करवाया था। गुरु शंकर और आद्य शंकराचार्य का काल आठवीं सदी का है। उस काल में मंदिर का शिखर परिवर्तित होने के कारण जनश्रुति है कि मंदिर का निर्माण शंकराचार्य ने कराया था।

आप का नजरीया

# शेख हसीना की वापसी, विदेशी मुद्रा संकट के बीच राजनीतिक स्थिरता लाने की चुनौती

बीते रविवार यानी सात जनवरी को बांग्लादेश में संसदीय चुनाव के लिए मतदान हुआ, जिसमें शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग एक बार फिर विजयी हुई है। चुनावी नतीजे काफी हद तक उम्मीद के मुताबिक रहे और सत्तारूढ़ दल ने संसद में दो तिहाई बहुमत हासिल किया। मुख्य विपक्षी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी), जिसने चुनाव का बहिष्कार किया था, अपना विरोध जारी रखने की योजना बना रही है। हालांकि, हसीना विपक्ष की योजनाओं से परेशान नहीं हैं और कहती हैं कि उनकी जिम्मेदारी बांग्लादेश के लोगों के प्रति है, न कि विपक्षी पार्टी बीएनपी के प्रति, जो उनके अनुसार, गुंडों की पार्टी है। उन्होंने बांग्लादेश का करीबी साझेदार होने के लिए भारत की सराहना भी की है। बांग्लादेश के चुनावी नतीजे के आंकड़े बताते हैं कि मतदान में मात्र 40 प्रतिशत मतदाताओं ने ही भागीदारी की, जबकि विपक्ष को इस पर भी भरोसा नहीं है। जिन 61 सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवारों ने जीत हासिल की है, उन्हें भी अवामी लीग का ही छद्म उम्मीदवार बताया जाता है। जातीय पार्टी को सिर्फ 11 सीटों पर जीत मिली है। मुख्य विपक्षी पार्टी बीएनपी के नेताओं ने कहा कि उनकी पार्टी मंगलवार से शांतिपूर्वक अपने विरोध आंदोलन को तेज करने की योजना बना रही है। बीएनपी ने इस चुनाव को 'फर्जी' बताया है। बांग्लादेश के चुनाव आयोग के अनुसार, 42,000 से अधिक मतदान केंद्रों पर मतदान हुआ, जिनमें 27 राजनीतिक दलों के 1,500 से अधिक प्रत्याशी मैदान में थे। 436 निर्दलीय उम्मीदवार भी चुनाव लड़ रहे थे। भारत के तीन पर्यवेक्षकों समेत 100 से अधिक विदेशी पर्यवेक्षक बांग्लादेश के चुनाव की निगरानी कर रहे थे। मतदान के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए 7.5 लाख से अधिक कर्मियों की तैनाती की गई थी। विश्लेषकों का मानना है कि शेख हसीना की सत्ता में वापसी भारत के लिए फायदेमंद है, क्योंकि उनका रुख हमेशा से भारत समर्थक रहा है, जबकि बीएनपी के शासन के दौरान भारत के अलगाववादियों को वहां सुरक्षित पनाह मिलती रही है और बीएनपी का रुख भारत विरोधी रहा है। बांग्लादेश का राजनीतिक परिदृश्य शेख हसीना और खालिदा जिया के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता के लिए जाना जाता है। शेख हसीना बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर्रहमान की बेटी हैं, जबकि खालिदा जिया बांग्लादेश के पूर्व तानाशाह शासक जिया उर रहमान की विधवा हैं। इस राजनीतिक परिदृश्य में अचानक लोगों का ध्यान नोबेल विजेता अर्थशास्त्री मुहम्मद यूनुस की ओर चला गया, जिन्हें हाल ही में बांग्लादेश की एक श्रम अदालत ने छह महीने जेल की सजा सुनाई है। हालांकि इस फैसले के खिलाफ यूनुस को ऊपरी अदालत में अपील करने की इजाजत दी गई है, जबकि कुछ लोगों का मानना है कि अदालत का यह फैसला नोबेल विजेता मुहम्मद यूनुस के खिलाफ राजनीतिक बदले की कार्रवाई का हिस्सा है। हालांकि अवामी लीग सरकार ने इससे इन्कार किया है। मुहम्मद यूनुस बांग्लादेश में ग्रामीण बैंक के माध्यम से अपने सूक्ष्म-ऋणों के लिए जाने जाते हैं।

# यौन शोषण का आरोपी बुद्ध बॉय नेपाल में गिरफ्तार, 2020 से था फरार

**काठमांडू ।**
बुद्ध बॉय के नाम से मशहूर विवादास्पद आध्यात्मिक नेता राम बहादुर बोमजन को नेपाल की केंद्रीय जांच ब्यूरो ने राजधानी काठमांडू के बाहरी इलाके से गिरफ्तार किया है। गौतम बुद्ध के अवतार के रूप में पूजे जाने वाले बोमजन 2020 में महिला शिष्यों के साथ दुष्कर्म के मामले सामने बाद से फरार चल रहे थे।

नेपाली जांच एजेंसी के प्रवक्ता नबराज अधिकारी ने पुष्टि करते हुए बताया कि, हमने उसे सीआईबी की एक टीम द्वारा बुधनिलकांठा (काठमांडू के बाहरी इलाके) से गिरफ्तार किया है। इससे पहले जुलाई 2020 में, सरलाही की जिला अदालत ने एक नाबालिग लड़की अनुयायी (उस समय 15 वर्ष की आयु) द्वारा दायर यौन शोषण का मामला दर्ज किया था। आरोपपत्र के मुताबिक, घटना सरलाही के पत्थरकोट स्थित आश्रम में हुई थी।

### 2016 में लगा था दुष्कर्म का आरोप

पीड़िता ने 4 अगस्त, 2016 को रात में बोमजन पर दुष्कर्म का आरोप लगाया। नाबालिग ने यह भी कहा कि उसने बोमजन से घटना के बारे में दूसरों को न बताने अन्यथा परिणाम भुगतने की धमकी मिलने के बाद इसे छिपाए रखा।

शिकायत दर्ज होने के तुरंत बाद, पुलिस को पता चला कि उनके चार शिष्य भी उनके आश्रम से लापता हो गए थे। जून 2020 में, सीआईबी, बागमती प्रांतीय पुलिस और कावरे, सिंधुपालचौक और सरलाही में जिला पुलिस कार्यालयों की एक संयुक्त टीम ने पैरे, सिंधुली में उनके आश्रम पर छापेमारी की, लेकिन उनका पता नहीं चल सका।

### इसलिए चर्चा में आए थे बोमजन

बोमजन 2005 में लोगों के ध्यान में तब आए जब उन्होंने बिना भोजन, पानी या नींद के महीनों तक ध्यान करने का दावा किया। अपना ध्यान समाप्त होने के तुरंत बाद उन्होंने बारा, सरलाही, सिंधुपालचौक और सिंधुली जिलों में आश्रम स्थापित किए।

यौन शोषण के आरोपों के अलावा, बुद्धा बॉय कहे जाने वाले पर विभिन्न जिलों में पांच लोगों – उसके शिष्यों – के लापता होने का भी आरोप लगाया गया है। एक स्थानीय समाचार पोर्टल ने इस घटना की एक श्रृंखला में रिपोर्ट की थी, जिसमें दावा किए गए आध्यात्मिक नेता के आश्रमों के अंदर हुई घटनाओं का खुलासा किया गया था।

## न्यूज ब्रीफ

### ये उनकी व्यक्तिगत राय थी, भारत के साथ बिगड़ते रिश्तों पर बोले मालदीव के नेता; सरकार से की ये अपील

**माले ।** भारत और मालदीव के बीच विवाद को लेकर विपक्षी नेता और मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष फैयाज इस्माइल ने सरकार से कड़ा रुख अपनाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि मालदीव की मंत्री द्वारा भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणियां केवल उनकी व्यक्तिगत राय थी। सोशल मीडिया के जरिए यह पूरा मामला भारत के साथ-साथ मालदीव के लोगों तक भी पहुंच गया है। फैयाज इस्माइल ने कहा, मैं व्यक्तिगत रूप से मानता हूं कि सरकार को इसपर कड़ा रुख अपनाना चाहिए, क्योंकि यह सरकार से सरकार तक बढ़ता है। सोशल मीडिया के कारण यह मामला भारतीयों के साथ-साथ मालदीव के लोगों तक भी पहुंच चुका है और इस वजह से दोनों तरफ से इस मामले में बहस हो रही है। ऐसे में सरकार को यह बताने की जरूरत है कि उनकी तरफ से ऐसा कोई इरादा नहीं था। यह केवल उनलोगों की व्यक्तिगत राय थी। फैयाज इस्माइल ने आगे कहा, भारत और मालदीव के बीच रिश्ते को वरिष्ठ और पूर्व नेताओं ने मजबूती से बढ़ाया है, लेकिन एक या दो ट्वीट ने इन रिश्तों को खराब कर दिया। उन्होंने बताया, मेरे हिसाब से यह मामला सरकार से से भी ऊपर चला गया है। सरकारों के बीच विवाद होते रहते हैं। चाहे वह भारत हो या मालदीव, सरकार के बदलते ही विचार भी बदल जाते हैं। विपक्षी नेता ने कहा कि वह इस बात से चिंतित है कि दोनों देशों के बीच इस विवाद का समाधान कैसे निकाला जाए, क्योंकि यह विवाद अब लोगों तक पहुंच गया है। इसे ठीक करने के लिए मालदीव सरकार को उचित कार्रवाई करनी होगी। भारत द्वारा मालदीव को प्रदान की गई सहायता के संदर्भ में विपक्षी नेता ने कहा, भारत न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक विकास के मामले में भी मालदीव का सहयोगी रहा है।

### पाकिस्तान की जेल में 78 साल कैद की सजा काट रहा आतंकी हाफिज सईद, यूएन ने ताजा अपडेट में दी जानकारी

**न्यूयॉर्क ।** मुंबई आतंकी हमले का गुनहगार हाफिज सईद को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। संयुक्त राष्ट्र के ताजा अपडेट के अनुसार, आतंकी हाफिज सईद पाकिस्तान सरकार की हिरासत में है और 78 साल कैद की सजा काट रहा है। भारत ने बीते दिसंबर में पाकिस्तान से संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित आतंकवादी सईद के प्रत्यर्पण की मांग की थी। प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन जमात-उद-दावा का सरगना हाफिज सईद कई आतंकी मामलों में भारतीय जांच एजेंसियों द्वारा वांछित है। यूएन की प्रतिबंध समिति ने एक संशोधित बयान में कहा है कि हाफिज सईद को दिसंबर 2008 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अल-कायदा प्रतिबंध समिति ने वैश्विक आतंकवादी घोषित किया था। वह पाकिस्तान सरकार की हिरासत में है और टेरर फंडिंग से संबंधित सात मामलों में दोषसिद्धि के बाद 12 फरवरी 2020 से 78 साल कारावास की सजा काट रहा है। सईद मुंबई हमले के अलावा सात आतंकी घटनाओं में आर्थिक रूप से मदद पहुंचाने का दोषी है। सुरक्षा परिषद समिति ने पिछले महीने अपनी आईएसआईएल (दाएश) और अल-कायदा प्रतिबंध सूची में आतंकवादियों और समूहों की संपत्ति फ्रीज करने, यात्रा प्रतिबंध और हथियार प्रतिबंध के अधीन कुछ प्रविष्टियों में संशोधन किया गया। इन संशोधनों के तहत प्रतिबंध समिति ने इस बात को भी दर्ज किया है कि लश्कर-ए-तैयबा के संस्थापक सदस्य हाफिज अब्दुल सलाम भुट्टावी की मौत हो चुकी है।

### अंतरराष्ट्रीय व्यापार रोकने के लिए हूतियों ने सात हफ्ते में किए 26 हमले, यूएस-यूके ने ऐसे नाकाम किए इरादे

**वॉशिंगटन ।** लेबनान के ईरान समर्थित संगठन हूती विद्रोहियों ने लाल सागर में अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बाधित करने की कोशिशें जारी रखी हैं। इजराइल-हमास में जारी संघर्ष के बीच हूती बीते सात हफ्तों में इस व्यापार मार्ग पर 26 बार हमले कर चुके हैं। इस दौरान इस संगठन ने 18 ड्रोन लॉन्च किए। अमेरिकी सेना की सेंट्रल कमांड (सेंटकॉम) ने कहा कि उसने और ब्रिटिश सेना ने इन ड्रोन्स के साथ-साथ लेबनान से दागी गई दो एंटी शिप क्रूज मिसाइलें और एक एंटी-शिप बैलिस्टिक मिसाइल को भी मार गिराया। अमेरिकी सेंट्रल कमांड की ओर से जारी बयान के मुताबिक, हूतियों ने ईरान द्वारा डिजाइन्ड ड्रोन्स और मिसाइलों से हमला किया। इनकी तरफ से दक्षिण लाल सागर को निशाना बनाया गया। हालांकि, इस हमले को नाकाम कर दिया गया। गौरतलब है कि इजराइल-हमास संघर्ष शुरू होने के बाद से ही हूतियों ने इजराइल समर्थक पश्चिमी देशों को चेतावनी दे दी थी। संगठन की तरफ से लाल सागर में अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए जा रहे शिप-कंटेनरों को निशाना बनाया जा रहा है। इन हमलों और इजराइल की सुरक्षा के मद्देनजर अमेरिका और पश्चिमी देशों के समूह ने मार्ग की सुरक्षा के लिए समझौता किया और अपने कई हथियारों को इस क्षेत्र में तैनात किया है।

# इक्वाडोर में आपराधिक समूहों और सरकार के बीच क्यों छिड़ी जंग

**क्विटो ।**
इक्वाडोर अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। यहां शक्तिशाली आपराधिक समूहों और सरकार के बीच युद्ध जैसे हालत छिड़ गए हैं। देश अभी गंभीर सुरक्षा संकट का सामना कर रहा है। इसे देखते हुए राष्ट्रपति डेनियल नोबोआ ने सैनिकों को कड़ी कार्रवाई के आदेश दे दिए हैं।

### आइए 10 बिंदू में जानते हैं आखिर इक्वाडोर में क्या कुछ हो रहा है-

- 1. इक्वाडोर काफी समय से कोलंबिया और पेरू के बीच एक शांतिपूर्ण राष्ट्र के रूप में जाना जाता है। हालांकि, मैक्सिकन और कोलंबियाई कार्टेल से संबंध रखने वाले गिरोह नियंत्रण के लिए लड़ाई कर रहे हैं। देश में फिलहाल हिंसा को हवा तब मिली, जब जोस एडोल्फो मैकियास उर्फ फिटो जेल से भाग निकला। उसके जेल से बाहर निकलने के बाद पूरे इक्वाडोर में अशांति का माहौल बना हुआ है।
- 2. पिछले साल अक्तूबर में डेनियल गोबोआ ने राष्ट्रपति का पद संभाला था। उन्होंने उस वक्त वादा किया था कि वह देश को ड्रग से छुटकारा दिलाएंगे। ड्रग्स का तो पता नहीं, लेकिन गोबोआ के सामने चुनौती तब खड़ी हो गई, जब खबर सामने आई कि बंदरगाह शहर गुआयाकिल में हमलावर टीसी टेलीविजन के स्टूडियो में घुस गए हैं। जानकारी मिलते ही गोबोआ ने सैनिकों को कड़ी कार्रवाई करने का आदेश दिया।
- 3. लाइव प्रसारण के दौरान हथियारबंद घुसपैठियों ने कर्मचारियों को जमीन पर लेटने पर मजबूर किया। पूरे स्टूडियो में चीख पुकार की आवाजें सुनाई दे रही थी। टीसी के एक कर्मचारी ने स्थिति की गंभीरता से अवगत कराते हुए कहा कि वे हमें मारने के लिए आए थे। हे भगवान, ऐसा मत होने दो।
- 4. दूसरी तरफ, गैंगस्टरों ने पुलिस अधिकारियों का अपहरण कर लिया और राष्ट्रपति नोबोआ द्वारा लगाए गए 60 दिनों के आपातकाल और रात के कर्फ्यू का विरोध करते हुए कई शहरों में विस्फोट किए। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें देखा जा सकता है कि कैसे अपहृत अधिकारियों को सरकार के खिलाफ युद्ध की चेतावनी वाला बयान पढ़ने पर मजबूर किया जा रहा है।
- 5. एक डरे हुए अधिकारी ने बदमाशों का लिखा बयान पढ़ा कि, आपने युद्ध की घोषणा की, आपको युद्ध मिलेगा। आपने आपातकाल की घोषणा कर दी। हम पुलिस, नागरिकों और सैनिकों को तबाह कर देंगे।
- 6. राष्ट्रपति नोबोआ, जिन्होंने फिटो के भागने के बाद कार्टेल का सामना करने की कसम खाई थी, अब एक जटिल और अस्थिर स्थिति का सामना कर रहे हैं। गिरोह के बयान में घोषणा की गई है कि रात 11:00 बजे के बाद सड़कों पर पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति को मार दिया जाएगा, जिससे नागरिकों और सुरक्षा बलों के लिए खतरा बढ़ जाएगा।
- 7. गैंगस्टर फिटो की तलाश की जा रही है, जो संगठित अपराध, मादक पदार्थों की तस्करी और हत्या के लिए 34 साल की सजा काट रहा था। अधिकारियों ने खुलासा किया कि एक अन्य कुख्यात भी फरार हो गया है, जिससे सुरक्षा स्थिति और खराब हो गई है।
- 8. देश भर की कई जेलों में अशांति फैल गई, कुछ जगह तो सुरक्षा गार्डों को बंधक बना लिया गया। राष्ट्रपति नोबोआ ने विद्रोह को इक्वाडोर की जेलों पर नियंत्रण हासिल करने के अपने प्रयासों का बदला लेने के लिए जिम्मेदार ठहराया और शांति बहाल होने तक आतंकवादियों के साथ बातचीत नहीं करने का संकल्प लिया।
- 9. इक्वाडोर में 2018 से 2022 के बीच हत्या की दर चौगुनी रही है और पिछले साल 7,800 से अधिक हत्याएं दर्ज की गईं।
- 10. फरवरी 2021 से कैदियों के बीच झड़पों में 460 से अधिक मौतें हुई हैं, जिससे देश में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति के बारे में चिंता बढ़ गई है।

### इजराइली हमले में तीन हिजबुल्लाह कमांडरों की मौत, लेबनानी आतंकी संगठन ने आईडीएफ मुख्यालय पर किया हमला

**तेल अवीव ।** इजराइल और हमास के बीच लेबनान सीमा पर भी तनाव बढ़ गया है। इजराइली हमले में तीन हिजबुल्लाह कमांडरों की मौत हो गई। इसके अलावा, हिजबुल्ला के भी एक ड्रोन ने इजराइली सेना के उत्तरी कमान पर हमला किया। बता दें, इजराइल और हमास आंतकी सात अक्तूबर से लगातार लड़ रहे हैं, जिसमें अब तक करीब 24 हजार लोगों की मौत हो चुकी है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, तीनों हिजबुल्लाह कमांडर दक्षिणी लेबनान के नबातीह क्षेत्र में एक कार में थे। इसी दौरान उन पर मिसाइल हमला हो गया और तीनों की मौके पर ही मौत हो गई। हालांकि, इजराइल ने इस पर अब तक कोई टिप्पणी नहीं की है।

# भारतीय मूल के सर्जन जनरल डॉ विवेक मूर्ति डब्ल्यूएचओ बोर्ड में शामिल होंगे, सीनेट में राष्ट्रपति बाइडन का प्रस्ताव

**वॉशिंगटन ।**
भारत की प्रतिभा एक बार फिर वैश्विक मंच पर अपनी छाप छोड़ने को तैयार है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने भारतीय मूल के डॉक्टर को अमेरिका का प्रतिनिधि चुना है। बाइडन ने यूएस सर्जन जनरल डॉ विवेक मूर्ति को विश्व स्वास्थ्य संगठन के बोर्ड में प्रतिनिधि बनाने का फैसला लिया है। उन्होंने इस संबंध में प्रस्ताव यूएस सीनेट में भेजा है। बता दें कि डॉ विवेक दूसरी बार अमेरिका के प्रतिनिधि बनकर डब्ल्यूएचओ के कार्यकारी बोर्ड में शामिल होंगे।

**सीनेट में अक्तूबर, 2022 से लंबित है प्रस्ताव** – 46 साल के चिकित्सक डॉ विवेक मूर्ति का नाम दोबारा भेजा गया है। रिपोर्ट के मुताबिक उनके नाम पर आम सहमति का इंतजार बीते लगभग 14 महीने से हो रहा है। डब्ल्यूएचओ बोर्ड में डॉ विवेक के शामिल होने का प्रस्ताव अक्तूबर 2022 से ही सीनेट में लंबित है। ओबामा के कार्यकाल में भी सेवाएं दीं, एक बार फिर भेजा गया प्रस्ताव मार्च 2021 में अमेरिकी सीनेट ने देश के 21वें सर्जन जनरल के रूप में डॉ विवेक के नाम को मंजूरी दी थी। इससे पहले उन्होंने राष्ट्रपति बराक ओबामा के कार्यकाल में भी अमेरिका के 19वें सर्जन जनरल के रूप में सेवाएं दी थीं। खबरों के मुताबिक आठ जनवरी को व्हाइट हाउस की तरफ से सीनेट में प्रस्ताव भेजा गया। इसमें डॉ विवेक के नाम का उल्लेख है।

**कर्नाटक से जुड़े हैं डॉ विवेक, तीन साल क आयु में पहुंचे अमेरिका** – मूर्ति की जड़ें कर्नाटक में रहने वाले पूर्वजों से जुड़ी हैं। कर्नाटक से इंग्लैंड जाकर बसे प्रवासियों की संतान डॉ मूर्ति का जन्म यॉर्कशायर के हडर्सफील्ड में हुआ था। करीब 45 साल पहले मूर्ति का परिवार कनाडा के प्रांत न्यूफाउंडलैंड चला गया। 1978 में यहां आने के बाद मूर्ति के पिता को जिला चिकित्सा अधिकारी का पद मिला। केवल तीन साल की आयु में मूर्ति पहली बार अमेरिका आए, जब परिवार मियामी आकर रहने लगा।

**डॉ विवेक की टीम में 6000 से अधिक स्वास्थ्य अधिकारी** – फिलहाल, डॉ विवेक मूर्ति अपनी पत्नी डॉ. एलिस चेन और अपने दो बच्चों के साथ वॉशिंगटन में रहते हैं। अमेरिका में सबसे वंचित और कमजोर आबादी की सेवा के लिए नियुक्त 6000 से अधिक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ विवेक के अधीन आते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि डॉ विवेक अमेरिका की सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा- यूएस पब्लिक हेल्थ सर्विस के कमीशन्ड कोर में वाइस एडमिरल का पदभार भी संभालते हैं।

**कौन होते हैं यूएस सर्जन जनरल** – अमेरिकी सर्जन जनरल को देश का शीर्ष चिकित्सक माना जाता है। इस पग पर नियुक्त होने वाले डॉक्टर की ड्यूटी वैज्ञानिक सूचना पर आधारित देश के लिए सर्वोत्तम स्वास्थ्य नीति तैयार करना है। इसके अलावा न्यायसंगत मार्गदर्शन और संसाधनों के समुचित इस्तेमाल की जवाबदेही भी सर्जन जनरल की होती है।

# अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन अस्पताल में भर्ती, प्रोस्टेट कैंसर सर्जरी के बाद संक्रमण से थे परेशान

**वाशिंगटन ।**
अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन को प्रॉस्टेट कैंसर के इलाज के लिए दिसंबर में की गई सर्जरी के बाद संक्रमण के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह खुलासा ऑस्टिन के अस्पताल में भर्ती होने के बारे में गोपनीयता को लेकर पेंटागन को सार्वजनिक प्रतिक्रिया का सामना करने के कुछ दिनों बाद आया है। राष्ट्रपति जो बाइडन और ऑस्टिन के अपने डिप्टी को भी कथित तौर पर कई दिनों तक अंधेरे में रखा गया था।

ऑस्टिन अमेरिकी सेना की कमान संरचना में राष्ट्रपति के बाद दूसरे स्थान पर हैं और उनसे किसी भी समय किसी भी राष्ट्रीय सुरक्षा संकट से निपटने के लिए तैयार रहने की उम्मीद की जाती है।

डॉक्टरों के मुताबिक, 70 वर्षीय ऑस्टिन ने दिसंबर की शुरुआत में नियमित जांच कराई जिसके बाद कैंसर का पता लगा। 22 दिसंबर को उन्हें वाल्टर रीड नेशनल मिलिट्री मेडिकल सेंटर में भर्ती कराया गया और कैंसर के इलाज के लिए उनकी सर्जरी की गई। डॉक्टरों ने कहा, उन्हें न्यूनतम इनवेसिव सर्जिकल प्रक्रिया से गुजरना पड़ा और अगले दिन घर चले गए। हालांकि, पिछले हफ्ते, ऑस्टिन को उपचार से जटिलताओं का सामना करना पड़ा, जिसमें पेट,

कूल्हे और पैर में गंभीर दर्द के साथ मतली भी शामिल थी। उन्हें मूत्र पथ के संक्रमण का पता चला था, जिसके बाद उन्हें 2 जनवरी को गहन चिकित्सा इकाई में ले जाया गया था। डॉक्टरों ने बताया कि उन्हें पता चला कि ऑस्टिन के पेट में तरल पदार्थ जमा होने से उसकी छोटी आंत की कार्यप्रणाली खराब हो रही थी। अधिकारियों ने एक बयान में कहा, इसके परिणामस्वरूप उनकी आंतों का इलाज उनके पेट को खाली करने के लिए उनकी नाक के माध्यम से एक ट्यूब डालकर किया गया। अपने पूरे प्रवास के दौरान उन्होंने लगातार प्रगति की है।

अधिकारियों ने कहा कि ऑस्टिन का संक्रमण ठीक हो गया है और उनकी प्रगति जारी है। उन्होंने कहा, हम पूरी तरह से ठीक होने की उम्मीद करते हैं, हालांकि यह एक धीमी प्रक्रिया हो सकती है।

# अमेरिका का पहला निजी मून लैंडर मिशन फेल, चांद पर अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने की योजना स्थगित

**केप कैनावेरल ( फ्लोरिडा ) ।**
अमेरिका की चांद पर मानव को उतारने की कोशिशों को झटका लगा है। तकनीकी खामी के कारण चांद के लिए भेजा गया पहला वाणिज्यिक अमेरिकी मिशन फेल हो गया है। एस्ट्रोबोटिक टेक्नोलॉजी कंपनी ने इस वाणिज्यिक चंद्र मिशन को भेजा था। लेकिन कंपनी को ईंधन रिसाव के कारण चंद्रमा पर अंतरिक्ष यान को उतारने के अपने प्रयास से पीछे हटना पड़ा। इसके बाद एक घंटे बाद नासा ने भी अपने मून मिशन को स्थगित करने की घोषणा कर दी। नासा के वाणिज्यिक चंद्र कार्यक्रम के हिस्से के रूप में लॉन्च किए गए एस्ट्रोबोटिक टेक्नोलॉजी कंपनी के पेरेग्रीन लैंडर को अंतरिक्ष यात्रियों के लिए प्रहरी (स्काउट) के रूप में काम करना था।

नासा ने इस साल के अंत में चंद्रमा के चारों ओर चार अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने की योजना बनाई थी, लेकिन अब चंद्रमा पर पहली बार मानव को उतारने की योजना को 2026 तक टाल दिया गया है। अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा की उड़ान भरने के लिए कुछ और वर्षों तक इंतजार करना होगा।

### पेरेग्रीन लूनर लैंडर को किया गया था लॉन्च

अपोलो मिशन के 50 वर्षों बाद चंद्रमा की सतह पर पहला अंतरिक्ष यान उतारने के लिए यूनाइटेड लॉन्च अलायंस के वल्कन रॉकेट से पेरेग्रीन लूनर लैंडर को फ्लोरिडा के केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से लॉन्च किया गया था। लैंडर को सफलतापूर्वक लॉन्च वाहन से अलग कर दिया गया। लेकिन कुछ घंटों बाद एस्ट्रोबोटिक ने खराबी की सूचना देना शुरू कर दिया। जिसकी शुरुआत एक प्रणोदन गड़बड़ी के कारण पेरेग्रीन के सौर पैनल को सूर्य की ओर उन्मुख करने और इसकी बैटरी को ऊपर रखने में असमर्थता से हुई, जिसने अंतरिक्ष यान के बाहरी हिस्से को भी नुकसान पहुंचाया।

### चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की कोई संभावना नहीं

कंपनी ने कहा कि चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की कोई संभावना नहीं है। पेरेग्रीन लैंडर के पास लगभग 40 घंटे का ईंधन शेष है। एस्ट्रोबोटिक ने कहा कि उसने अंतरिक्ष यान को तब तक संचालित करने की योजना बनाई है जब तक कि उसमें प्रणोदक खत्म नहीं हो जाता। एस्ट्रोबोटिक को अपने अगले मिशन की तैयारी के लिए डाटा मिलना जारी है। एस्ट्रोबोटिक इस साल के अंत में नासा के रोवर को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर ले जाने वाले ग्रिफिन लैंडर को भेजने की तैयारी में है।

# भारत की लताड़ के बाद चीन के आगे झुके मुइज्जू, चीनी पर्यटकों को मालदीव भेजने का किया अनुरोध

**बीजिंग ।**

**मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू इन दिनों काफी सुर्खियों में हैं। उनकी मुसीबतें लगातार बढ़ती जा रही हैं। पर्यटन पर टिकी मालदीव की अर्थव्यवस्था पर्यटकों की गिरावट से जूझ रही है। इसलिए मुइज्जू ने अपने मित्र राष्ट्र चीन से अनुरोध किया है कि अधिक से अधिक पर्यटकों को वे मालदीव भेजें, जिससे उनकी माली हालत पर संकट न आए। बता दें, मालदीव के राष्ट्रपति इन दिनों चीन के दौरे पर हैं।**

यात्रा के दौरान दोनों देशों ने मालदीव में एकीकृत पर्यटन क्षेत्र विकसित करने के लिए 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर की परियोजनाओं पर हस्ताक्षर किए हैं।

### बीआरआई परियोजना की तारीफ

चीन के फुजियान प्रांत में मोहम्मद मुइज्जू ने मालदीव बिजनेस फोरम को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने चीन को अपना निकटतम सहयोगी बताया। उन्होंने चीन के बेल्ट एंड इनिशिएटिव (बीआरआई) परियोजनाओं की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कि चीन हमारा करीबी सहयोगी है। हम दोनों विकास में भागीदार हैं। चीन की इसी परियोजना के कारण मालदीव में बुनियादी ढांचे का विकास हुआ है। उन्होंने आग्रह किया कि चीन से अधिक संख्या में पर्यटक मालदीव पहुंचे।

### मालदीव आर्थिक सुधार और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध

फोरम को संबोधित करते हुए उन्होंने आगे कहा कि कोविड से पहले दोनों देशों के व्यापार में तेजी थी। हम चीन से अनुरोध करते हैं कि वह दोबारा से इस स्थिति में आने का प्रयास तेज करे। उन्होंने कहा कि मेरी सरकार मालदीव में आर्थिक सुधार और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने मुक्त व्यापार समझौते पर भी बात की। मुइज्जू ने कहा कि एफटीए दोनों देशों के बीच घनिष्ठ वाणिज्यिक संबंधों का प्रतीक है। इसका उद्देश्य द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना है। उन्होंने मालदीव की 11 परियोजनाओं के लिए चीनी कंपनियों से निवेश की मांग की।

### क्या है इस दौरे का उद्देश्य

चीनी विदेश मंत्रालय के एक अन्य प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा कि राष्ट्रपति मुइज्जू के पदभार संभालने के बाद यह किसी विदेशी देश की पहली राजकीय यात्रा होगी। राष्ट्रपति शी राष्ट्रपति मुइज्जू के लिए एक स्वागत समारोह और स्वागत भोज की मेजबानी करेंगे। प्रवक्ता ने आगे बताया कि दोनों राष्ट्राध्यक्ष बातचीत करेंगे और सहयोग दस्तावेजों पर हस्ताक्षर समारोह में भाग लेंगे। उन्होंने विदेश मंत्रालय की नियमित ब्रीफिंग में बताया कि प्रधानमंत्री ली कियांग और नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति के अध्यक्ष झाओ लेजी राष्ट्रपति मुइज्जू से मुलाकात करेंगे।

### सुप्रीम कोर्ट ने बरकरार रखी दिवंगत मुशर्रफ की मौत की सजा, बीते साल हुआ था पूर्व राष्ट्रपति का निधन

**इस्लामाबाद ।** पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने एक विशेष अदालत द्वारा 2019 में दिवंगत राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ को मौत की सजा सुनाने के फैसले को बरकरार रखा है। पाकिस्तान के आखिरी सैन्य शासक 79 वर्षीय मुशर्रफ की मौत पांच परवरी 2023 में दुबई में हुई थी। वह अपने देश में आपराधिक आरोपों से बचने के लिए 2016 से ही दुबई में रह रहे थे। पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश काजी फैज ईसा के नेतृत्व में चार सदस्यीय बेंच ने सुनवाई की। 17 दिसंबर 2019 में पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज (पीएमएल-एन) की सरकार के दौरान मुशर्रफ के खिलाफ 2007 में असंवैधानिक फैसले लेने और आपातकाल की घोषणा करने के लिए एक विशेष अदालत ने मौत की सजा सुनाई थी।

# ग्रामीणों को मिलेंगे पट्टे और मोबाइल पर भिजवाई जाएगी पट्टे की पीडीएफ फाइल

**अजमेर ( हिंस )।** मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद अजमेर के आदेशानुसार स्वामित्व योजना के क्रियान्वयन के संबंध में प्रशिक्षण सरवाड पंचायत समिति क्षेत्र के समस्त ग्राम विकास अधिकारियों, कनिष्ठ सहायकों, ग्राम रोजगार सहायकों का प्रशिक्षण शिविर का आयोजन पंचायत समिति सरवाड में रखा गया। प्रशिक्षण की शुरूआत में विकास अधिकारी सुधीर पाठक ने बताया कि राष्ट्रीय पंचायत दिवस 24 अप्रेल 2020 के अवसर पर सरकार द्वारा स्वामित्व योजना आरम्भ की गई। सरकार द्वारा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और समाज पर दूरगामी प्रभाव को देखते हुए इस योजना का क्रियान्वयन पंचायतीराज विभाग व राजस्व विभाग के संयुक्त प्रयासों से किया जा रहा है। दक्ष प्रशिक्षक नंदकिशोर कुमावत (पारमवाल)-सहायक विकास अधिकारी, पंचायत समिति श्रीनगर ने बताया कि सरकार द्वारा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और समाज पर दूरगामी प्रभाव को देखते हुए इस योजना का क्रियान्वयन पंचायतीराज विभाग व राजस्व विभाग के संयुक्त प्रयासों से किया जा रहा है। डिजिटल इंडिया को बढ़ाने के लिए भारत सरकार ने ग्रामीण

स्वामित्व योजना की शुरुआत की है। इस योजना के तहत लाभार्थी ग्रामीणों को पट्टा, विक्रय विलेख एवं रजिस्ट्री भौतिक रूप से देने के साथ-साथ दस्तावेज की पीडीएफ फाईल बनाकर लाभार्थी के मोबाईल नंबर पर भी प्रेषित की जाएगी। ग्रामीण आबादी भूमि का रिकार्ड ऑनलाईन होगा। इस योजना के तहत, आवेदकों को गांवों के घरों में बैंक ऋण जल्दी मिल जाएगा। यह योजना ग्रामीण लोगों को बैंकों से ऋण प्राप्त करने में सहायता करेगी। स्वामित्व योजना के अंतर्गत आने वाले सभी ग्रामीण समाज के काम ऑनलाइन हो जाएंगे। ऑनलाइन होने की वजह से भूमाफिया और फर्जीवाड़ा और भूमि की लूट सभी कुछ पूर्ण रूप से बंद हो जाने की उम्मीद है। स्वामित्व योजना का उद्देश्य ग्रामीण आबादी को उनके घरों पर ऋण उपलब्ध कराना है। सरकार गांवों में ड्रोन का उपयोग करके डिजिटल सर्वेक्षण किया जावेगा और पात्र लोगों को स्वामित्व प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा। गांवों में विकास की गति को तेज देने के लिए दो वेब पोर्टल, ई-ग्राम स्वराज और स्वामित्व योजना शुरू किया गया है। ग्रामों में संपत्तियों की मैपिंग में स्वामित्व योजना ड्रोन का उपयोग से होगी। इससे संपत्ति पर विवादों को कम करने में मदद मिलेगी। पोर्टल ग्रामीणों को बैंकों से ऋण लेने में आसान बनाने में मदद करेगा। इस स्कीम के तहत आवासीय संपत्ति के मालिकों को सरकार से आवासीय कार्ड मिलेंगे। स्वामित्व योजना में गांवों में भूमि के स्वामित्व का रिकॉर्ड तैयार होता है, जो कर संग्रह, भवन निर्माण स्वीकृति, भूमि उपयोग किस्म परिवर्तन, भूमि नाम हस्तान्तरण में सहयोग करेगा। स्वामित्व योजना के अंतर्गत संबंध संपत्ति नामांकन के प्रोसेस को सरल बनाना है। इस योजना के अंतर्गत ड्रोन के द्वारा भूमि का मैपिंग किया जाता है। भूमि के सत्यापन प्रक्रिया में तेजी और भूमि भ्रष्टाचार को रोकने में सहायता मिलेगी। स्वामित्व योजना के तहत गांवों के आबादी क्षेत्रों का डिजीटल मानचित्र तैयार किए जाकर भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा ग्राम पंचायतों को सौपें जाएंगे। गावों की आबादी क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य और मानचित्रण कार्य पूरा होने पर ग्राम पंचायतों के द्वारा राजस्थान पंचायतीराज नियम, 1996 के प्रावधानों के तहत संबंधित व्यक्ति को पटटा दिया जाएगा।

# हुड्डा के पैतृक गांव सांघी में गरजे भाजपा हरियाणा प्रभारी बिप्लब देब

## भाजपा प्रभारी बोले, मोदी को ही प्रधानमंत्री देखना चाहती है प्रदेश की जनता

**रोहतक ( हिंस )।** भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रभारी बिप्लब कुमार देव ने कहा कि प्रदेश की जनता नरेंद्र मोदी को ही तीसरी बार भी प्रधानमंत्री देखना चाहती है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की जनता को रोटी से पहले सम्मान चाहिए और प्रदेश की जनता को सम्मान केवल मोदी ने दिया है, राहुल गांधी और हुड्डा ने नहीं। प्रदेश प्रभारी ने गांव सांघी के लोगों को केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी दी तथा इनका लाभ उठाने का आह्वान भी किया। विकसित भारत संकल्प यात्रा में सांसद अरविंद शर्मा, राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगडा आदि नेताओं ने भी मोदी-मनोहर सरकार की योजनाओं को जनता के सामने रखा। यात्रा में उपस्थित अन्य नेताओं और अधिकारियों के साथ यहां योजनाओं का लाभ देने के लिए लगी प्रदर्शनी का भी बिप्लब देब ने अवलोकन किया। भाजपा प्रदेश प्रभारी बुधवार को पूर्व सीएम भूपेंद्र हुड्डा के पैतृक गांव सांधी में विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। प्रदेश प्रभारी बिप्लब कुमार देब ने कहा कि मोदी के नाम से ही इस ठिठुरती ठंड में नई उर्जा और जोश तथा गर्मी का संचार होता है, जबकि राहुल गांधी के नाम से ही मुर्छा सी छा जाती है। भाजपा प्रभारी ने कहा कि भूपेंद्र हुड्डा के शासनकाल में यहां 12-12 फूट के गड्ढे होते थे, ताकि कोई दूसरी पार्टी के नेता यहां नहीं पहुंच सके। उन्होंने कहा कि हम भाजपा के कार्यकर्ता हैं, हमें यहां आने से कोई गड्ढा, नदी, नाला, पहाड़ नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि यह कांग्रेस का शासन नहीं है, अब मोदी सरकार है और नागरिकों को अधिकार मांगने की जरूरत नहीं है। सभी लोगों को अधिकार स्वत: मिल रहे हैं। मोदी के विकास का रथ गांव-गांव जाकर पात्र लोगों को सुविधाएं दे रहा है। प्रदेश प्रभारी बिप्लब देब पन्ना प्रमुख के घर पहुंचे। पन्ना प्रमुख बलजीत ने प्रदेश प्रभारी के अचानक घर पर पहुंचने पर खुशी जताते हुए कहा कि भाजपा में ही कार्यकर्ताओं का परिवार के सदस्य की तरह ध्यान रखा जाता है। बिप्लब देब ने पन्ना प्रमुख का सम्मान करते हुए कहा कि भाजपा विश्व का सबसे बड़ा परिवार है और हर कार्यकर्ता परिवार का एक सम्मानित सदस्य है। बिप्लब देब ने कहा कि हमेशा कहता हूं कि हरियाणा किसान, जवान और बलवानों की भूमि है। उनकी ये ऊर्जा युवाओं के लिए भी प्रेरणीय है। इस अवसर पर सांसद डॉ. अरविंद शर्मा, राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा, पूर्व मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर, उपाध्यक्ष सतीश नांदल, चेयरपर्सन मंजू हुड्डा, भाजपा जिला अध्यक्ष रणबीर ढाका, प्रदेश सचिव रेनू डाबला आदि मौजूद रहे।

# जम्मू-कश्मीर विस चुनावों के लिए सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप दुर्भाग्यपूर्ण : उमर अब्दुल्ला

**श्रीनगर ( हिंस )।** जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को भारत के चुनाव आयोग की आलोचना करते हुए कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों के लिए निर्देश जारी करने पड़े। श्रीनगर में मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए उमर अब्दुल्ला ने कहा कि हम कहते हैं कि भारत लोकतंत्र की जननी है, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम जम्मू-कश्मीर में इसकी हत्या कर रहे हैं। केंद्र पर निशाना साधते हुए उमर ने कहा कि यह यह दुखद है कि सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा और जम्मू-कश्मीर के विधानसभा चुनावों पर निर्देश पारित करना पड़ा, जबकि चुनाव आयोग कार्यक्रम की घोषणा करने और क्षेत्र में चुनाव कराने के लिए स्वतंत्र है। उन्होंने कहा कि सरकार को यूएलबी, पंचायत और विधानसभा का कार्यकाल समाप्त होने से पहले परिसीमन प्रक्रिया का मामला उठाना चाहिए था। उन्होंने कहा कि इसे पांच-छह महीने से पहले सुलझा लिया जाना चाहिए था, जब यह स्पष्ट था कि यूएलबी, पंचायत और अन्य निकायों का कार्यकाल पांच या छह महीने के बाद समाप्त हो जाएगा। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पार्टी नेतृत्व बैठकर जम्मू-कश्मीर से संसदीय चुनाव के लिए सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार खड़ा करने पर विचार-विमर्श करेगा।

# अन्नदाता के साथ-साथ ऊर्जादाता भी बनें पंजाब के किसान : गडकरी

## केंद्रीय मंत्री ने पंजाब में 4 हजार करोड़ के 29 प्रोजेक्टों का उद्घाटन किया

**चंडीगढ़ ( हिंस )।** केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पंजाब के किसानों को पराली न जलाने की अपील करते हुए कहा है कि वह पंजाब के विकास में भागीदार बनें। पंजाब का किसान सिर्फ अन्नदाता नहीं है, वे ऊर्जादाता है। पंजाब की पराली से बायो फ्यूल तैयार होगा। केंद्र सरकार इसके लिए किसानों को हर संभव मदद करेगी। केन्द्रीय मंत्री गडकरी बुधवार को पंजाब के होशियारपुर में कई परियोजनाओं का उदघाटन व शिलान्यास किया। यहां गडकरी ने 4 हजार करोड़ के 29 प्रोजेक्टों का उद्घाटन किया और 12 हजार करोड़ के नए प्रोजेक्टों की घोषणा की। उन्होंने कहा कि लुधियाना से बठिंडा तक ग्रीनफील्ड हाईवे बनाया जाएगा। यह 75 किमी लंबा होगा। इस पर दो हजार करोड़ खर्च होंगे। इसके बाद लुधियाना से बठिंडा की दूरी 45 मिनट

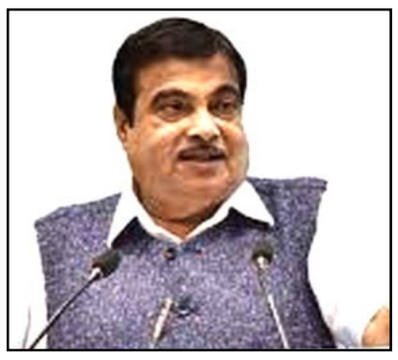

में तय हो जाएगी और यह दिसंबर 2025 तक बन जाएगा। जिसकी कनेक्टिविटी हलवारा एयरपोर्ट तक भी होगी। केंद्रीय मंत्री ने आज जहां पंजाब को हजारों करोड़ रुपए की परियोजनाएं दीं। इस कार्यक्रम में पंजाब सरकार की तरफ से कोई भी मंत्री व अन्य प्रतिनिधि शामिल नहीं हुए। इस मौके पर नितिन गडकरी ने कहा कि वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी की सरकार आई और तब से पूरा ध्यान सड़कों के ढांचे को मजबूत करने की तरफ है। राज्य और देश का विकास करना है तो हमें इंफ्रास्ट्रक्चर अच्छा बनाना होगा। अगर इंफ्रास्ट्रक्चर अच्छा होगा तो उद्योग आएंगे। अगर उद्योग आएंगे तो रोजगार अच्छा मिलेगा। उन्होंने कहा कि अमृतसर एयरपोर्ट से रमदास तक वर्ष 2024 में चार लेन हाईवे का काम पूरा हो जाएगा। इससे श्री करतारपुर साहिब कॉरिडोर तक का रास्ता सुगम हो जाएगा। लुधियाना के समराला चौक तक 13 किलोमीटर मार्ग का काम जनवरी 2024 तक पूरा होगा।

# पेट्रोल-डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने को लेकर धरना-प्रदर्शन

**जयपुर ( हिंस )।** पीपल्स ग्रीन पार्टी की ओर से बुधवार को पेट्रोल-डीजल को जीएसटी के दायरे में लाकर आम जनता को राहत देने की मांग को लेकर केंद्र सरकार के खिलाफ शहीद स्मारक पर धरना दिया। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एडवोकेट कपिल ने बताया कि हाल में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों में प्रधानमंत्री ने पेट्रोल-डीजल के दामों को कम करने का वादा राजस्थान की आम जनता से किया था। किंतु सरकार बन जाने के एक माह बाद भी आम जनता को कोई राहत नहीं दी जा रही। जब की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत लगातार गिर रही है।

# राशन डिपो धारकों ने किया प्रदर्शन

**यमुनानगर ( हिंस )।** जिला यमुनानगर के राशन डिपो धारकों ने अपनी मांगों को लेकर बुधवार को लघु सचिवालय के सामने अनाज मंडी गेट पर धरना-प्रदर्शन किया और जिला उपायुक्त के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। इस मौके पर आल फेयर प्राइस शॉप डीलर्स फेडरेशन के प्रदेश के उपाध्यक्ष सुशील कुमार मित्तल ने बताया कि पिछले 5 वर्षों से हमारी जायज मांगों को सरकार नहीं मान रही है। जिसको लेकर हमें सड़कों पर उतरना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज प्रदेश के 9300 से अधिक डिपो धारक प्रदर्शन कर रहे हैं, व यह प्रदर्शन 15 जनवरी तक चलेगा। उन्होंने कहा कि हमारी मुख्य मांगे है कि राशन डिपो धारकों के लिए 60 वर्ष आयु सीमा अन्य राज्य की तर्ज पर पूरी तरह से हटाई जाए। उन्होंने कहा कि डिपो धारकों को भी संविदा कर्मचारी घोषित कर सभी उम्रदराज राशन डिपो की सेवा निवृत्ति पर 15000 रुपए महीना वेतन भत्ता व 10 लाख रुपए का बीमा राशि दी जाए, राशन वितरण के दौरान कम से कम दो प्रतिशत घटती तथा लेवी चीनी में पूर्व में दी जा रही 400 ग्राम प्रति क्विंटल घटती को पुन: लागू किया जाए। मित्तल ने कहा कि कोरोना काल में अपनी जान गंवाने वाले डिपो धारकों के परिवार के सदस्य को अनुकंपा के आधार पर राशन डिपो आवंटित किया जाएं और उसके परिजन को 50 लाख रुपए की मुआवजा राशि दी जाए। वहीं प्रति राशन डिपो की संख्या 300 से बढ़कर 600 की जाए व राशन वितरण पर पूर्व की भांति 10 रुपए तथा सरसों के तेल वितरण पर 5 रुपए प्रति लीटर कमीशन दिया जाए।

# मिट्टी का काम करने वाले ठेकेदारों व मजदूरों ने प्रदर्शन किया

**कैथल ( हिंस )।** मिट्टी का काम करने वाले ठेकेदारों और मजदूरों ने खेत से मिट्टी ढुलाई करने के काम को खनन एवं भू-विज्ञान विभाग से बाहर करने की मांग को लेकर बुधवार को लघु सचिवालय में प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का नेतृत्व जिले सिंह प्रजापत ने किया। ऑल हरियाणा अर्थ मूवर्स एसोसिएशन हरियाणा के बैनर तले किए गए प्रदर्शन के बाद अपनी मांगों का ज्ञापन डीसी को सौंप दिया। इस दौरान बोलते हुए जिले सिंह प्रजापति ने कहा कि मिट्टी के कार्य को माइनिंग विभाग के अंतर्गत लाया गया है। उसके बाद जिन किसानों के खेत ऊंचे नीचे हैं,उन्हें विभाग के नियमों के अंतर्गत अपने खेतों को समतल

करने के लिए भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। रामफल ने कहा कि जेसीबी मशीन व ट्रैक्टर ट्राली से जो लोग मिट्टी का कार्य कर रहे हैं सरकार ने उनका रोजगार छीनने के लिए एनजीटी के नियमों में बदलाव किया है, जिसमें मिट्टी का कार्य करने के लिए अब उन्हें माइनिंग विभाग से एनओसी लेनी अनिवार्य कर दी है। विभाग के द्वारा निर्धारित नियमों का पालन न करने पर उनके ऊपर दो लाख रुपए से शुरू होकर पांच लाख, दस लाख व बीस लाख रुपए तक जुर्माना किया जाता है। जिसको भरना उनके लिए असंभव है। ज्ञापन में कहा गया है कि 7 जनवरी को जींद में हुए ऑल हरियाणा अर्थ मूवर्स एसोसिएशन व किसानों के फैसला लिया गया है कि अगर 20 जनवरी तक सरकार मिट्टी के काम करने को मीनिंग से बाहर नहीं करती तो यूनियन व किसान मिट्टी से संबंधित कार्यों को बिल्कुल रोक देंगे। जिसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी। गरीब किसान, मिट्टी के कार्य से जुडे गरीब परिवार व जेसीबी ट्रैक्टर, हाईवा से मिट्टी ढुलाई करके अपनी रोजी रोटी चलाने वाले लोगों की दयनीय स्थिति को देखते हुए मिट्टी को माइनिंग विभाग से बाहर किया जाए।

# पायलट का आरोप, भाजपा में मेहनत करने वाले कई नेताओं को नहीं मिले सही विभाग

**जयपुर ( हिंस )।** पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट और कांग्रेस विधायक ने भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा है कि पार्टी की राजस्थान में नई-नई सरकार बनी है। भाजपा के कई नेताओं ने ज्यादा मेहनत की थी, लेकिन उनकी मेहनत के हिसाब से उनको विभाग नहीं दिए गए। उन्होंने भाजपा नेताओं को बयान देने में संयम बरतने की सलाह देते हुए कहा कि भाजपा के मंत्री और बड़े-बड़े लोग आज अलग-अलग तरह के बयान दे रहे हैं, जबान फिसल रही है। हालांकि ये बीजेपी का अंदरूनी मामला है, लेकिन भाजपा

नेतृत्व को इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। राजस्थान प्रदेश युवा कांग्रेस द्वारा न्याय यात्रा 2024 को लेकर प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में हिस्सा लेने प्रदेश कार्यालय पहुंचे पायलट बुधवार को पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इंडिया एलाइंस के सभी पार्टनर्स का एक ही मकसद एनडीए को परास्त करना है। दस साल देश में जनता भाजपा को देख चुकी है, अब भाजपा को परास्त करने का समय आ चुका है। हम सभी लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट गए हैं। राम मंदिर को लेकर भाजपा द्वारा राजनीति किए जाने संबंधी विपक्ष के आरोपों पर पायलट ने कहा कि श्रीराम एक आस्था का विषय है। भाजपा राममंदिर को राजनीति से ना जोड़े। मेरा मन करेगा जब मैं मंदिर जाऊंगा। मुझे किसी के न्योते की जरूरत नहीं है ।

# पंजाब के मंत्री अमन अरोड़ा ने अपनी सजा को कोर्ट में दी चुनौती

**चंडीगढ़ ( हिंस )।** पंजाब के कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा ने बुधवार को घरेलू हिंसा मामले में सुनाम की स्थानीय कोर्ट के दो साल की सजा के फैसले को संगरूर की जिला कोर्ट में चुनौती दी है। जिला कोर्ट में इस केस की सुनवाई 15 जनवरी को होगी। दरअसल, अमन अरोड़ा का अपने जीजा राजिंदर दीपा से पारिवारिक झगड़ा हुआ था। जीजा ने आरोप लगाया कि वर्ष 2008 में अमन अरोड़ा ने उनके घर में घुसकर मारपीट की। इस मामले में अमन अरोड़ा और अन्य पर केस दर्ज हुआ था। जिसका फैसला 15 साल बाद आया। सुनाम कोर्ट ने अब मंत्री बन चुके अमन अरोड़ा समेत नौ लोगों को दो साल की सजा सुनाई। इस फैसले को अमन ने जिला कोर्ट में चुनौती दी है। इस बीच पंजाब के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने मुख्यमंत्री भगवंत मान को 5 जनवरी को पत्र भेजकर कहा कि कोर्ट ने अमन अरोड़ा को दो साल की सजा सुनाई है। उन्होंने अपने पत्र में लिखा कि सुप्रीम कोर्ट ने लिली थॉमस केस में वर्ष 2013 में आदेश दिए थे कि किसी भी मंत्री या विधायक को दोषी ठहराने पर मंत्री पद से हटाना होगा। इसके बावजूद अमन अरोड़ा मंत्री बने हुए हैं। इस सजा के खिलाफ कोर्ट से कोई स्टे भी नहीं है। वहीं, अमन अरोड़ा मंत्री की हैसियत से अमृतसर में गणतंत्र दिवस पर तिरंगा फहराने जा रहे हैं, जो बिल्कुल भी उचित नहीं है। गणतंत्र दिवस एक महत्वपूर्ण दिन है। ऐसे में एक अयोग्य विधायक को देश की ऐसी जिम्मेदारी सौंपना कानूनी मर्यादा को चोट पहुंचाती है। इससे गलत मैसेज जाता है।

# अब आर-वॉलेट पेमेंट सिस्टम से भी यात्री ले सकेंगे एटीवीएम से जनरल टिकट

**अजमेर ( हिंस )।** रेलवे द्वारा आर वॉलेट पेमेंट सिस्टम से ऑटोमेटिक टिकट वेंडिंग मशीन (एटीवीएम) से जनरल टिकट प्राप्त करने की सुविधा प्रारंभ की है। अब आर वॉलेट पेमेंट सिस्टम से भी यात्री एटीवीएम से जनरल टिकट ले सकेंगे। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सुनील कुमार महला के अनुसार आर-वॉलेट के माध्यम से एटीवीएम से टिकट ले सकेंगे, इसके लिए सेंटर फॉर रेलवे इंस्टिट्यूट (क्रिस) ने सिस्टम में आवश्यक बदलाव कर दिए हैं। यात्री आर-वॉलेट के माध्यम से एटीवीएम में टिकट तभी बुक कर सकता है जब वह यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पर पंजीकृत हो और आर-वॉलेट खाते में पर्याप्त शेष राशि उपलब्ध हो। आर- वालेट पेमेंट मोड के उपयोग द्वारा एटीवीएम मशीनों पर टिकट प्राप्त करने के लिये आवश्यक प्रक्रिया के अंतर्गत सर्वप्रथम यात्री द्वारा एटीवीएम मशीन पर वांछित टिकट-प्रकार का चयन करना

होगा फिर एटीवीएम एप्लीकेशन पर पेमेंट मोड आर-वालेट का चयन करना होगा।यात्री को यूटीएस ऑन मोबाईल एप से लिंक मोबाइल नंबर को एटीवीएम मशीन पर ओटीपी के माध्यम से वेरीफाई करना होगा। मोबाइल नंबर एटीवीएम एप्लीकेशन पर वेरीफाई होते ही टिकट प्रिंट हो जायेगा। यदि यात्री आर-वॉलेट के माध्यम से बुक किया गया टिकट रद्द कर देता है, तो रिफंड राशि उसके आर-वॉलेट खाते में जमा कर दी जाएगी। उल्लेखनीय है कि एटीवीएम में आर-वॉलेट के माध्यम से टिकट की बुकिंग पर भी 3 प्रतिशत बोनस की सुविधा लागू रहेगी जो मौजूदा यूटीएस ऑन मोबाइल ऐप पर लागू है। रेलवे प्रशासन द्वारा अजमेर में आयोजित 812 वें उर्स मेले में यात्रियों की सुविधा के लिए तिरूपति-अजमेर-तिरूपति उर्स किराया स्पेशल रेल सेवा (01 ट्रिप) व नांदेड़-अजमेर-नांदेड उर्स किराया स्पेशल (01 ट्रिप) रेल सेवाओं का संचालन किया जा रहा है।

# कैथल में दसवें दिन भी थमे रहे ट्रैकों के पहिए, हिट एंड रन कानून का विरोध जारी

## सरकार से लिखित आश्वासन देने की मांग कर रहे हैं ट्रांसपोर्टर्स

**कैथल ( हिंस )।** हिट एंड रन कानून के विरोध में एक जनवरी से जारी ट्रांसपोर्टर्स की हड़ताल दसवें दिन भी जारी रही। बुधवार को भी ट्रैकों के पहिए थमे रहे। कैथल में ट्रक यूनियन अनाज मंडी व अन्य स्थानों पर चालकों ने अपने ट्रक खड़े रखे। फिलहाल ट्रक चालकों की हड़ताल खत्म होने के आसार नजर नहीं आ रहे। ट्रांसपोर्टर का कहना है कि जब तक सरकार कानून को वापस लेने का आश्वासन लिखित में नहीं देती। वह हड़ताल समाप्त नहीं करेंगे। उनकी मांग है कि सरकार उनको जो भी आश्वासन देना चाहती है वह लिखित में दें। पिछले 10 दिन से लगातार जारी ट्रांसपोर्टरों की हड़ताल के कारण जिले में करीब 30 करोड़ रुपए से अधिक का कारोबार प्रभावित हुआ है। ट्रक यूनियन के पदाधिकारियों का कहना है कि सरकार उन्हें केवल मौखिक रूप से ही आश्वासन दे रही है, लेकिन लिखित में कोई आश्वासन नहीं दिया है। भाईचारा ट्रक यूनियन के प्रधान रामफल और प्रबंधक महावीर खटकड़ ने बताया कि सरकार ने यूनियन के केंद्रीय नेतृत्व को केवल बातचीत के माध्यम से ही मौखिक तौर पर कानून लागू न करने का आश्वासन दिया है। जबकि उनकी मांग है इस कानून को अभी तक लागू न करने के लिए लिखित में कुछ सौंपा जाए।

# हिंदू संगठनों ने कार सेवकों के परिवारों को घर पहुंच किया सम्मानित

## श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए सब कुछ न्यौछावर करने वालों को मिला निमंत्रण

**गुरुग्राम ( हिंस )।** श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए चली आंदोलन की बयार में अपना सर्वस्व दांव पर लगाने वाले कार सेवकों को हिंदू व सामाजिक संगठनों ने सम्मानित किया। मौजिज लोगों ने कार सेवकों को अयोध्या में राम मंदिर निर्माण की राह प्रशस्त करने वाली सेना के सदस्य बताकर उन्हें नमन किया। सभी कार सेवकों को निर्माणाधीन श्रीराम मंदिर का सजीव चित्र भी विशेष तौर पर भेंट किया गया। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ व कई दूसरे सामाजिक संगठनों की गुरुग्राम जिले की टीम ने वर्ष 1990 में कार सेवा के लिए जाने वाले लोगों के प्रयासों को मान देने के लिए विशेष अयोजन किया। इसके तहत उच्च पदाधिकारियों की टीम कार सेवकों के घर पहुंची। टीम के सदस्यों ने परिजनों की मौजूदगी में कार सेवकों को राम नाम अंकित अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया। अयोध्या से आए पूजित अक्षत, निर्माणाधीन मंदिर का

सजीव चित्र, पांच दीए व पत्रक समेत कई सामग्री परिजनों को सौंपी। इस मौके पर शिक्षाविद पूर्व वाइस चांसलर डॉक्टर अशोक दिवाकर ने कहा कि राम मंदिर निर्माण कार सेवकों के अपरिमित प्रयासों की नींव पर खड़ा किया जा रहा है। महानगर संघचालक जगदीश ने कहा कि कार सेवकों के मंदिर बनने के अटूट विश्वास और मंदिर निर्माण के प्रयासों में अपना सर्वस्व दांव पर लगा देने के जज्बे के कारण ही आज हिंदुस्तान ही नहीं, पूरे विश्व का मंदिर बनते देखने का सपना साकार हो पाया है। विभाग प्रचार प्रमुख अनिल कश्यप ने बताया कि इलाके के अधिकांश कार सेवक मुरादाबाद व गाजियाबाद की अस्थाई जेल में रखे गए थे। इन्हें बिना किसी कारण एक पखवाड़े से अधिक बंद रखा गया। उनके अनुसार जो कार सेवक अब हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, उनके घर विशेषत: पहुंचकर उनके परिजनों को सम्मानित किया गया। मास्टर रति राम ने बताया कि राम मंदिर आंदोलन के समय विपरीत परिस्थितियों में राम भक्तों का उत्साह देखते ही बनता था। कार सेवक रहे मास्टर रतिराम, गोपीचंद गहलोत (पूर्व डिप्टी स्पीकर), सरपंच सुभाष त्यागी, ब्रह्मदत्त वशिष्ठ, ऋषि त्यागी, बिनेश त्यागी, टीसी मित्तल, सरपंच सुभाष मित्तल, प्रेमपाल सलूजा, राज निर्भीक, अजय सिंघल और स्वर्गीय देवेंद्र वशिष्ठ, स्वर्गीय सुनील वशिष्ठ, स्वर्गीय कंवरभान बजाज व स्वर्गीय रमन रोहिला के परिजनों को भी सम्मानित किया गया।

# देश में सबसे ज्यादा बिकती है भारत ब्रांड की चना दाल सरकारी कंपनी की बाजार में 25 प्रतिशत हिस्सेदारी

**नई दिल्ली।**

भारत ब्रांड के तहत खुदरा बिक्री की जाने वाली सरकार द्वारा खरीदी गई चना दाल की हिस्सेदारी बढ़ गई है। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह ने कहा कि भारत ब्रांडके चना दाल की बिक्री में तेजी आई है। भारत ब्रांड 4 महीने पहले लॉन्च हुआ था। अभी बाजार में इसकी हिस्सेदारी 1/4 हो गई है।

**अब भारत ब्रांड रेलू उपभोक्ताओं के बीच सबसे अधिक बिकने वाला ब्रांड बनकर उभरा है** – रोहित कहते हैं कि अक्टूबर 2023 में लॉन्च की गई भारत-ब्रांडेड चना दाल को बढ़त हासिल है। इसकी वजह है कि इसकी कीमत अन्य ब्रांडों के लगभग 80 रुपये प्रति किलोग्राम की तुलना में 60 रुपये प्रति किलोग्राम कम है। सिंह ने बताया कि लोगों द्वारा अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। देश में परिवारों के बीच चना दाल (सभी ब्रांड शामिल) की 1.8 लाख टन मासिक खपत में से एक-चौथाई भारत ब्रांड चना दाल है। अक्टूबर 2023 से लगभग 2.28 लाख टन भारत ब्रांड चना दाल बेची गई है। इसकी मासिक औसत बिक्री लगभग 45,000 टन थी।

**यहां मिल रही है भारत ब्रांड की दाल** – भारत ब्रांड दाल की शुरुआत में बिक्री 100 खुदरा केंद्रों के माध्यम से शुरू हुई। अब इसकी बिक्री 21 राज्यों के 139 शहरों को कवर करते हुए 13,000 तक पहुंच गई है। अब यह मोबाइल और फिक्स्ड खुदरा स्टोर दोनों में मिल रहा है। इस ब्रांड ने दालों की महंगाई को कम करने में मदद मिली है। चने की कीमतों को नीचे लाने के लिए बफर स्टॉक का उपयोग करने से अन्य दालों की कीमतों पर भी इसका असर पड़ा है। सरकार घरेलू उपलब्धता को बढ़ावा देने और कीमतों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से पिछले कुछ वर्षों से चना सहित कई प्रकार की दालों का बफर स्टॉक बनाए रख रही है। यह पहली बार है, सरकार नेफेड, एनसीसीएफ, केंद्रीय भंडार और पांच राज्य सहकारी समितियों के माध्यम से भारत ब्रांड के तहत चना दाल की खुदरा बिक्री कर रही है। इन एजेंसियों को बफर स्टॉक से कच्चा चना 47.83 रुपये प्रति किलोग्राम की रियायती दर पर इस शर्त के साथ दिया जा रहा है कि उन्हें खुदरा कीमत 60 रुपये प्रति किलोग्राम से कम नहीं होनी चाहिए।

एजेंसियां सरकार से कच्चा चना खरीदती हैं, उसकी मिलिंग करती हैं और भारत ब्रांड के तहत खुदरा बिक्री करने से पहले उसे पॉलिश करती हैं। वर्तमान में 15 लाख टन चना सरकारी बफर स्टॉक में है।

## न्यूज ब्रीफ

### अंतरिक्ष से भी दिखेगा कच्छ में बन रहा ग्रीन एनर्जी पार्क, अदाणी ने किया इतने निवेश का एलान

**नई दिल्ली ।** अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी ने वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन के दौरान राज्य में ग्रीन एनर्जी और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अगले पांच वर्षों में 2 लाख करोड़ रुपये (24 अरब डॉलर) के निवेश का एलान किया। अदाणी ने कहा कि इस निवेश से राज्य में लगभग एक लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा हो सकती हैं। उन्होंने आगे कहा कि शिखर सम्मेलन के पिछले संस्करण में कंपनी ने 55,000 करोड़ रुपये के निवेश की प्रतिबद्धता जताई थी। उन्होंने कहा कि इसमें से कंपनी पहले ही 50,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश कर चुकी है। अदाणी समूह के मुखिया गौतम अदाणी ने कहा कि कंपनी वर्तमान में कच्छ में 25 वर्ग किलोमीटर में फैले 30 गीगावॉट क्षमता के साथ एक ग्रीन एनर्जी पार्क का निर्माण कर रही है, जो अंतरिक्ष से भी दिखाई देता है। अदाणी ने कहा कि 2014 के बाद से भारत ने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 185 प्रतिशत और प्रति व्यक्ति आय में 165 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की है, जो भू-राजनीतिक और महामारी से जुड़ी चुनौतियों को देखते हुए अद्वितीय है।

### श्रीलंका में जल्द शुरू होगी यूपीआई प्रणाली, पिछले साल दोनों देशों के बीच हुआ था समझौता

**कोलंबो ।** भारत ने श्रीलंका के साथ यूपीआई भुगतान प्रणाली को जल्द शुरू करने पर चर्चा की। भारत के उच्चायुक्त संतोष झा और सेंट्रल बैंक ऑफ श्रीलंका (सीबीएसएल) के गवर्नर डॉ. नंदलाल वीरसिंघे के बीच हुई बैठक में इसके क्रियान्वयन पर चर्चा हुई। बैठक के बाद संतोष झा ने कहा, गवर्नर के साथ बैठक में दोहराया गया कि श्रीलंका के आर्थिक सुधार में भारत एक दृढ़ भागीदार बना रहेगा। श्रीलंका में यूपीआई भुगतान प्रणाली के शीघ्र लॉन्च, भारतीय रुपये के जरिये व्यापार में वृद्धि और श्रीलंका की ऋण पुनर्गठन प्रक्रिया पर सकारात्मक चर्चा हुई। मालूम हो कि जुलाई 2023 में दो दिवसीय भारत यात्रा के दौरान श्रीलंका के राष्टपति रानिल विक्रमसिंघे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) स्वीकृति के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इसके तहत दोनों देशों ने यूपीआई और लंका पे को जोड़कर फिनटेक सेक्टर कनेक्टिविटी पर काम करने की प्रतिबद्धता जताई थी। भारत-श्रीलंका ने मिलकर रेलवे नेटवर्क को उन्नत करने के लिए पूरे द्वीप राष्ट में 9.127 करोड़ डॉलर की लागत से कई कार्य शुरू किए हैं। इससे वस्तुओं-सेवाओं की गतिशीलता बढ़ेगी व आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा मिलेगा। भारतीय उच्चायोग ने कहा कि श्रीलंका के परिवहन, राजमार्ग और मास मीडिया मंत्री डॉ. बंडुला गुणवर्धने तथा श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त संतोष झा ने कई कार्यों का शुभारंभ किया। परिवहन मंत्री गनवार्डेना ने श्रीलंका को विशेष रूप से परिवहन क्षेत्र में दिए गए समर्थन के लिए भारत को धन्यवाद दिया।

### तीन माह बाद फिर आरबीआईके 6 फीसदी दायरे से बाहर निकल जाएगी खुदरा महंगाई

**नई दिल्ली ।** तीन महीने तक काबू में रहने के बाद खुदरा महंगाई दिसंबर, 2023 में एक बार फिर आरबीआई के छह फीसदी के उच्च दायरे से बाहर निकल सकती है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडिया इकनॉमी (सीएमआईई) ने एक रिपोर्ट में दावा किया है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित महंगाई दर दिसंबर में चार महीने के उच्च स्तर 6.25 फीसदी पर पहुंच सकती है। नवंबर, 2023 में यह 5.55 फीसदी रही थी। इससे पहले अगस्त, 2023 में खुदरा महंगाई की दर 6.83 फीसदी रही थी। रिपोर्ट में कहा गया है कि मासिक आधार पर दिसंबर के दौरान कुल कीमतों में सिर्फ 0.11 फीसदी की तेजी देखी गईहै इसके बावजूद पिछले साल दिसंबर में कम आधार रहने के कारण दिसंबर, 2023 में सीपीआई आधारित महंगाई बढ़ने की आशंका है। अंडा-मछली-मांस की महंगाई दर 2.50 से बढ़कर 3.40 फीसदी पहुंचेगी। चीनी की महंगाईभी बढ़कर 6.81 फीसदी हो जाएगी। रिपोर्ट के मुताबिक, सीपीआई महंगाई में करीब 40 फीसदी का योगदान देने वाली खाद्य वस्तुओं की महंगाई दिसंबर, 2023 में बढ़कर 10.60 फीसदी तक पहुंच सकती है।

# ईस्ट इंडिया कंपनी के दौर में पहली बार पेश हुआ भारत का बजट, क्या है ब्लैक व ड्रीम बजट का किस्सा

**नई दिल्ली ।**

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का आखिरी बजट एक फरवरी 2024 को पेश करेंगी। इस साल आम चुनाव होने हैं इस लिए उससे पहले आने वाला यह अंतरिम बजट कई मायनों में अहम है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 के तहत हर वित्तीय वर्ष की शुरुआत से पहले सरकार को संसद में केंद्रीय या अंतरिम बजट पेश करना जरूरी होता है। अंतरिम बजट चुनावी साल में पेश किया जाता है। बजट किसी वित्तीय वर्ष में होने वाली आमदनी और खर्चों से जुड़ा दस्तावेज है। वित्तीय वर्ष हर साल 1 अप्रैल से शुरू होकर अगले साल 31 मार्च को समाप्त होता है। सरकार की ओर से बजट पेश करने की शुरुआत 19वीं सदी में ही हो गई थी।

**कहां से आया 'बजट' शब्द** – बजट शब्द फ्रेंच भाषा के शब्द से लिया गया है। इसका अर्थ होता है छोटा बैग। फ्रेंच भाषा में यह शब्द लैटिन शब्द बुल्गा से लिया गया है। इसका अर्थ है अर्थ है चमड़े का थैला। प्राचीन समय में बड़े व्यापारी अपने सारे मौद्रिक दस्तावेज एक थैले में रखते थे। इसी तरह धीरे-धीरे इस शब्द का प्रयोग संसाधनों को जुटाने के लिए किए गए हिसाब-किताब से जुड़ गया। इस तरह सरकारों के साल भर के आर्थिक बही-खाते को नाम मिला बजट।

**ईस्ट इंडिया कंपनी ने पेश किया था पहला बजट** – देश का पहला बजट 163 साल पहले अंग्रेजी शासन के दौरान पेश किया गया था। इसे स्कॉटिश अर्थशास्त्री और राजनीतिज्ञ जेम्स विल्सन ने ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से ब्रिटिश क्राउन के समक्ष पेश किया था। इस बजट को 7 अप्रैल 1860 को पेश किया गया था। केंद्रीय बजट के शुरुआती 30 वर्षों में इसमें इंफ्रास्ट्रक्चर नाम के शब्द की कोई चर्चा नहीं थी। बजट में यह शब्द पहली बार 20 शताब्दी की शुरुआत में शामिल किया गया।

**आजाद भारत का पहला बजट कब पेश किया गया** – आजाद भारत का पहला बजट 16 नवंबर 1947 को पेश किया गया था। इसे देश के पहले वित्त मंत्री आरके शनुखम चेट्टी ने पेश किया था। हालांकि यह एक तरह से भारतीय अर्थव्यवस्था की समीक्षा रिपोर्ट थी। इस बजट में किसी नए टैक्स की घोषणा नहीं की गई थी। इस बजट की कुल राशि का लगभग 46 प्रतिशत लगभग 92.74 करोड़ रुपये रक्षा सेवाओं के लिए अलॉट किया गया था।

**एक वैज्ञानिक और देश के बजट का कनेक्शन!**

– माना जाता है कि स्वतंत्र भारत के बजट की परिकल्पना प्रो. प्रशांत चंद्र महालनोबिस ने की थी। स्वतंत्र भारत के बजट की अवधारणा उन्होंने ही तैयार की थी। वे एक भारतीय वैज्ञानिक और सांख्यविद् थे। उन्होंने लन्दन के कैंब्रिज विश्वविद्यालय से भौतिकी और गणित दोनों विषयों से डिग्री हासिल की थी। वे भारत के योजना आयोग के सदस्य भी रह चुके हैं। आर्थिक योजना और सांख्यिकी विकास के क्षेत्र में प्रशांत चन्द्र महालनोबिस के उल्लेखनीय योगदान के सम्मान में भारत सरकार उनके जन्मदिन 29 जून को हर वर्ष सांख्यिकी दिवस के रूप में मनाती है। देश का केंद्रीय बजट वर्ष 1950 में सदन में पेश होने से पहले ही लीक हो गया था। उसके बाद बजट की छपाई का काम राष्ट्रपति भवन से मिंटो रोड स्थित एक प्रेस में शिफ्ट कर दिया गया था। फिर साल 1980 से बजट की छपाई नॉर्थ ब्लॉक स्थित सरकारी प्रेस से की जाने लगी।

**हिंदी में बजट की शुरुआत कब हुई** – पहले बजट से जुड़े सारे दस्तावेज सिर्फ अंग्रेजी में ही छपते थे। साल 1955-56 से इसे अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में मुद्रित किया जाने लगा।

**भारत के तीन प्रधानमंत्रियों ने खुद पेश किया बजट** – देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने वर्ष 1958-1959 का बजट बतौर प्रधानमंत्री पहली बार पेश किया। आमतौर पर देश के वित्त मंत्री ही बजट पेश करते हैं। पंडित नेहरू के अलावा इंदिरा गांधी ने वर्ष 1970-71 का बजट बतौर पीएम पेश किया। वे देश का केंद्रीय बजट पेश करने वालीं पहली महिला भी थीं। उनके बेटे राजीव गांधी ने भी वित्तीय वर्ष 1987-88 का बजट सदन में बतौर पीएम पेश किया।

**सबसे अधिक बार बजट पेश करने का रिकॉर्ड किसके नाम** – सबसे अधिक बार देश का बजट पेश करने का श्रेय पूर्व वित्त मंत्री मोरारजी देसाई को जाता है। उन्होंने इसे 10 बार पेश किया। उसके बाद पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने 9 बार, पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 8 बार, यशवंत सिन्हा ने 8 बार और पूर्व पीएम मनमोहन सिंह ने 6 बार बजट पेश किया।

**इंदिरा गांधी के कार्यकाल का ये बजट कहलाता है 'ब्लैक बजट** – वर्ष 1973-74 के बजट को देश का ब्लैक बजट कहा जाता है। इसे तत्कालीन वित्त मंत्री यशवंत राव बी चव्हाण ने पेश किया था। यह बजट 550 करोड़ रुपये के घाटे का था। यह उस समय तक का सबसे बड़ा बजट घाटा था। इस बजट पर वर्ष 1971 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध और खराब मानसून का असर दिखा था।

**देश के बदलाव में सबसे अहम बजट पेश करने का श्रेय इस 'पीएम' के नाम** – देश के प्रधानमंत्री रहे मनमोहन सिंह ने पीवी नरसिंह राव की सरकार में वित्त मंत्री रहने के दौरान वर्ष 1991-92 का बजट पेश किया था। इस बजट को भारत के बदलाव के लिहाज से सबसे अहम बजट माना जाता है। इसी बजट में भारतीय बाजार को आर्थिक रूप से खोल दिया गया था ताकि विदेशी निवेश को आमंत्रित किया जा सके। माना जाता है कि यहीं से देश की आर्थिक समृद्धि की शुरुआत हुई थी।

**एनडीए के इस वित्त मंत्री ने पेश किया 21वीं सदी का पहला बजट** – वित्तीय वर्ष 2000-01 का बजट तत्कालीन वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने पेश किया था। इसे देश का मिलेनियम बजट के नाम से जाना जाता है। यह 21वीं सदी का पहला बजट था। इस बजट में की गई घोषणाओं के कारण देश के आईटी सेक्टर में क्रांति आई। पहले देश का केंद्रीय बजट सदन में शाम पांच बजे से पेश किया जाता था। शाम पांच बजे बजट पेश करने का कारण यह था कि उस समय ब्रिटेन में 11.30 बज रहे होते थे। ब्रिटिश सरकार की तरफ से शुरू की गई परंपरा को आजादी के बाद भी निभाया जाता रहा। यशवंत सिन्हा ने 2001 में इसमें बदलाव किया। आगे चलकर मोदी सरकार ने हर साल 28 फरवरी को पेश होने वाले आम बजट को एक फरवरी को पेश करना शुरू किया।

**हलवा सेरेमनी क्या है** – जब बजट की छपाई पूरी हो जाती है और उसे सील किया जाता है उस दौरान वित्त मंत्रालय और उसके कर्मी एक खास सेरेमनी में शामिल होते हैं। दरअसल इस मौके पर कुछ मीठा खाने की अनूठी परंपरा है।

## सोना-चांदी की कीमतों में गिरावट

# सोना 62 हजार और चांदी 71 हजार के करीब आई

**नई दिल्ली।**

**सोने-चांदी के दामों में गिरावट देखने को मिली है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के मुताबिक, 10 ग्राम सोना 168 रुपए सस्ता होकर 62,247 रुपए पर आ गया है। वहीं 18 कैरेट सोने का भाव 46,685 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया है।**

चांदी में भी गिरावट देखने को मिली है। ये 545 रुपए सस्ती होकर 71,295 रुपए प्रति किलो ग्राम पर आ गई है। इससे पहले ये 71,840 रुपए पर थी। बीते महीने 4 दिसंबर को चांदी 77 हजार के पार पहुंच गई थी।

### 2023 में 8 हजार रुपए से ज्यादा महंगा हुआ सोना

साल 2023 की शुरुआत में सोना 54,867 रुपए प्रति ग्राम पर था जो 31 दिसंबर को 63,246 रुपए प्रति ग्राम पर पहुंच गया था। यानी साल 2023 में इसकी कीमत में 8,379 रुपए (16 प्रतिशत) की तेजी आई। वहीं चांदी भी 68,092 रुपए से बढ़कर 73,395 रुपए प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

### हमेशा सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें

अगर आप सोना खरीदने का प्लान बना रहे हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि वो ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही हो। जैसे आधार कार्ड पर 12 अंकों का कोड होता है, उसी तरह से सोने पर 6 अंकों का हॉलमार्क कोड होता है। इसे हॉलमार्क यूनीक आइडेंटिफिकेशन नंबर कहते हैं। ये नंबर अल्फान्यूमेरिक यानी कुछ इस तरह से हो सकता है-जेड4524। हॉलमार्किंग के जरिए ये पता करना संभव हो गया है कि कोई सोना कितने कैरेट का है।

# आरआईएल का उद्देश्य सात करोड़ गुजरातियों के सपने को पूरा करना, बोले- मुकेश अंबानी

**नई दिल्ली।**

**रिलायंस इंडस्ट्रीज के प्रमुख मुकेश अंबानी ने वाइब्रेंट गुजरात समिट 2024 को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आरआईएल एक गुजराती कंपनी थी, है और हमेशा रहेगी। इसका उद्देश्य 7 करोड़ गुजरातियों के सपनों को पूरा करना है। वाइब्रेंट गुजरात समिट 2024 के दौरान बोलते हुए रिलायंस इंडस्ट्रीज के मुखिया मुकेश अंबानी ने कहा कि जब निवेशक नए भारत के बारे में सोचते हैं, तो वे एक नए गुजरात के बारे में सोचते हैं।**

रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी ने वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन के 10वें संस्करण में आगंतुकों का गर्मजोशी से स्वागत किया। इसे विश्व स्तर पर सबसे प्रतिष्ठित निवेशक

शिखर सम्मेलनों में से एक माना जाता है। यह शिखर सम्मेलन दो दशकों से जारी है। प्रधानमंत्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में यह विकसित हो रहा है और प्रमुखता से बढ़ रहा है।

अंबानी ने शिखर सम्मेलन की अनूठी विशिष्टता को स्वीकार करते हुए, इसकी अद्वितीय निरंतरता और स्थायी सफलता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन की निरंतर सफलता आर्थिक वृद्धि और विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रधान मंत्री मोदी की अटूट दृष्टि और निरंतर प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

# यूपी समेत पांच बड़े राज्यों में खपत 18 प्रतिशत तक बढ़ी, संग्रह के लिहाज से गुजरात-बंगाल में तेज गिरावट

**नई दिल्ली ।**

जीएसटी के लिहाज से चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-दिसंबर अवधि में उत्तर प्रदेश समेत पांच प्रमुख राज्यों में खपत 18 फीसदी तक बढ़ी है। हालांकि, दो बड़े राज्यों पश्चिम बंगाल और गुजरात में खपत में तेज गिरावट आई है। जीएसटी संग्रह के लिहाज से ये सातों राज्य महत्वपूर्ण हैं। कुल संग्रह में इनका 96.8 फीसदी योगदान है। जीएसटी ऐसा कर है, जो अर्थव्यवस्था में खपत में उतार-चढ़ाव दिखाता है। यानी हर व्यक्ति जितनी खपत करेगा, उसी आधार पर जीएसटी संग्रह होता है।

### शीर्ष-10 राज्यों का करीब तीन चौथाई योगदान

कुल संग्रह में शीर्ष-10 राज्यों का तीन चौथाई योगदान है। आठ राज्य ऐसे हैं, जो राष्ट्रीय औसत से ज्यादा योगदान कर रहे हैं। इनमें महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, यूपी, हरियाणा, तेलंगाना, मध्य प्रदेश व उत्तराखंड

हैं। इनकी विकास दर 15.2 फीसदी रही है।

### महाराष्ट्र...में सबसे ज्यादा रही बढ़ोतरी

महाराष्ट्र में जीएसटी संग्रह अप्रैल-दिसंबर में अवधि में एक साल पहले की तुलना में 18.2 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ2.68 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। कर्नाटक में यह संग्रह 18.1 फीसदी बढ़कर 1.17 लाख करोड़ पहुंच गया। तमिलनाडु में संग्रह 16.9 फीसदी बढ़कर 1.04 लाख करोड़, यूपी में 17.3 फीसदी बढ़कर 85,870 करोड़ व हरियाणा में 17.6 फीसदी बढ़कर 78,400 करोड़ पहुंच गया। पश्चिम बंगाल के संग्रह में महज 9.8 फीसदी व गुजरात के संग्रह में 9.5 फीसदी तेजी रही। विश्लेषकों की मानें तो ओडिशा, राजस्थान, प. बंगाल, गुजरात, छत्तीसगढ़ जैसे बड़े राज्यों में खपत बढ़ती है तो संग्रह में तेजी देखने को मिल सकती है।

# आबादी बढ़ने से देश में 2036 तक अतिरिक्त 6.4 करोड़ घरों की जरूरत', क्रेडाई-लाइसिस फोरास की रिपोर्ट

**नई दिल्ली।**

**लगातार बढ़ रही आबादी की मांग को पूरा करने के लिए देश में 2036 तक अतिरिक्त 6.4 करोड़ मकानों की जरूरत होगी। क्रेडाई-लाइसिस फोरास ने एक रिपोर्ट में कहा, तेजी से बढ़ती भारतीय आबादी व अर्थव्यवस्था के परिणामस्वरूप मकानों की मांग और आपूर्ति में तेजी आई है। साथ ही, मकान खरीदारों की क्रय क्षमता में भी सुधार हुआ है। वे अब बड़े मकान खरीदना चाहते हैं।**

क्रेडाई ने वाराणसी में आयोजित न्यू इंडिया समिट में डाटा एनालिटिक कंपनी लाइसिस फोरास के साथ मिलकर यह रिपोर्ट पेश की। संयुक्त रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में 2018 के दौरान कुल

2.9 करोड़ मकानों की कमी थी। कोरोना काल खत्म होने के बाद देशभर में आवासीय संपत्तियों की मांग में तेजी आई है। खास बात है कि महंगे होम लोन और आवासीय संपत्तियों की कीमतों में उछाल के बावजूद लोगों में बड़ा मकान खरीदने की धारणा सकारात्मक बनी हुईहै इन कारकों को देखते हुए देश में 2036 तक कुल 9.3 करोड़ आवासों की मांग होगी।

### छोटे शहरों से तेज मांग की उम्मीद

रिपोर्ट के मुताबिक, बड़े शहरों के साथ अब टियर-2 और टियर-3 (मझोले एवं छोटे) शहरों में मकानों की मांग बढ़ती दिखाई दे रही है। इससे मझोले और छोटे शहरों में आवास निर्माण में तेजी आएगी, जिसका सकारात्मक असर रियल एस्टेट उद्योग पर देखने को मिलेगा।

### रियल एस्टेट में पीई निवेश 26 फीसदी घटा

रियल एस्टेट में निजी इक्विटी (पीई) निवेश चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-दिसंबर अवधि में 26 फीसदी घटकर 2.65 अरब डॉलर रह गया। वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच विदेशी और घरेलू निवेशकों के सतर्कता से गिरावट आई है। 2022-23 की अप्रैल-दिसंबर अवधि में पीई निवेश 3.6 अरब डॉलर रहा था। एनारॉक कैपिटल की रिपोर्ट के मुताबिक, कुल पीई निवेश में 84 फीसदी इक्विटी के रूप में आया, जबकि कर्ज के रूप में था।

### विदेशी निवेशकों का बढ़ा हिस्सा

एनारॉक कैपिटल के एमडी-सीईओ शोभित अग्रवाल ने कहा, कुल पीई प्रवाह में विदेशी निवेशकों का हिस्सा 79 फीसदी से बढ़कर 86 फीसदी पहुंच गया। घरेलू निवेश हिस्सेदारी घटकर 14 फीसदी रह गई। अप्रैल-दिसंबर में घरेलू निवेशकों का निवेश 71.7 अरब डॉलर से घटकर 36 करोड़ डॉलर रह गया।

### पांच लाख करोड़ डॉलर की जीडीपी में भूमिका

लाइसिस फोरास के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक पंकज कपूर ने कहा, भारतीय रियल एस्टेट वर्तमान में एक अत्यंत अहम मोड़ पर है। इसमें निरंतर मांग और आपूर्ति जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। अर्थव्यवस्था को 5 लाख करोड़ डॉलर के लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए एक निश्चित मार्ग प्रशस्त कर रही है।

### आगे भी रहेगी मांग

मनोज गौड़, चेयरमैन, क्रेडाई ने कहा कि 2023 सभी रियल एस्टेट हितधारकों के लिए उल्लेखनीय वर्ष रहा। पूरे देशभर में 19,050 से ज्यादा रेरा पंजीकरण हुए। इनमें 45 फीसदी परियोजनाएं आवासीय श्रेणी में थीं। उम्मीद है कि आवासीय संपत्तियों की यह मांग 2024 व उसके बाद भी जारी रहेगी।

# राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा में फिल्म हनुमान के मेकर्स की अनूठी पहल

**-फिल्म की हर टिकट पर दान दिए जाएंगे 5 रुपये**

**मुंबई (ईएमएस)।** तेजा सज्जा की फिल्म हनुमान द्वारा दर्शकों को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा में दान करने के लिए अनूठी पहल की जा रही है। 12 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली इस फिल्म के दर्शकों से पांच रुपये दान स्वरुप लेकर समारोह में अर्पित किए जाएंगे। मीडिया में आई एक रिपोर्ट के अनुसार, मेगास्टार चिरंजीवी ने प्री-रिलीज इवेंट में कहा कि फिल्म मेकर्स हर टिकट पर 5 रुपये एक्स्ट्रा ले रहे हैं। हनुमान का प्री-रिलीज इवेंट रविवार को हैदराबाद में हुआ, जहां फिल्म के कलाकार और क्रू सभी थे। मेगास्टार चिरंजीवी इस इवेंट में गेस्ट थे, जहां उन्होंने यह घोषणा की। उन्होंने कहा कि हनुमान टीम को राम मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर एक जरूरी घोषणा करनी है। उन्होंने राम मंदिर के निर्माण के लिए अपनी फिल्म के हर टिकट से 5 रुपये दान करने का फैसला किया है। मैं उनकी ओर से इस खबर की घोषणा कर रहा हूं। एक नेक निर्णय लेने के लिए हनुमान की टीम को मेरी हार्दिक बधाई। फिल्म हनुमान का डायरेक्शन प्रशांत वर्मा ने किया है। फिल्म में लीड रोल्स में तेजा सज्जा, वरलक्ष्मी सरथकुमार, अमृता अय्यर और विनय राय हैं। यह फिल्म प्रशांत का अपना खुद का देसी सुपरहीरो यूनिवर्स बनाने की कोशिश है। पिछले महीने रिलीज हुए ट्रेलर ने दर्शकों को कहानी का हिंट दे दिया था, जहां तेजा एक दलित आदमी की भूमिका निभा रहे हैं जिसके पास कई सारे पावर्स होते हैं और अब उसे दुनिया को बचाने का काम सौंपा गया है। इस बीच, 22 जनवरी को होने वाले राम मंदिर के अभिषेक समारोह में फिल्मी सैलेब्स को भी आमंत्रित किया है। इसी क्रम में अनुभवी एक्टर रजनीकांत को अयोध्या में राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया गया था। साथ्ज्ञ ही बॉलीवुड एक्टर रणबीर कपूर और आलिया भट्ट को भी आमंत्रित किया गया है। उन्हें गुलदस्ते और राम जन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह का निमंत्रण दिया गया।

# रोंगटे खड़े करने वाला है फिल्म देवारा का टीजर, समंदर में हथौड़ा धोते दिखे एनटीआर

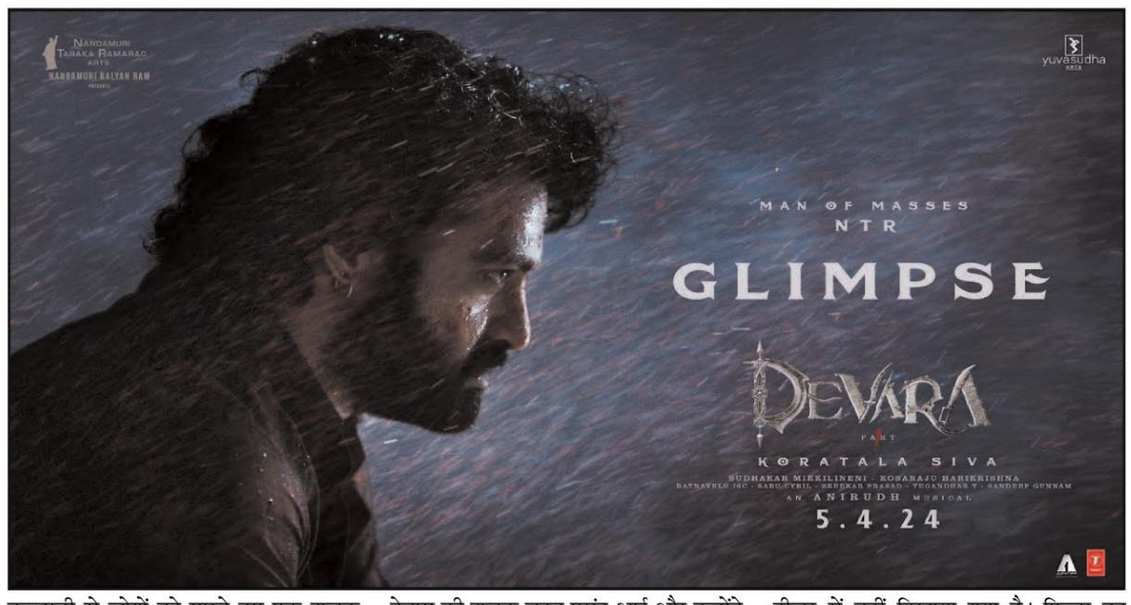


**मुंबई (ईएमएस)।** जूनियर एनटीआर की नई फिल्म देवारा का टीजर रिलीज हो गया है। इसमें एनटीआर समंदर में हथौड़ा धोते हुए दिखाए गए हैं। उनकी इस झलक को देखकर आपके रोंगटे खड़े हो सकते हैं। समंदर में खून-खराबे से भरे सीन्स और घायल करतीं आवाजें गजब का व्यू दे रही हैं। टीजर में जान्हवी कपूर और सैफ अली खान की झलक नहीं दिखाई दी है। टीजर में बादलों भरी रात में नावों के एक बेड़े को जहाज की ओर आते हुए दिखाया गया है। ये नावें समुद्री लुटेरों से भरी लग रही हैं। इसे देखकर एक फैन ने लिखा, देवारा की झलक शानदार लग रही है! एक बड़ी ब्लॉकबस्टर लोड हो रही है। जूनियर एनटीआर की आगामी तेलुगू फिल्म देवारा का टीजर सोमवार को रिलीज किया गया और इसके आते ही यह सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया। इस समय हैशटैग देवारा ग्लिम्पस ट्विटर पर ट्रेंड करने लगा क्योंकि आरआरआर एक्टर के फैंस इस धमाकेदार टीजर को देखने के बाद खुद को तारीफ करने से रोक नहीं पा रहे हैं, जिसमें एनटीआर का भयंकर रूप देखने को मिल रहा है। 1 मिनट 20 सेकंड लंबे देवरा के टीजर में नावें समुद्री लुटेरों से भरी लग रही हैं जो रस्सियों की मदद से जहाज पर चढ़ने की कोशिश कर रहे हैं और सीलबंद बक्सों को नावों पर गिराते नजर आ रहे हैं। और फिर किनारे पर खून-खराबे में जूनियर एनटीआर की तलवार और कुल्हाड़ी से लोगों को मारते हुए एक झलक दिखाई देती है। टीजर जूनियर एनटीआर के पानी में अपने पैर धोने के साथ खत्म होता है, जो खून से लाल हो जाता है। बैकग्राउंड में एक गाना बज रहा है, जो लोगों को समंदर से दूर रहने की चेतावनी देता है, जिसे लाल सागर कहा जा रहा है क्योंकि इसमें मछलियों की तुलना में खून और तलवारें ज्यादा हैं। फैंस को देवारा की झलक बहुत पसंद आई और उन्होंने ट्विटर पर अपनी एक्साइटमेंट शेयर की। एक फैन ने लिखा, देवारा की झलक शानदार लग रही है! एक बड़ी ब्लॉकबस्टर लोड हो रही है। अन्ना, आपको बहुत शुभकामनाएं! एक ने कहा, अद्भुत, जूनियरएनटीआर और टीम को बधाई। फिल्म देवारा में एनटीआर के साथ जान्हवी कपूर और सैफ अली खान भी हैं, जिन्हें टीजर में नहीं दिखाया गया है। फिल्म का डायरेक्शन कोराताला शिवा ने किया है और इसमें म्यूजिक अनिरुद्ध रविचंदर ने दिया है। आर रत्नावेलु फिल्म के सिनेमैटोग्राफर हैं। बता दें कि देवारा दो पार्ट में रिलीज होगी। पहला पार्ट 5 अप्रैल को रिलीज होगा जबकि फिल्म के दूसरे पार्ट की आधिकारिक रिलीज डेट अभी नहीं आई है।

# मलाइका ने दिखाई वर्कआउट झलक

बालीवुड एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा ने अपने सुबह के वर्कआउट की एक झलक दिखाई। मलाइका ने स्टोरीज सेक्शन में एक तस्वीर साझा की, जिसमें वह अपने घर में वर्कआउट करती नजर आ रही हैं। डांसर, जो छैया छैया गाने में अपने परफॉर्मेंस के लिए सबसे ज्यादा जानी जाती हैं, को ब्लैक शॉर्ट्स और मैचिंग टी-शर्ट पहने देखा जा सकता है। तस्वीर में उनके प्यारे दोस्त - पालतू डॉगी कैस्पर की एक प्यारी झलक भी दिखाई दी। पोस्ट पर एक्ट्रेस ने कैप्शन दिया, मेरा दिन शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका, माई वीक अहेड। वर्कफ्रंट की बात करें तो, वह वर्तमान में सेलिब्रिटी डांस रियलिटी शो झलक दिखला जा सीजन 11 में जज के रूप में नजर आ रही हैं। अन्य जज अरशद वारसी और फराह खान हैं। इसे गौहर खान और ऋत्विक धनजानी होस्ट करते हैं। बता दें कि मलाइका अरोरा के इंस्टाग्राम पर 18.8 मिलियन फॉलोअर्स है।

# आर्या सीजन 3 का पार्ट 3 आएगा अगले महीने

ओटीटी प्लेटफॉर्म डिज्नी प्लस हॉटस्टार ने एक प्रोमो शेयर करते हुए बताया कि आर्या सीजन 3 का पार्ट 3 अगले महीने 9 फरवरी को रिलीज होगा। इसमें लीड रोल करने वालीं एक्ट्रेस सुष्मिता सेन ने इस क्लाइमेक्स सीन का ऐलान करते हुए सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर किया है। इस पोस्ट में लिखा, आखिरी सांस लेने से पहले.. एक आखिरी बार मेरे पंजे जरूर निकलेंगे। आर्या सीजन 3- अंतिम वार..9 फरवरी...सिर्फ डिज्नी हॉट स्टार पर। सुष्मिता को ये आखिरी सीजन शूट करते हुए हार्ट अटैक पड़ा था, जब उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। सुष्मिता को इस सीरीज की वजह से बहुत प्यार मिला है। सुष्मिता ओट-ीटी पर छा गईं। पिछले साल उनकी ओटीटी पर ही ताली नाम की फिल्म आई थी जिसमें उन्होंने एक ट्रांसजेंडर का रोल किया था।

इसके लिए भी सुष्मिता की खूब सराहना हुई थी। बता दें कि आर्या का तीसरा सीजन 3 नवंबर 2023 को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज किया गया था। इस वेब सीरीज में केवल 4 एपिसोड ही थे और आर्या सरीन की कहानी अधूरी ही थी। बहुत सारे सवालों के जवाब अब आगे मिलने बाकी हैं। बता दें कि सुष्मिता सेन की बहुचर्चित और बहु प्रशंसित सीरीज आर्या का कुछ समय पहले सीजन 3 ओटीटी प्लेटफॉर्म डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर प्रदर्शित हुआ था। इस सीजन के दो भाग दर्शकों के सामने आ चुके हैं। अब इसका तीसरा भाग दर्शकों के सामने लाने की तैयारी है।

# लोगों को दीवाना बना देगा कियारा का कातिलाना लुक

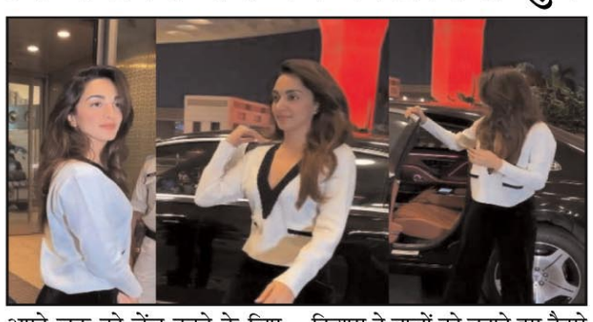

कियारा आडवाणी शुरू से ही अपने लुक को लेकर काफी चर्चा में रहती हैं। शादी से लेकर रूटीन में भी उनका लुक काफी अलग और सिंपल होने के कारण हमेशा ही लोगों की नजर में चढ़ जाता है। इस बार भी कियारा का कुछ ऐसा ही वीडियो सामने आया है, जिसमें वह बेहद अलग लुक में नजर आई हैं। वीडियो पर फैंस दिल खोलकर तारीफ कर रहे हैं। वायरल वीडियो में देख सकते हैं, कि कियारा बेहद खूबसूरत दिख रही है। उन्होंने ब्लैक एंड व्हाइट ड्रेस पहना है और अपने लुक को चेंज करने के लिए अपनी हेयर स्टाइल भी बदली है जो पर बेहद खूबसूरत लग रही है। कियारा ने बालों को बनाते हुए कैमरे के सामने कुछ पोज भी दी है, जो अब सोशल मीडिया की शान बन गया।

# पंकज त्रिपाठी नहीं बनना चाहते थे पुजारी या किसान, इसलिए बदला था अपना सरनेम

बॉलीवुड में पंकज त्रिपाठी को एक बहुमुखी अभिनेता के रूप में जाना जाता है। पंकज त्रिपाठी ने अपनी एक्टिंग से दर्शकों के मन में खास जगह बनाई है। पंकज त्रिपाठी का असली नाम पंकज तिवारी था। उन्होंने अपना मूल नाम बदलकर त्रिपाठी रख लिया है। पंकज त्रिपाठी का असली उपनाम तिवारी है। पंकज त्रिपाठी के पिता भी अपना उपनाम तिवारी लगाते थे, लेकिन पंकज ने अपना सरनेम बदलकर तिवारी से त्रिपाठी रख लिया। एक इंटरव्यू में पंकज त्रिपाठी ने सरनेम बदलने के पीछे की वजह बताई। उन्होंने कहा, इतिहास में शायद यह पहली बार होगा कि किसी पिता का नाम उसके बेटे के नाम पर रखा गया है। मैं 10वीं का एडमिशन फॉर्म भर रहा था। मेरे चाचा का सरनेम त्रिपाठी था और वह सरकार में एक अधिकारी थे। एक और व्यक्ति थे जिनका अंतिम नाम त्रिपाठी था। वे हिन्दी के प्रोफेसर थे, लेकिन मेरा अंतिम नाम तिवारी था। इस नाम के व्यक्ति या तो पुजारी थे या किसान। मैंने सोचा कि यह सब अंतिम नाम के कारण था। पंकज त्रिपाठी ने आगे कहा, मैं कभी भी किसान या पुजारी नहीं बनना चाहता था। इसलिए मैंने फॉर्म में अपना नाम त्रिपाठी लिखा। फिर मैंने सोचा कि मैं अपने पिता का नाम तिवारी नहीं लिख सकता, क्योंकि इसे अस्वीकार किया जा सकता है। इसलिए मैंने उनका नाम भी बदल दिया। पंकज त्रिपाठी ने बिहार में अपने गृहनगर बेलसंड में अपने बचपन की भी यादें ताजा कीं। पंकज त्रिपाठी ने कहा, बचपन में मैं साइकिल स्टंट करता था, क्योंकि एक लड़का ऐसे स्टंट करके लड़कियों के बीच बहुत लोकप्रिय था। मैं 7वीं या 8वीं कक्षा में पढ़ता था। उस समय स्कूल में एक धीमी साइकिल रेस का आयोजन किया गया था, रेस जीतने वाला लड़का लड़कियों के बीच बहुत प्रसिद्ध हो गया। ये मैंने भी सीखा। मैंने सोचा था कि मैं अगले साल विजेता बनूंगा, लेकिन मैं हार गया। पंकज त्रिपाठी के वर्क फ्रंट की बात करें तो कुछ महीने पहले उनकी फिल्में ओह माय गॉड-2 और फुकरे-3 रिलीज हुई थीं। हाल ही में उनकी वेब सीरीज कड़क सिंह ओटीटी पर रिलीज हुई है। अब पंकज जल्द ही मैं अटल हूं में नजर आएंगे। इस फिल्म में उन्होंने दिवंगत प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का किरदार निभाया है। यह बायोपिक 19 जनवरी को रिलीज होगी।

# फिल्म इंडस्ट्री छोड़ देंगी कंगना?

बालीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत अपनी फिल्मों के लिए पेड निगेटिविटी के कारण जल्द ही इंडस्ट्री को छोड़ने पर विचार कर रही हैं। कंगना ने अपनी इस पोस्ट से सभी को हैरान कर दिया है। अभिनेत्री का यह पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। कंगना रनौत ने एक्स पर एक ट्वीट कर कुछ ऐसा लिख दिया, जिसे सभी रणबीर कपूर की हालिया रिलीज फिल्म एनिमल से जोड़कर देख रहे हैं। कंगना का कहना है कि दर्शक महिलाओं की पिटाई वाली फिल्मों को प्रोत्साहित करते हैं, जहां उन्हें जूते चाटने के लिए कहा जाता है। यह सब उन लोगों के लिए भी हतोत्साहित करने वाला है, जो महिला सशक्तिकरण पर फिल्में बना रहे हैं। इसी के साथ कंगना ने संकेत दिया कि वह अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ वर्षों को किसी सार्थक काम में लगाने के लिए फिल्मों से अपना करियर बदल सकती हैं। कंगना स्पष्ट करती हैं कि उन्होंने अक्षय कुमार, सलमान खान, रणबीर कपूर के साथ फिल्में करने से इनकार किया, इसलिए नहीं कि उनसे उनका कोई व्यक्तिगत विरोध था।

# पाकिस्तानी अभिनेता फवाद का कबूलनामा, भारतीय दर्शकों ने बहुत प्यार दिया

**मुंबई (ईएमएस)।** हमसफर और जिंदगी गुलजार है, जैसे शो ने पाकिस्तानी स्टार फवाद खान को उनके अपने देश ही नहीं, भारत में भी जमकर शोहरत दिलाई थी। अपनी चार्मिंग पर्सनालिटी, हैंडसम लुक्स और शानदार अभिनय से फवाद देखते ही देखते भारतीय दर्शकों में जमकर पॉपुलर हो गए। 2016 में उरी हमले के बाद भारत में पाकिस्तानी अभिनेताओं के काम करने पर बैन लगा दिया। बैन की वजह से फवाद दुबारा बॉलीवुड में काम नहीं कर सके। अब फवाद ने बताया है कि बॉलीवुड में काम करने का उनका अनुभव कैसा था और क्या उनकी पॉपुलैरिटी इंडियन एक्टर्स के लिए खतरा बन रही थी? फवाद से पूछा गया कि क्या उनकी पॉपुलैरिटी, भारतीय एक्टर्स के लिए टेंशन की बात बन गई थी? तब फवाद ने कहा कि ये एक चैलेंजिंग सवाल है, मगर उन्हें भारत में जनता ने बहुत प्यार दिया। फवाद ने माना कि हर इंडस्ट्री की अपनी राजनीति होती है, चाहे भारत हो या पाकिस्तान। फवाद ने कहा कि सारा फर्क इस बात से पड़ता है कि अपनी इंडस्ट्री में अभिनेता किस तरह बेहतर काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि एक वक्त ऐसा आया जब उनकी पीआर टीम उनका नाम और बढ़ाना चाहती थी, लेकिन उन्होंने लो-प्रोफाइल रहना चुना, फवाद ने कहा कि इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म्स पर बहुत ज्यादा दिखने के मुकाबले, कम दिखना अभिनेता की मार्किट के लिए ज्यादा अच्छा रहता है। फवाद ने कहा कि बॉलीवुड में काम करने का उनका अनुभव बहुत यादगार रहा। उन्होंने बताया कि खूबसूरत के लिए राजी होते वक्त उन्होंने ज्यादा नहीं सोचा था और फिल्म के प्रोसेस का हिस्सा बनने को एन्जॉय किया था। कपूर एंड सन्स को जीव में एक बार आने वाला अनुभव बताकर फवाद ने कहा कि वे फिल्म का हिस्सा होने पर खुद को बहुत खुश फील करते हैं। फवाद ने कहा कि उन्हें भारत में काम करने के जो भी मौके मिले उसके लिए वे बहुत शुक्रगुजार हैं और यहां बॉलीवुड इंडस्ट्री और लोगों से उन्हें बहुत प्यार मिला।

# पायजामा पार्टी में दोस्तों के साथ नूपुर शिखरे ने किया लुंगी डांस

आमिर खान की बेटी आयरा खान और नुपुर शिखरे अब पारंपरिक तरीके से शाही शादी कर रहे। दोनों की शाही शादी की रस्म शुरू हो गई हैं और 10 तारीख को शादी होनी हैं। इससे पहले 3 जनवरी को दोनों ने रजिस्ट्रेशन के जरिए शादी कर ली। शादी से पूर्व की रस्मों में 8 जनवरी को पायजामा पार्टी आयोजित हुई। इस पार्टी में नूपुर का लुंगी डांस का वीडियो वायरल हुआ है। उदयपुर के एक पंच सितारा होटल में आयरा खान और नुपुर शिखरे की शादी से पहले की रस्में चल रही हैं। 8 जनवरी को आयरा ने नूपुर के नाम की मेहंदी रचाई। इस मेहंदी सेरेमनी की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। मेहंदी सेरेमनी में "जुगनू" गाने पर नूपुर के जबरदस्त डांस ने हर किसी का ध्यान खींचा है। इस तरह ही पायजामा पार्टी का वीडियो अब वायरल हो गया है। नुपुर का यह वीडियो पैपराजी के इंस्टाग्राम पेज पर शेयर किया गया है। इस वीडियो में नुपुर अपने दोस्तों के साथ लुंगी पहनकर पायजामा पार्टी में एंट्री करते नजर आ रहे हैं। इसके बाद वह "चेन्नई एक्सप्रेस" के गाने "लुंगी डांस" पर जबरदस्त डांस करते नजर आए। आमिर खान के दामाद का यह वीडियो इस समय चर्चा में है। इस बीच आयरा-नूपुर 10 जनवरी को पारंपरिक तरीके से शादी के बंधन में बंधेंगे। इस शादी समारोह में करीब 250 मेहमान शामिल होंगे। शादी समारोह के लिए ताज अरावली होटल के 176 कमरे बुक किए गए हैं। आयरा और नूपुर ने शादी में शामिल होने वाले किसी भी मेहमान से उपहार लाने से मना कर दिया है, लेकिन इस शादी से पहले कुछ पार्टियां और सेलिब्रेशन हो रहे हैं। उदयपुर में आयरा-नुपुर की शाही शादी के बाद मुंबई में एक पार्टी का आयोजन होगा, जिसमें बॉलीवुड की कई हस्तियां मौजूद रहेंगी।

# सोनू सूद का खुलासा- फिल्म 'फतेह' साइबर क्राइम विक्टिम्स के लिए है ट्रिब्यूट

वसेर्टाइल और टैलेंटेड सोनू सूद अपनी आगामी फिल्म फतेह के लिए डायरेक्टर की भूमिका में कदम रख रहे हैं। इस साल रिलीज होने के लिए तैयार यह फिल्म देशभर में हो रहे साइबर क्राइम पर बारीकी से नजर डालती है। वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित इस फिल्म का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ डिजिटल युग में साइबर थ्रेटस और सिंपल सिक्योरिटी पर प्रकाश डालना है। फिल्म का निर्देशन, निर्माण और अभिनय करने वाले सूद के लिए फतेह एक फिल्म से कहीं बढ़कर है। उन्होंने एक्सोटिक शूटिंग लोकेशन्स पर जाकर और प्रतिष्ठित हॉलीवुड स्टंट कॉर्डिनेटर ली व्हिटेकर के साथ सहयोग करके, इस प्रोजेक्ट के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं। यह फिल्म ट्रेडिशनल फिल्म मेकिंग की दुनिया के बाहर साइबर क्राइम विक्टिम्स के लिए एक ट्रिब्यूट है। फिल्म का निर्माण जी स्टूडियोज और उनकी प्रोडक्शन कंपनी शक्ति सागर प्रोडक्शंस ने किया है, जिसमें सोनू सूद और जैकलीन फर्नांडीज लीड रोल्स में हैं।

## सूडोकु नवताल- 6669

मध्यम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 8 | 1 | | | | 2 | 5 | |
| 2 | | | | | | | | 9 |
| 5 | | | 1 | | 7 | 4 | | |
| 9 | 5 | | | 4 | | | 2 | |
| | | 3 | 9 | | 6 | 7 | | |
| | 7 | | | 8 | | | 1 | 5 |
| | | 7 | 2 | | 5 | | | 1 |
| 6 | | | | | | | | 7 |
| | 1 | 5 | | | | 6 | 9 | |

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

**सूडोकु नवताल -6668 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 9 | 4 | 2 | 3 | 6 | 1 | 8 | 7 |
| 8 | 7 | 3 | 1 | 4 | 5 | 2 | 9 | 6 |
| 6 | 1 | 2 | 8 | 7 | 9 | 3 | 5 | 4 |
| 1 | 6 | 7 | 9 | 8 | 2 | 4 | 3 | 5 |
| 3 | 8 | 5 | 4 | 1 | 7 | 6 | 2 | 9 |
| 2 | 4 | 9 | 6 | 5 | 3 | 7 | 1 | 8 |
| 7 | 5 | 6 | 3 | 9 | 1 | 8 | 4 | 2 |
| 4 | 2 | 1 | 5 | 6 | 8 | 9 | 7 | 3 |
| 9 | 3 | 8 | 7 | 2 | 4 | 5 | 6 | 1 |

## शब्दजाल - 7416

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | द्धा | रि | का | ग | द | रि | सि | या | र | क | |
| दा | वि | ल | मा | व | जी | ब | द्री | ना | थ | ली | |
| गि | स | शे | ख्या | बा | छ | ची | ता | रा | क | क | |
| उ | ज्जै | न | दो | पु | ज | न | ह | न | त | क | |
| क | खु | मा | ता | वै | ष्णो | दे | वी | ग | व | क | |
| जी | द | रा | प | य | ख | पू | शि | हि | र | ह | |
| ती | लो | म | मे | या | प | र | र | र | र | रि | |
| क | र्ज | ल्जा | इ | श्व | ब | क | डी | लो | श | द्धा | |
| ने | बा | म | न्न | ब | र | त्या | री | श | प | र | |
| ति | रु | प | ति | व | जी | म | थु | रा | हा | त | |
| क | दु | ल्हे | रा | नी | ल | गा | य | द | प | थ | |

*शब्द जाल में 10 तीर्थ स्थलों के नाम ढूंढिए. नाम ऊपर से नीचे एवं तिरछे हो सकते हैं.*

हरिद्वार, बद्रीनाथ, मथुरा, रामेश्वरम, माता वैष्णोदेवी, शिरडी, उज्जैन तिरुपति, द्वारिका, कामाख्या

**शब्दजाल - 7415 का हल**

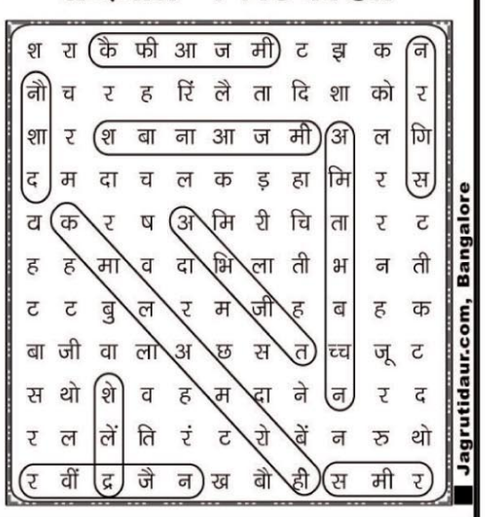


Jagrutidaur.com, Bangalore

## अष्टयोग- 6369

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 2 | | 3 | 5 | 1 | |
| 2 | 32 | 4 | 39 | 7 | 34 | 4 |
| | 1 | | 4 | | 5 | 2 |
| | 30 | 3 | 38 | 6 | 31 | |
| 1 | 2 | | 6 | | 7 | |
| 3 | 27 | 2 | 25 | 1 | 31 | |
| | 6 | 1 | 4 | | 3 | 5 |

*प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.*

**अष्टयोग 6368 का हल**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 6 | 1 | 4 | 2 | 3 | 5 |
| 2 | 28 | 4 | 33 | 7 | 35 | 4 |
| 1 | 2 | 5 | 6 | 4 | 7 | 3 |
| 5 | 28 | 3 | 38 | 6 | 34 | 1 |
| 4 | 2 | 6 | 3 | 5 | 1 | 7 |
| 3 | 31 | 2 | 31 | 1 | 30 | 6 |
| 6 | 1 | 7 | 4 | 3 | 5 | 2 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

# गुरुवार को खेला जाएगा सेमीफाइनल मैच, ओडिशा जगरनॉट्स-गुजरात जायंट्स के बीच होगी भिड़ंत

**कटक।**
**कटक के जवाहरलाल नेहरू इनडोर स्टेडियम में खेले जाने वाली अल्टीमेट खो-खो लीग में ओडिशा जगरनॉट्स और गुजरात जायंट्स की टीम सेमी फाइनल खेलने के लिए जगह पक्का किया है। खेले जाने वाली दो जबरदस्त मुकाबले में दोनों टीमें जीत हासिल किया है।**

इस जीत के चलते अब मेजबान टीम ओडिशा जगरनॉट्स का मुकाबला सेमीफाइनल में गुजरात जायंट्स के साथ होगी, जबकि चेन्नई क्विक गन्स का मुकाबला तेलुगु योद्धास टीम के साथ होगी। खेले जाने वाली पहले मुकाबले में ओडिशा जगरनॉट्स की टीम मुंबई खिलाड़ीस टीम को 34-23 प्वाइंट्स से हराकर सेमीफाइनल के लिए अपने दावेदारी को पेश किया और इस ग्रुप में ओडिशा जगरनॉट्स को दूसरा स्थान मिला है।

खेला जाएगा दोनों सेमीफाइनल दूसरी ओर मुंबई खिलाड़ीस की टीम को इस साल के संस्करण में केवल दो ही जीत के साथ अभियान को खत्म करना पड़ा है। ओडिशा जगरनॉट्स के पहले बैच के महेश. पी, रंजन सामल और मोहम्मद मीराजुल के चमत्कार प्रदर्शन के चलते टीम ने पांच ड्रीम रन प्वाइंट हासिल किया। इसके साथ 5 मिनट 20 सेकंड तक मैच में पकड़ रखते हुए जीत हासिल किया।

ठीक उसी प्रकार दूसरे एक मैच में चेन्नई क्विक गन्स टीम 38-21 प्वाइंट्स से गुजरात जायंट्स को हराकर प्वाइंट्स टेबल में अव्वल स्थान हासिल किया है। गुरुवार को खेले जाने वाली दोनों सेमीफाइनल मुकाबले काफी दिलचस्प होगी। यह टीमें लीग पड़ाव में एक-दूसरे से टकरा चुके हैं।

गुरुवार को सेमीफाइनल में होगी कांटे की टक्कर ऐसे में चैंपियन्स की दावेदारी पेश करने के लिए गुरुवार को सेमीफाइनल में कांटे की टक्कर देते हुए भिड़ेंगे। ऐसे में यह दो सेमीफाइनल मुकाबला काफी रोमांचक होगी। फाइनल में जगह बनाने वाले दो प्रमुख टीम शनिवार को एक दूसरे से भिड़ेंगे। सेमीफाइनल में जगह बनाने वाले चारों टीम के कप्तान फाइनल में पहुंचने के लिए काफी उम्मीद रखे हैं। ऐसे में दोनों सेमीफाइनल मुकाबले गुरुवार को काफी रोमांचक होगी। यह अनुमान है।

## न्यूज ब्रीफ

### रन लेने के लिए भागा, पिच पर गिरा और फिर.... क्रिकेट खेलने के दौरान हुई खिलाड़ी की मौत

**नई दिल्ली।** नोएडा में क्रिकेट खेलने के दौरान एक इंजीनियर की मौत हो गई। रन लेते समय वह बीच पिच पर गिर पड़े और हार्ट अटैक के चलते इंजीनियर की मौत हो गई। इस दुखद घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। दरअसल, विकास नेगी पेशे से एक इंजीनियर हैं। वह नोएडा में एक क्रिकेट मैच खेल रहे थे। इसी दौरान जब वह रन लेने के लिए दौड़े तब अचानक वह पिच पर गिर पड़े। विकास नेगी के पिच पर गिरने के बाद तुरंत उनके पास अन्य खिलाड़ी पहुंचे और आनन फानन में विकास नेगी को अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन विकास को नहीं बचाया जा सका। डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। इसके बाद पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए ले गई और रिपोर्ट में डॉक्टरों ने मौत का कारण हार्ट अटैक बताया। शुरुआती रिपोर्ट के मुताबिक, विकास कोविड का शिकार था, लेकिन स्वस्थ थे। खुद को फिट रखने के लिए वह अक्सर नोएडा और दिल्ली में क्रिकेट खेलते थे। हाल ही के दिनों हार्ट अटैक के मामले बढ़े हैं। पहले जहां बुजुर्गों में हार्ट अटैक के मामले ज्यादा देखे जाते थे, अब युवाओं में इसके मामले ज्यादा देखने को मिल रहा है। 30 से 40 साल के युवा इसका शिकार बन रहे हैं।

### इस जिले की तीन बेटियों ने कबड्डी खेलकर पा लीं सरकारी नौकरी, बना चुकी हैं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान

**बीहट (बेगूसराय)।** कबड्डी खेल की नर्सरी बीहट के खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। बीहट की तीन बेटियों ने कबड्डी खेल कोटा से सरकारी नौकरी हासिल कर जिला एवं गांव का नाम रौशन किया है। बेगूसराय जिला कबड्डी संघ एवं स्पोर्टिंग क्लब बीहट के बैनर तले महिला कबड्डी खिलाड़ी लगातार सरकारी नौकरी हासिल कर रही हैं। विगत दिनों पटना में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मेडल लाओ नौकरी पाओ के तहत कबड्डी की महिला खिलाड़ी बीहट जागीर टोला वार्ड संख्या 29 निवासी सिकंदर सिंह एवं वैजयंती देवी की पुत्री रिया कुमारी को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। रिया कुमारी जूनियर नेशनल कबड्डी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के बाद बिहार सरकार के खेल कोटा से पालीटेक्निक कालेज, बख्तियारपुर में नौकरी पाई है। वहीं वर्ष 2023 में कबड्डी खेल कोटा से नगर परिषद बीहट वार्ड संख्या 27 खेमकरणपुर टोला निवासी पप्पू सिंह एवं पिंकी देवी की पुत्री कोमल कुमारी एवं नगर परिषद बीहट वार्ड संख्या 29 इब्राहिमपुर टोला निवासी रामसागर पासवान एवं सावो देवी की पुत्री सरिता कुमारी को सचिवालय में नौकरी मिली है। कोमल कुमारी एवं सरिता कुमारी सीनियर नेशनल कबड्डी में तीसरा स्थान प्राप्त किया था। इस तरह से बीहट की कुल नौ बेटियों ने सरकारी नौकरी खेल कोटा से हासिल की है। छह बेटी नेटबाल एवं तीन बेटी कबड्डी से सरकारी नौकरी हासिल की है। इस पर बेगूसराय जिला कबड्डी संघ के मुख्य संरक्षक उपेंद्र प्रसाद सिंह, चेयरमैन श्यामनंदन सिंह पन्नालाल ने सभी खिलाड़ी को शुभकामनाएं दी है।

### पूर्व क्रिकेटर दीप दासगुप्ता बोले, रिंकू को टी20 विश्व कप में शायद ही अवसर मिले

**नई दिल्ली।** भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व क्रिकेटर दीप दासगुप्ता ने कहा है कि आक्रामक बल्लेबाज रिंकू सिंह को इसी साल जून में होने वाले टी20 विश्व कप में शायद ही अवसर मिले। दासगुप्ता के अनुसार इस मैच में छठे स्थान के लिए संजू सैमसन या जितेश शर्मा को अवसर मिल सकता है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि पिछले टी20 विश्व कप में भारतीय टीम के पास कई अच्छे सीनियर खिलाड़ी थे। दासगुप्ता ने कहा, रोहित और कोहली को जब टी20 में अवसर मिलने बंद हुए तब मुझे हैरानी हुई। जबकि पिछी बार भी हुए टूर्नामेंट में हमें सीनियर खिलाड़ियों की कमी खली थी। साथ ही कहा कि अगर आप 2022 में हुए इंग्लैंड के खिलाफ सेमीफाइनल मैच के मुकाबले की जगह अभी की टीम देखें तो तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज की वापसी हुई है पर मध्यक्रम में बदलाव नहीं हुआ। विराट नंबर 3 पर, सूर्यकुमार 4 पर, हार्दिक 5 पर फिर संजू सैमसन या जितेश शर्मा 6 पर है। इस पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज ने आगे कहा, टी20 विश्व कप के अनुसार देखें तो रिंकू को बाहर होना पड़ सकता है क्योंकि चोट से उबरने के बाद सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पंड्या की वापसी होगी जिससे रिंकू और तिलक वर्मा को जगह नहीं मिल पायेगी।

# अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज में जीत से शुरुआत करने उतरेगी भारतीय टीम

**मोहाली।**
**रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय टीम अफगानिस्तान के खिलाफ यहां होने वाली तीन मैचों की टी20 सीरीज के पहले मैच में जीत के इरादे से उतरेगी। भारतीय टीम का लक्ष्य इस सीरीज की अच्छी शुरुआत करना रहेगा। भारतीय टीम अब तक अफगानिस्तान के खिलाफ हमेशा जीती है। ऐसे में वह जीत की प्रबल दावेदार रहेगी। रोहित के अलावा अनुभवी बल्लेबाजी विराट कोहली भी इस सीरीज से वापसी कर रहे हैं। इन दोने के आने से भारतीय टीम और बेहतर हुई है। इस सीरीज में ये दोनो ही बेहतर प्रदर्शन कर आगामी टी20 विश्वकप के लिए अपनी दावेदारी पक्की करना चाहेंगे। आगामी टी20 विश्व कप से पहले तीन मैचों की यह सीरीज भारत के लिए आखिरी है, ऐसे में उसका लक्ष्य बेहतर प्रदर्शन कर अपनी तैयारियों को पक्का करना रहेगा।**

इस सीरीज में युवा खिलाड़ियों तिलक वर्मा, रिंकू सिंह सहित कई अन्य को भी अवसर दिया गया है। और वे भी सबका ध्यान खींचना चाहेंगे। सीरीज में अनुभवी सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पांड्या चोटिल होने के कारण शामिल नहीं किये गये हैं। रोहित और कोहली अफगानिस्तान के खिलाफ दोनों बड़े स्कोर बनाकर विश्वकप के लिए तैयारी बेहतर करना चाहेंगे। दूसरी ओर अफगानिस्तान टीम अपने स्टार स्पिनर राशिद खान के बगैर उतरेगी जो नवंबर में कमर की सर्जरी के बाद से अभी तक पूरी तरह फिट नहीं हैं। अफगानिस्तान के कप्तान इब्राहिम जदरान ने कहा, 'वह पूरी तरह से फिट नहीं है। हमें उसकी कमी खलेगी और उसके नहीं होने से हमारे प्रदर्शन पर असर पड़ेगा लेकिन हमें हर तरह के हालात के लिए तैयार रहना होगा। गत विश्वकप में अच्छे प्रदर्शन से प्रेरित होकर अफगानिस्तान टीम बेहतर प्रदर्शन करना चाहेगी। राशिद की गैर मौजूदगी के बावजूद टीम के पास मुजीब जदरान, हजरतुल्लाह जाजई।

**और रहमानुल्लाह गुरबाज जैसे शानदार खिलाड़ी भी हैं।**

विराट और रोहित दोनों दर्शकों के पसंदीदा हैं और उनके खेलने से मोहाली में इस मैच को लेकर काफी रोमांच है। कप्तान रोहित शर्मा पावरप्ले में अपना आक्रामक अंदाज दोहराना चाहेंगे। दूसरी ओर कोहली बीच के ओवरों में बेहतर स्ट्राइक रेट के साथ खेलना चाहेंगे। इस सीरीज में यशस्वी जायसवाल और तिलक वर्मा टीम में हैं लेकिन पारी की शुरूआत रोहित के साथ शुभमन गिल ही करेंगे। दक्षिण अफ्रीका में गिल का प्रदर्शन उतना अच्छा नहीं रहा और ऐसे में वह अच्छा स्कोर करना चाहेंगे। दक्षिण अफ्रीका में रिंकू सिंह ने शानदार प्रदर्शन किया और वह मध्यक्रम में चोटिल सूर्यकुमार और पांड्या की कमी पूरी करना चाहेंगे। विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी जितेश शर्मा या संजू सैमसन में से किसी एक को मिलेगी। पिछली दो श्रृंखलाओं में विकेटकीपिंग कर चुके जितेश को वरीयता मिलने की उम्मीद है। शिवम दुबे भी टीम में हैं और तेज गेंदबाज ऑलराउंडर के तौर पर खेल सकते हैं। तेज गेंदबाजी का जिम्मा अर्शदीप सिंह, आवेश खान और मुकेश कुमार पर होगा। स्पिन की जिम्मेदारी कुलदीप यादव संभालेंगे जबकि दूसरे स्पिनर के तौर पर अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई और वॉशिंगटन सुंदर में से किसी एक को जगह मिलेगी।

**दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं :**

**भारत :** रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा, अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई, अर्सदीप सिंह, अवेश खान, मुकेश कुमार।

**अफगानिस्तान :** इब्राहिम जादरान (कप्तान), अजमतुल्लाह उमरजई, रहमानुल्लाह गुरबाज (विकेटकीपर), करीम जनत, नजीबुल्लाह जादरान, मोहम्मद नबी, राशिद खान, नवीन-उल-हक, फजलहक फारूकी, मुजीब उर रहमान, हजरतुल्लाह जाजई।

# रुद्रांक्ष और मेहुली की जोड़ी को मिला स्वर्ण पदक, रिदम और अर्जुन ने मिलकर जीता रजत

**नई दिल्ली।**

रुद्रांक्ष पाटिल और मेहुली घोष की जोड़ी ने जकार्ता में 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धा जीतकर भारत को निशानेबाजी एशियाई ओलंपिक क्वालिफायर में पांचवां स्वर्ण पदक दिलाया। भारतीय जोड़ी ने फाइनल में शेन युफान और झू मिंगशुआई की चीन की जोड़ी को 16-10 से हराया। रुद्रांक्ष और मेहुली की जोड़ी क्वालिफिकेशन में कुल 631.3 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रही थी। युफान और मिंगशुआई ने 632.3 अंक के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया था। रिदम सांगवान और अर्जुन सिंह चीमा की जोड़ी को हालांकि 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा के फाइनल में थू विन्ह ट्रिनह और कुआंग हुइ फाम की वियतनाम की जोड़ी के हाथों शिकस्त के साथ रजत पदक से संतोष करना पड़ा। रिदम और अर्जुन की जोड़ी क्वालिफिकेशन में 582 अंक के साथ शीर्ष पर रही थी। वियतनाम की जोड़ी ने 580 अंक के साथ दूसरा स्थान हासिल किया था। फाइनल में हालांकि वियतनाम की जोड़ी बेहतर प्रदर्शन करते हुए खिताब जीतने में सफल रही। भारत के अर्जुन बाबुता और इलावेनिल वालारिवान की जोड़ी 629.0 अंक लेकर छठे स्थान पर रही।

**जूनियर वर्ग में ईशा और उमामहेश को स्वर्ण पदक**

जूनियर मिश्रित टीम एयर राइफल वर्ग में ईशा टकसाले और उमामहेश मेडिनेनी की जोड़ी ने चीन के चू जिकिंग और पेन बोवेन को 17-11 से हराकर स्वर्ण पदक जीका। इसी स्पर्धा में अभिनव साव और अन्वी राठौड़ ने स्थानीय खिलाड़ियों पी स्टीवन फारेल सावेरियो और एम पुत्री फाडिलाह को 16-10 से हराया। युवा निशानेबाजों वरूण तोमर और ईशा सिंह ने पुरुष और महिला 10 मीटर एयर पिस्टल व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतते हुए भारत के लिए दो ओलंपिक कोटा हासिल किए थे। ये दोनों स्वर्ण पदक जीतने वाली भारत की क्रमशः पुरुष और महिला टीम का भी हिस्सा थे।

# आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में विराट , रोहित शीर्ष दस में शामिल, गेंदबाजी में अश्विन शीर्ष पर कायम

**दुबई।**

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी)। की ताजा टेस्ट रैंकिंग में भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली और कप्तान रोहित शर्मा ऊपर आये हैं। विराट अब तीन पायदान ऊपर आकर टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में छठे स्थान पर पहुंच गये हैं। उन्हें दक्षिण अफ्रीका दौरे पर क्रिये अच्छे प्रदर्शन का लाभ मिला है। विराट ने भारतीय टीम की ओर से दौरे में सबसे ज्यादा 172 रन बनाए थे।

वहीं कप्तान रोहित शर्मा को भी 4 स्थान का लाभ हुआ है उनकी एक बार फिर शीर्ष 10 में वापसी हुई है। वह दसवें नंबर पर हैं। वहीं गेंदबाजी की बात करें तो जसप्रीत बुमराह एक स्थान के लाभ के साथ ही चौथे नंबर पर पहुंच गये हैं। वहीं गेंदबाजों में आर अश्विन शीर्ष पर हैं।

विराट दक्षिण अफ्रीका दौरा शुरू होने से पहले टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में 9वें नंबर पर थे। पहले ही मैच में उन्होंने 38 और 76 रन की पारियां खेल दीं। दूसरे मैच में विराट ने 46 रन बनाये। वहीं रोहित दौरा शुरु होने से पहले 14 वें स्थान पर थे। न्यूजीलैंड के केन विलियमसन बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। गेंदबाजी रैंकिंग की बात करें तो भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को भी एक स्थान का लाभ हुआ है। वह एक स्थान के फायदे के साथ नंबर-4 पर पहुंच गए। उन्होंने

दक्षिण अफ्रीका दौरे पर 3 पारियों में 12 विकेट लिए थे।

वहीं भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज को 13 स्थान का लाभ हुआ है। वह 13 स्थान ऊपर आकर 17वें नंबर पर पहुंच गए। गेंदबाजी रैंकिंग में भारत के ही ऑफ स्पिनर आर अश्विन शीर्ष पर हैं। जबकि रवींद्र जडेजा पांचवें नंबर पर हैं। शीर्ष-5 गेंदबाजों में 3 भारतीय शामिल हैं।ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस एक साथ के लाभ के साथ ही दूसरे स्थान पर पहुंच गये हैं जबकि दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा एक स्थान के नुकसान के साथ ही तीसरे स्थान पर खिसक गये हैं।

# एसए20 लीग का रोमांच होगा फीका, वर्ल्ड कप और भारत के खिलाफ सीरीज से गायब प्रमुख तेज गेंदबाज टूर्नामेंट से भी हुआ बाहर

**नई दिल्ली।**

एसए20 लीग के उद्घाटन संस्करण की रनर्स-अप प्रीटोरिया कैपिटल्स को 10 जनवरी से शुरू हो रहे दूसरे संस्करण में अपने प्रमुख तेज गेंदबाज एनरिच नॉर्ट्जे की सेवाएं नहीं मिल सकेंगी।

एनरिच नॉर्ट्जे सितंबर 2023 से क्रिकेट एक्शन से दूर हैं। वह पीठ की चोट के कारण वर्ल्ड कप 2023 में हिस्सा नहीं ले सके थे। इसके बाद भारत के खिलाफ सीरीज में भी वो बाहर रहे। हालांकि, यह तय नहीं हो पाया है कि नॉर्ट्जे को क्रिकेट पिच पर लौटने में कितना समय लगेगा।

**प्रीटोरिया कैपिटल्स ने दी अपडेट**

प्रीटोरिया कैपिटल्स ने सोशल मीडिया के जरिये एनिरच नॉर्ट्जे के बाहर होने की जानकारी दी है। कैपिटल्स ने अपने एक्स अकाउंट पर पोस्ट किया, कैपिटल्स के तेज गेंदबाज एनरिच नॉर्ट्जे एसए20 लीग के दूसरे सीजन से बाहर हो गए हैं क्योंकि वो लगातार चोट से उबरने में जुटे हुए हैं। प्रीटोरिया परिवार उनके जल्दी ठीक होने की कामना करता है। अनुभवी ऑलराउंडर हार्डस विलिजोएन टीम में नॉर्ट्जे की जगह लेंगे।

**नॉर्ट्जे ने बढ़ाई चिंता**

वॉलिजोएन को पिछले साल डरबन सुपरजायंट्स ने चोटिल खिलाड़ी के विकल्प के रूप में शामिल किया था। एसए20 में लगातार दूसरे साल विलिजोएन को खरीदने में किसी फ्रेंचाइजी ने दिलचस्पी नहीं दिखाई और लगातार दूसरे सीजन में उन्हें चोटिल खिलाड़ी के विकल्प के रूप में शामिल किया गया।

जहां तक नॉर्ट्जे की बात है तो उन्होंने आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच

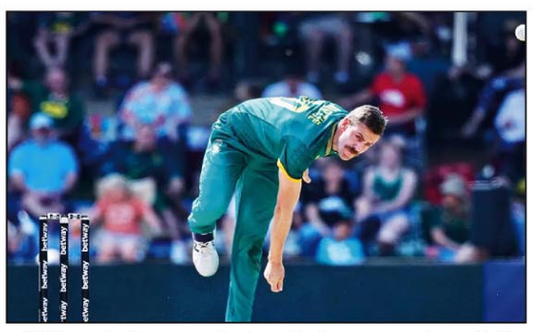

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 9 सितंबर को खेला था। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने सुरक्षा का ख्याल रखते हुए बीच सीरीज से अपना नाम वापस ले लिया था। हालांकि, नॉर्ट्जे की चोट ने चिंता बढ़ा दी है। इस चोट के चलते उनका आईपीएल 2024 और टी20 वर्ल्ड कप 2024 में खेलना मुश्किल नजर आ रहा है। दक्षिण अफ्रीका के लिए नॉर्ट्जे के बाहर होने की खबर बेहद निराशाजनक हो सकती है।

**एसए20 के लिए प्रीटोरिया कैपिटल्स स्क्वाडः**

मिगेल प्रीटोरियस, जिमी नीशम, राइली रोसोयू, कॉलिन इंग्राम, सेनुरन मुथुस्वामी, वेन पार्नेल (कप्तान), थियूनिस डी ब्रूइन, आदिल राशिद, विल जैक्स, ईथन बॉच, हार्डस विलिजोएन, शेन डैडस्वेल, कॉर्बिन बॉच, डैरिन डुपवेलिन, काइल वेरेनी, मैथ्यू ब्रीस्ट, पॉल स्टर्लिंग, फिल सॉल्ट और टियान वान वुरेन।

## 2036 ओलंपिक में बोली के लिए भारत का बड़ा कदम

# गुजरात ने बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए फर्म बनाई

**नई दिल्ली।**
**ओलंपिक 2036 की मेजबानी के लिए बोली लगाने के लिए भारत ने बड़ा कदम उठाया है। गुजरात सरकार ने एक अलग कंपनी का गठन किया है और 2036 ओलंपिक खेलों की मेजबानी के लिए छह खेल परिसरों के निर्माण के लिए 6,000 करोड़ रुपये निर्धारित किए हैं।**

राज्य सरकार की कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर बताया कि समर्पित इकाई गुजरात ओलंपिक प्लानिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉरपोरेशन लिमिटेड का गठन करीब तीन महीने पहले किया गया था और बोर्ड की एक बैठक पहले ही हो चुकी है।

कंपनी ने वाइब्रेंट गुजरात ट्रेड शो 2024 में अपना पवेलियन लगाया है, जिसका उद्घाटन गांधीनगर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। यह फर्म मुख्य रूप से अहमदाबाद के मोटेरा क्षेत्र में सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव के आसपास लगभग 350 एकड़ क्षेत्र के विकास की देखरेख करेगी। विशेष रूप से, निर्माणाधीन स्पोर्ट्स एन्क्लेव में नरेंद्र मोदी स्टेडियम है, जो दर्शकों की क्षमता के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम है।

उन्होंने कहा, देश में ओलंपिक की मेजबानी के प्रधानमंत्री मोदी के सपने को साकार करने के लिए हमने मोटेरा और आसपास के 350 एकड़ में फैले सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव को विकसित करने के लिए एक मास्टर प्लान तैयार किया है। खुली बोली के माध्यम से पहले चुनी गई एक डिजाइन फर्म द्वारा प्रस्तुत योजना के अनुसार, 350 एकड़ के क्षेत्र में छह खेल परिसरों का निर्माण किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि कंपनी ने हाल ही में चुनिंदा कंपनियों को निविदाएं जारी की हैं जो इन खेल परिसरों को डिजाइन कर सकती हैं। उन्होंने कहा, बोली के माध्यम से चुनी गई कंपनियां पूरे क्षेत्र का लेआउट तैयार करने के लिए जिम्मेदार होंगी। वे इन खेल परिसरों का एक विस्तृत संरचनात्मक और साथ ही वास्तुशिल्प डिजाइन भी तैयार करेंगे। कंपनी को उम्मीद है कि इन खेल परिसरों का निर्माण 2030 तक पूरा हो जाएगा ताकि भारत 2036 ओलंपिक की मेजबानी कर सके।

गौरतलब है कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 2036 ओलंपिक खेलों की मेजबानी के लिए राज्य की तैयारियों की समीक्षा के लिए पिछले साल दिसंबर में गुजरात सरकार के शीर्ष अधिकारियों के साथ दो बैठकों की अध्यक्षता की थी। गुजरात में भाजपा सरकार ने पहले घोषणा की थी कि वह 2036 खेलों की मेजबानी अधिकार हासिल करने का लक्ष्य बना रही है और अधिकारी पश्चिमी राज्य में खेलों के आयोजन के लिए अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के साथ बातचीत करेंगे।

हाल ही में गुजरात दौरे के दौरान शाह ने उम्मीद जताई थी कि 2036 ओलंपिक का आयोजन सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव में होगा। अक्तूबर में प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई में एक कार्यक्रम में कहा था कि भारत खेलों की मेजबानी के लिए दावेदारी पेश करेगा।

### सुंदरता ही नहीं चैतन्यता भी बढ़ाता है सिंदूर

महिलाएं मांग में जिस स्थान पर सिंदूर लगाती है वह स्थान समाधि योग का प्रथम स्थान ब्रह्मरन्ध्र के ठीक ऊपर का भाग होता है। स्त्री के शरीर में यह भाग पुरुष की अपेक्षा विशेष कोमल होता है, अतः उसकी संरक्षा के लिए शास्त्रकारों ने सिंदूर का विधान किया है। सिंदूर में पारा जैसी अलभ्य धातु बहुत मात्रा में होती है। जिससे यह स्त्री के मस्तिष्क को हमेशा चैतन्य अवस्था में रखता है और बाहरी दुष्प्रभाव से बचाता है। सिंदूर महिलाओं के श्रृंगार के साथ ही उनकी सौंदर्य में भी वृद्धि करता है।

### फायदेमंद है केले का सेवन

केला स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। रोज एक केला खाना तन-मन को तंदुरुस्त रखता है। केला शुगर और फाइबर का बेहतरीन स्रोत होता है। केले में थाइमिन, नियासिन और फॉलिक एसिड के रूप में विटामिन ए और बी पर्याप्त मात्रा में मौजूद होता है। साथ ही इसमें पानी की मात्रा 64.3 प्रतिशत, प्रोटीन 1.3 प्रतिशत, कार्बोहाईड्रेट 24.7 प्रतिशत तथा चिकनाई 8.3 प्रतिशत होती है।

### नींद नहीं आती तो दूध का सेवन करें

जिन लोगों को नींद नहीं आती, उन्हें सोने से पूर्व एक गिलास दूध पीना चाहिए। यह बात वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुकी है कि नींद लाने में दूध मुख्य भूमिका निभाता है। दूध जब पेट में जाता है तो अतिरिक्त एसिड को शरीर में से खत्म कर नींद लाने में सक्षम होता है। दूध में एमीनो-एसिड लेबपटोफान होता है जो नींद लाने में सहायक है। नींद के लिए गोलियों का प्रयोग हानिकारक है।

# कोलस्ट्रोल दूर भगाए ये देसी नुस्खा

**इस दौड़** भरी जिंदगी लोगों के पास अपने लिए समय नहीं है। व्यस्त जीवनशैली में न ही लोग सही समय पर खा रहे हैं न सोते हैं जो आखिकार बिमारियों को बुलावा देता है और आजकल जिस बीमारी ने लोगों को घेरा है वो है कोलस्ट्रोल। कोलस्ट्रोल बढ़ने के कारण हार्टअटैक भी होता है।

आपके घर मैं ऐसे बहुत से लोगो होंगे जिनका वजन व कोलस्ट्रोल बढ़ा हुआ हे। इस बीमारी से निजात पाने के लिए लोग महंगे से महंगा इलाज करवाने से परहेज नहीं करते,हालांकि दवाईयों से कुछ समय तक फर्क तो प?ता ही है लेकिन अगर इसी की जगह पर नानी के नुस्खे अपनाया जाए तो ये फयदेमन्द साबित हो सकता है।

### जानिए कोलस्ट्रोल का आयुर्वेदिक इलाज

**अदरक** - यह खून को पतला करता है। यह दर्द को प्राकृतिक तरीके से 90ब तक कम करता हैं।

**लहसुन** - इसमें मौजूद एलिसन तत्व कोलस्ट्रोल व बी पी को कम करता है। वह हार्ट ब्लॉकेज को खोलता है।

**नींबू** - इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन सी व पोटैशियम खून को साफ़ करते हैं। ये रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

**एप्पल साइडर सिरका** - इसमें 90 प्रकार के तत्व हैं जो शरीर की सारी नसों को खोलते है, पेट साफ़ करते हैं व थकान को मिटाते हैं।

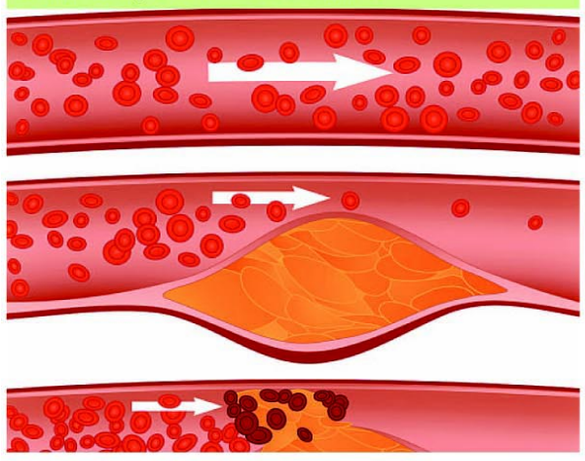

### इन देशी दवाओं को इस तरह उपयोग में लें

एक कप नींबू का रस लें,एक कप अदरक का रस लें,एक कप लहसुन का रस लें,एक कप एप्पल का सिरका लें,चारों को मिला कर धीमीं आंच पर गरम करें जब 3 कप रह जाए तो उसे ठण्डा कर लें। अब इस मिश्रण में 3 कप शहद मिला लें। इस दवा के रोज 3 चम्मच सुबह खाली पेट लें जिससे सारी ब्लॉकेज खत्म हो जाएंगी क्यूंकि अगर पेट साफ होगा तो अब सभी बीमारियों से मुक्त।

# कहीं आपको तो नहीं
## 20 की उम्र में 40 की बीमारियां

**आज की युवा** पीढ़ी हाइपर टेंशन, मानसिक तनाव, एसिडिटी आदि कई समस्याओं से परेशान है। पहले ये समस्याएं 40 साल की उम्र के बाद होती थीं लेकिन अब खराब जीवनशैली के कारण ये समस्याएं 20 वर्ष के युवाओं में भी नजर आने लगी है।

### गलत खानपान का असर

आज के युवा स्वाद के चक्कर में पोषक तत्वों से भरपूर खानपान की बजाय कुछ भी उल्टा-सीधा जैसे चिप्स, नूडल्स, मोमोज आदि खाना पसंद करते हैं जो फैट बढ़ाने के साथ-साथ आंतों पर भी भारी पड़ते हैं। इससे पाचनक्रिया गड़बड़ाती है और एसिडिटी, अपच व कब्ज जैसी दिक्कतें होती हैं। अधिक वसायुक्त भोजन से हृदय रोगों का खतरा बढ़ता है। अब भारत में 30 साल से कम उम्र के युवाओं में दिल के दौरों का खतरा तेजी से बढने लगा है। डाइट में संतुलित आहार लें। मौसमी फल जरूर खाएं।

### एक्टिविटी की कमी

युवा पीढ़ी शारीरिक एक्टिविटी कम करती है और उनका दिमाग हर समय कुछ न कुछ सोचता रहता है। ऐसे में मनोवैज्ञानिक तनाव होता है। इसका असर पढ़ाई और कॅरियर पर भी पड़ता है। व्यायाम न करने से मोटापा, ब्लड प्रेशर, तनाव और डायबिटीज जैसी लाइफस्टाइल से जुड़ी

समस्याएं भी युवाओं में आम हैं। रोजाना आधे से एक घंटे तक व्यायाम करें। 10 से 15 मिनट का ध्यान तनाव दूर करेगा।

### अपर्याप्त नींद से घटती एनर्जी

अनुसंधान बताते हैं कि नींद में गड़बड़ी के कई कारण हैं, पर युवाओं में नींद से जुड़ी समस्याओं का सबसे बड़ा कारण रात में सोशल मीडिया का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करना है। कई युवा रात को सोते समय घंटों अपने फोन में लगे रहते हैं। वाट्सएप या फेसबुक से नींद बाधित होती है। इससे दिमाग स्थिर नहीं रहता और गहरी नींद नहीं आ पाती। नींद पूरी न होने से धीरे-धीरे एनर्जी लेवल गिरता जाता है और चिड़चिड़ापन आता है। आगे चलकर स्थिति तनाव में बदल जाती है। रात को जल्दी सोने व सुबह जल्दी उठने की आदत डालें।

### संतुलन बनाएं

युवा पीढ़ी पर नौकरी के दौरान आज काफी दबाव है जिससे उनके व्यक्तित्व में चिड़चिड़ापन व आक्रामकता आ जाती है। जीवन में असंतुलन की वजह से वे जल्द ही हाई ब्लड प्रेशर और डायबिटीज से ग्रसित हो जाते हैं।

उन्हें चाहिए कि परिस्थितियों के लिए खुद को पहले से तैयार रखें और किसी भी बात को दिल पर न लें। निजी बातों को दोस्त, साथी या परिवार के किसी सदस्य के साथ जरूर बांटें और बेवजह का तनाव न पालें। इसके अलावा धूम्रपान, शराब व तंबाकू से बचें।

### जल्दी हो रहे बूढ़े

नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस में छपे शोध के अनुसार आजकल कुछ युवा अपनी उम्र से तिगुनी गति से बूढ़े हो रहे हैं जिसकी वजह खराब जीवनशैली के कारण उनमें तेजी से बढ़ रहे किडनी, लिवर व हृदय संबंधी रोग हैं। इन रोगों में कोलेस्ट्रॉल की अधिक मात्रा, दांतों से जुड़ी समस्या, रक्तवाहिनियों का सिकुडना और रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी भी शामिल है।

### सही प्लानिंग

उम्र के 20वें पड़ाव पर पहुंचते ही युवाओं को जीवन की सही तरह से प्लानिंग शुरू कर देनी चाहिए। जीवन की प्लानिंग करते समय सेहत के पहलू पर भी पूरी तरह ध्यान दें।

इस दौर में युवा माता-पिता का दामन छोड़कर दुनिया का सामना करने के लिए तैयार होते हैं। ऐसे दौर में शरीर में पूरी ऊर्जा होना आवश्यक है।युवाओं को शुरुआत में सब कुछ अच्छा और आकर्षक लगता है लेकिन कई बार बाद में पता लगता है कि वे गलत राह पर हैं।

इसलिए कोई भी बड़ा फैसला लेने के पहले दस बार सोच लेना चाहिए। जीवन की असलियत को समझकर अपने लक्ष्य बनाने चाहिए। तनाव की बजाय सकारात्मक और खुश रहना चाहिए। जरूर से ज्यादा आराम, और जरूरत से ज्यादा काम से भी बचें। लेकिन यदि इन सबके बावजूद आपको रोग सताएं तो डॉक्टरी सलाह भी लें।

# एसिडिटी दूर करने के घरेलू और पक्के उपचार

**एसिडिटी की परेशानी** से बहुत सारे लोग परेशान रहते हैं। यह इस हद तक व्यक्ति को परेशान करती है कि कही जाना, उठना- बैठना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। इसके लिए लोग खाली पेट तरह-तरह की दवाइयां खाते हैं लेकिन आप को बता दें कि ऐसी बहुत सारी घरेलू चीजें हैं जिसकी मदद से एसिडिटीसे राहत मिल सकती है।

### चलिए आज हम आपको कुछ ऐसे ही घरेलू नुस्खे बताते हैं

1. आप मुनक्का के सेवन से भी एसिडिटी से निजात पा सकते हैं। इसके लिए आप को मुनक्का को दूध में उबालकर दूध फिर ठंडा कर इसे ले सकते हैं।
2. एसिडिटी की समस्या तब भी होती है, जब आप भोजन के बीच में अधिक समय का गैप हो जाता है। इसलिए थोड़ी-थोड़ी देर पर कुछ ना कुछ खाते रहें।
3. सलाद में मूली का प्रयोग करें और मूली पर काला नमक तथा कालीमिर्च छिड़ककर खाएं। इससे एसिडिटी में काफी आराम होगा।
4. एसिडिटी की समस्या होने पर एक गिलास ठंडा दूध पी लें, इससे तुरंत ही आराम होगा।
5. गाजर का जूस भी एसिडिटी में काफी फायदेमंद होता है। इसके लगातार इस्तेमाल से एसिडिटी को जड़ से भी ख़त्म किया जा सकता है।
6. 3-4 किशमिश और एक टुकड़ा गुड को एक साथ खाने से एसिडिटी में बहुत जल्दी आराम हो जाता है।
7. रोज सुबह खाली पेट 2-3 तुलसी की पत्ती खाने से भी एसिडिटी में लाभ होता है।
8. केला ,खीरा और नारियल पानी भी एसिडिटी में बहुत ही फायदेमंद साबित होते है।
9. एसिडिटी होने पर कच्ची सौफ को चबाकर खाने से भी एसिडिटी में आराम मिलता है।
10. एसिडिटी की समस्या होने पर 1-2 लौंग को मुंह में रखकर चूसने से भी एसिडिटी में तुरंत ही रहत मिलती है।

# आवंले में हैं कई गुण

**आंवला प्राकृति** का दिया हुआ ऐसा तोहफा है जिससे हमारे शरीर में पनप रही कई सारी बीमारियों का नाश हो सकता है।यदि आपको अच्छी सेहत चाहिए तो आंवला बड़ी काम की चीज है।आंवला में आयरन और विटामिन सी भरा पड़ा होता है।

### आइए जानतें है इसके गुण।

- यदि आंवला के रस को रोज शहद के साथ लिया जाए तो अस्थमा और ब्रोंकाइटिस की बीमारी में लाभ मिल सकता है।
- आवंले के रस को शहद के साथ पीने से खून साफ होता है।
- यदि पीरियड्स के समय ज्यादा ब्लीडिंग होती है तो आमला रस को रोजाना तीन बार केले के साथ लेने से फायदेमंद साबित होता है।
- रोज सुबह आंवला का रस शहद के साथ पीने से चेहरा चमकदार बनता है और झाइंया दूर होती हैं।
- आंवला दिल की मासपेशियों को मजबूत बनाता है और हृदय रोग से दूर रखता है।
- पाइल?स के समय होने वाले कब्ज से आमला का रस राहत दिलाता है।
- रोजाना एक आंवला खाने से आंखों की रौशनी बढाती है।
- आंवला आपके चेहरे पर पैदा होने वाले एक्ने और मुंहासो से निजात दिलाता है।
- मधुमेह रोगियों के लिए आंवला वर्दान है। आमला का जूस शहद और हल्दी पाउडर के साथ पीने से मधुमेह कंट्रोल होता है।

# सौंफ के सेहत के लिए ये हैं आश्चर्यजनक फायदे!

**खाने के** बाद अक्सर सौंफ खाई जाती है। ये सौंफ के दाने अपने में कितने गुण समेटे हुए हैं इसे कम ही लोग जानते होंगे...सौंफ आपकी याददाश्त बढ़ाती है, निगाह तेज करती है, खांसी भगाती है और कोलेस्ट्रॉल स्तर को नियंत्रण में रखती है। सौंफ में कैल्शियम, सोडियम, आयरन, पोटैशियम जैसे तत्व पाए जाते हैं...

गर्म तासीर वाली सौंफ पेट के अनेक रोगों में फायदेमंद मानी जाती है। आंखों की बीमारियों को दूर करने में सौंफ एक अच्छी औषधि है। जिन्हें रतौंधी की शिकायत है उन्हें सौंफ रोजाना खानी चाहिए। सौंफ(150 ग्राम), मिश्री (300 ग्राम) और बादाम (150ग्राम) को मिक्स करके पाउडर बना लें। इससे आंखों की रोशनी तेज होकर शारीरिक कमजोरी दूर होती है। खांसी, उल्टी, पेटदर्द, कफ आदि के लिए सौंफ खाएं। दो कप पानी में उबली हुई एक चम्मच सौंफ को दो या तीन बार लेने से अपच और कफ की समस्या समाप्त होती है। पेट में दर्द हो तो भुनी हुई सौंफ चबाकर खाएं, दर्द ठीक हो जाएगा। जो लोग कब्ज से परेशान हैं, उनको आधा ग्राम गुलकन्द और सौंफ मिलाकर दूध के साथ रात में सोते समय लेना चाहिए। कब्ज दूर हो जाएगा।

आधा गिलास पानी में सौंफ का चूर्ण मिलाकर दिन में दो-तीन दिन बार पीने से पेशाब की जलन दूर होती है। सौंफ को अंजीर के साथ खाएं और खांसी व ब्रोन्काइटिस को दूर भगाएं। मासिक चक्र को नियमित बनाने के लिए सौंफ को गुड़ के साथ खाएं।

इसे खाने से लीवर ठीक रहता है। यदि आपको खट्टी डकारें आ रही हों तो थोड़ी सी सौंफ पानी में उबालकर मिश्री डालकर पी लें। आराम मिल जाएगा। रोजाना सुबह-शाम खाली सौंफ खाने से खून साफ होता है जो कि त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद होता है, इससे त्वचा में चमक आती है।

# दवाओं के दुष्प्रभाव
## से निपटने के आसान तरीके

**दवाएं कई प्रकार** की स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह हानिकारक बैक्टीरिया के खिलाफ मुकाबला करने, दर्द से राहत देने और जान बचाने में मदद करती है। दवाएं ऐसे रोगों का भी इलाज करती है जिनका अन्य किसी तरीके से इलाज नहीं हो पाता।

लेकिन अफसोस, दवाओं के उपयोग में एक खामी भी है। दवाएं मानव शरीर के साथ एक नाजुक संतुलन में काम करती हैं, लेकिन इस संतुलन के बिगड़ने पर यह कई प्रकार के साइड इफेक्ट का कारण बन सकती है।

### किसे होते हैं साइड इफेक्ट

किसी को भी दवा से साइड इफेक्ट हो सकते हैं, लेकिन कोई भी एक विशेष दवा आपके लिए साइड इफेक्ट का कारण नहीं हो सकता। यह दवा की खुराक, उम्र, लिंग, वजन और आपके द्वारा ली जाने वाली अन्य दवाओं पर निर्भर करता है। बुजुर्गों में में जवां लोगों की तुलना में साइड इफेक्ट अधिक होने की संभावना होती है। मामूली साइड इफेक्ट होने पर आप यहां दिये उपायों को अपना सकते हैं।

### कब्ज

कई निर्धारित और काउंटर दवा से कब्ज की समस्या हो सकती है। नियमित रूप से पेनकिलर दवाओं को लेने पर होने वाला यह सबसे आम दुष्प्रभावों में से एक है।

हालांकि, आप ब्रान और होल वीट ग्रेन और हाई फाइबर सब्जियां और फल जैसे बींस, सेब और ब्रोकली के सेवन से इसका इलाज कर सकते हैं। इसके साथ ही तरल पदार्थों को खूब सेवन करें और नियमित रूप से एक्सरसाइज करें।

### दिन के समय उनींदापन

कुछ दवाओं के कारण दिन में उनींदापन की समस्या भी हो सकती है, लेकिन शरीर द्वारा दवा के आदि होने पर समस्या आमतौर पर अपने आप ही दूर हो जाती है। अगर समस्या काफी दिनों तक ऐसी ही बनी रहती है तो डॉक्टर से पूछ कर दवा रात के समय लें। साथ ही यह भी सलाह दी जाती है कि उनींदापन महसूस होने पर भारी उपकरण न उठाये और ड्राइविंग करने से भी बचें।

**साइड इफेक्ट:** लगभग सभी प्रकार की दवाओं के साइड इफेक्ट होते है, लेकिन कुछ लोगों को साइड इफेक्ट का पता नहीं लगता वह इन साइड इफेक्ट के साथ आसानी से डील कर लेते हैं। यहां ऐसी कुछ महत्वपूर्ण बातों की जानकारी दी गई है जो आपको पता होनी चाहिए।

### डायरिया

लगभग सभी दवाओं के साइड इफेक्ट के रूप में डायरिया की समस्या देखने को मिलती है। हालांकि कीमोथेरेपी के लिए इस्तेमाल होने वाली कुछ दवाएं जैसे एंटीबॉयोटिक, एंटी-डिप्रेसेंट और एंटासिड डायरिया का कारण बनती है। अगर आपको दवा से डायरिया की समस्या होती है तो अपने आहार में हल्के, फाइबर युक्त जैसे की चावल और दही को शमिल करें। और बेहतर महसूस होने तक मसालेदार और फैट से भरपूर खाद्य पदार्थों से बचें।

### सिरदर्द

कई निर्धारित और गैर निर्धारित दवाएं भी सिरदर्द का कारण हो सकती है। हालांकि शरीर को दवा की आदत हो जाने पर सिरदर्द अपने आप दूर हो जाता है। लेकिन अगर समस्या लंबे समय तक बनी रहती हैं तो बिना देर किये अपने डॉक्टर से संपर्क करें। आमतौर पर दवा के लाभ मामूली साइड इफेक्ट से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। क्योंकि अधिकांश दवाओं के साइड इफेक्ट अक्सर एक समय के बाद अपने आप दूर हो जाते हैं। लेकिन अगर साइड इफेक्ट लंबे समय तक रहते हैं तो आपको खुद से दवाओं को बंद नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने डॉक्टर से इस विषय पर राय लेनी चाहिए। और अगर दवा लेने के बाद पित्ती, चेहरे, होठों और जीभ पर सूजन या सांस लेने में परेशानी महसूस हो तो तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

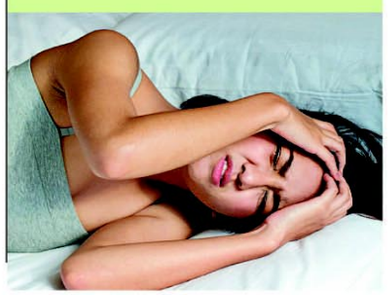

### जानलेवा बीमारी है ब्लड पॉयजनिंग

**ब्लड पायजनिंग** के बारे में सुनने पर आपके जहन में ब्लड में जहर आने की कल्पना घूमने लगती होगी। लेकिन वास्तवकिता में इसका जहर के साथ कुछ लेना देना नहीं होता है। यह एक खतरनाक अवस्था है और तत्काल उपचार इससे बचने की कुंजी, इसलिए इसे पूरी तरह से समझना बहुत महत्वपूर्ण है। ब्लड पायजनिंग बैक्टीरिया के कारण होने वाला संक्रमण है जो एक घातक स्थिति है। बहुत सारे मरीज इस अवस्था के निदान में विफल रहते हैं और बहुत लंबे समय तक इसे नजरअंदाज करने के कारण यह समस्या जानलेवा भी हो सकती है। इसलिए इस समस्या के बारे में पता होना जरूरी है ताकी आप बीमारी के बारे में अपने डॉक्टर को सही समय पर सचेत कर सकें।

**जानलेवा संक्रमण है ब्लड पॉयजनिंग:** ब्लड पॉयजनिंग को सामान्यतः सेप्टिसीमिया या सेप्सिस के रूप में भी जाना जाता है, और यह जानलेवा सक्रमण खून में बैक्टीरिया की उपस्थिति के कारण होता है। बैक्टीरिया के खून में प्रवेश करने पर यह शरीर के किसी भी भाग में संक्रमण पैदा कर ब्लड पॉयजनिंग का कारण बन सकता हैं। इस संक्रमण में व्यक्ति के रक्त में श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या बहुत अधिक हो जाती है।

**ब्लड पायजनिंग का निदानः** ब्लड पायजनिंग का आत्म निदान मुश्किल होता है। अगर आपको सेप्सिस है तो इसको निर्धारित करने का सबसे अच्छा तरीका तुरंत चिकित्सक से परामर्श लेना होता है।

## रेसिपी

### मसाला पुरी

**सामग्री**

1 कप गेहूं का आटा
1/4 टी-स्पून हल्दी पाउडर
1/4 टी-स्पून हींग
1/2 टी-स्पून लाल मिर्च पाउडर
1 टेबल-स्पून तेल
नमक स्वादअनुसार
तेल , तलने के लिए
**परोसने के लिए, ताज़ा दही**

**विधि**

सभी सामग्री को एक बाउल में मिलाकर, ज़रुरत हो उतनी मात्रा में पानी का प्रयोग कर सख्त आटा गूथ लें। 15 से 20 के लिए एक तरफ रख दें। आटे को 10 भाग में बांटकर, प्रत्येक भाग को 75 मिमी व्यास के गोल आकार में बेल लें। एक कढ़ाई में तेल गरम करें और एक या दो पुरी डालकर, उच्च तापमान पर उनके दोनो तरफ सुनहरा होने तक तल लें। ताज़े दही के साथ गरमा गरम परोसें।

### मूँगफली कढ़ी

**सामग्री**

1 कप ताज़ा दही, 1 टेबल-स्पून राजगीरा आटा, 1 टी-स्पून घी, 1 टेबल-स्पून अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, 2 टेबल-स्पून भूना मूंगफली पाउडर, सेंधा नमक , स्वादअनुसार, 1/2 टी-स्पून टी-स्पून शक्कर, सजाने के लिये, 1 टी-स्पून बारीक कटा धनिया

**परोसने के लिये**

मिन्टी सान्वा , कुट्टु की खिचड़ी

**विधि**

दहीं, राजगीरा आटा और 2 कप पानी को 1 बाउल में डालकर अच्छि तरह से फेंटे। एक तरफ रख दें। एक गहरे नॉन-स्टिक पॅन में घी गरम करें और जीरा डालें। जब वे चटकने लगे, अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट डालकर 30 सेकन्ड तक मध्यम आंच पर भूनें। मूँगफली पाउडर डालकर 30 सेकन्ड तक मध्यम आँच पर भूनें। दही-राजगीरा आटा का मिश्रण, सेंधा नमक और शक्कर डालकर अच्छि तरह से मिलायें और धिमी आँच पर लगातार हिलाते हुए, 4 से 5 मिनट तक पकायें। धनिया से सजाकर मिन्टी सान्वा/कुट्टु की खिचड़ी के साथ गरमा गरम परोसें।

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए ईको प्रिंटिंग प्रेस, पोस्ट एवं पीएस : गड़चुक, कटाबाड़ी मस्जिद के पास, कामरूप (मेट्रो), गुवाहाटी-35 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
**संपादक : राकेश शर्मा,** मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम** ● **फोन : 0361-2960054 ( संपादकीय )** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **( सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन )**